महारामायण

छटवां सिद्धि खण्ड

(महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज कृत)

—:o:—

सम्पादक—

नन्दू भाई

निज़ामाबाद (दक्षिण)

—:o:—

अ० स० सम्पादक—

देवीचरन मीतल

लेखराजनगर, अलीगढ़

—※—

प्रकाशक—

नन्दू भाई प्रधान

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल,

पो० दयाल नगर, अलीगढ़

द्वितीय संस्करण | सर्वाधिकार सुरक्षित | मूल्य १॥)प्रति

सं० शाका १८८५

विषय-सूची—महारामायण सिद्धि खण्ड

प्रथम भाग

पहिला समुल्लास-मार्ग-
,, सुमार्ग ४४५
दूसरा ,, सेतुबन्ध रामेश्वर ४६०
तीसरा ,, द्वादश चक्र निरू-
पण ४६४
चौथा ,, सेतु बंध के पार-
लंका प्रवेश ४६७
पांचवां ,, गपशप ४७१
छटवां ,, रावण और
मन्दोदरी ४७५
सातवाँ ,, अङ्गद-दूत ४७६
आठवां ,,अङ्गद और रावण४८२
नवां ,, अङ्गद का पांव
रोपना ४६०
दसवाँ ,, मन्दोदरी और
रावण ४६४
ग्यारहवां ,, राम की सभा ४६७

द्वितीय भाग

पहिला ,, युद्ध आरम्भ ५००
दूसरा ,, रावण की सभा ५०३
तीसरा ,, दूसरे दिन का युद्ध-
लक्ष्मण के शक्ति बाण
लगना ५०४
चौथा ,, हनुमान का संजीवन
बूटी लेने जाना और
अहिरावण युद्ध ५०८
पाँचवाँ ,, भरत की बल
परीक्षा ५१०
छटवाँ ,, राम का विलाप ५१२
सातवाँ ,, रावण और कुम्भ-
करण ५१४
आठवां ,, तीसरे दिन का
संग्राम ५१६
नवाँ ,, चौथे दिन की लड़ाई५२१
दसवाँ ,, मेघनाद का यज्ञ
विध्वंस और बध ५२७
ग्यारहवां ,, लङ्का की दशा ५३१
बारहवाँ ,, पाँचवें दिन का घमा-
सान युद्ध ५३३
तेरहवाँ ,, रावण का यज्ञ
विध्वंस ५३८
चौदहवाँ ,,छटे दिन का युद्ध ५४०
पन्द्रहवाँ ,, रावण का माया
युद्ध ५४३
सोलहवां ,, लगातार ५४७
सत्रहवां ,,सीता का विलाप५५६
अठारहवाँ ,, सातवें दिन का
युद्ध ५५८
उन्नीसवाँ ,, सियापा और राज-
तिलक ५६१
बीसवाँ ,,संक्षेप रहस्य दर्शन ५६५

तृतीय भाग

पहिला ,, सीता मिलाप ५७१
दूसरा ,, देवताओं का राम के
पास बधाई देने आना ५७६
तीसरा ,, लङ्का से कूँच ५७६
चौथा ,, राम का सीता को
अनेक स्थान दिखाते चलना ५८३

ओ३म् तपः

महारामायण

छठवां सिद्धि खण्ड

ओ३म् तपः

ओ३म् तपः

ओ३म् तपः

प्रथम भाग

पहिला समुल्लास

मार्ग और सुमार्ग

व्यवहार हो या परमार्थ, योग हो या ज्ञान, भक्ति हो या सिद्धि, सबके सब नियमबद्ध हैं। जब तक नियम के बन्धन की सहायता नहीं ली जाती, तब तक न मुक्ति मिलती है और न उसका आनन्द आता है।

पतंग उड़ती है डोरी के सहारे ! डोरी काट दो और उड़ना बन्द !

मुक्ति उसके लिये है जिसको बन्धन है और बन्धन से

दुःखी है। जिसे बन्धन नहीं है उसके लिये मुक्ति का शब्द निरर्थक है। योग की युक्ति चंचल वृति वालों के लिये है। जिसका मन निश्चल है, उसे योग क्यों सिखाया जाये! और उससे क्या लाभ होगा! सिद्धि का आदर्श अपूर्ण अँग वालों के लिए है। जो पूर्ण है और जिसमें कोई त्रुटि नहीं है, वह सिद्धि ले कर क्या करेगा! उसकी पूर्णता आप सिद्धि है और सिद्धि से बढ़कर है! भक्ति वह करे जिसके मन के ठहरने का कोई आधार नहीं है और जो निराधार बनने से घबरा रहा है। जो अपना आधार आप हो गया, उसे भक्ति की आवश्यकता कब है!

संसार के सारे पदार्थ अधिकारी के प्रति हैं। अधिकारी हो तो उन्हें प्राप्त करले। जिसे अधिकार ही नहीं है और जिस में अधिकार का लेशमात्र संस्कार न दिखाई दे, वह पद और पदार्थ की ओर कब जाने लगा! और उसे उसका लालच क्यों दिया जाय!

रामायण इस विषय को बहुत विस्तार के साथ समझाती है। राम की समझ है तब तो रामायण रामायण है, जब राम-शब्द, राम-तत्व, राम गुण की समझ-बूझ नहीं है, तो उसके लिये यह रामायण केवल कथा ही कथा है। इससे अधिक उस की महिमा नहीं है और न हो सकती है।

यह संसार रमने का रमना (रमणस्थल) है। जो इसमें रमण करने का अधिकारी, संस्कारी और इच्छुक है, वह रामायण को हाथ में ले, राम की भक्ति करे, रामचरित को समझे-बूझे और अपना जीवन उसी प्रकार का बनाये। जिसने 'रम' धातु का अर्थ तक नहीं समझा, वह क्यों अपना समय गँवाये।

राम एक दशरथ घर आये। दूजे राम बन खण्ड सिधाये॥

तीजे राम जप तप बहु किया। साधन योग युक्ति चित दिया॥
चौथे राम मन अपना सुधारा। पंचम राम रावण को मारा॥
छटे राम सीता घर लाये। उजड़ी बस्ती आन बसाये॥
सप्तम राम गुप्त हुये घट में। जाय छुपे त्रिकुटी तिल पट में॥
राम सात विधि रमण सिखावें। अपने भक्त को आप चितावें॥
एक अनेक राम की महिमा। राम ही महिमा, लघिमा, गरिमा॥

ये सात रामायण की भूमिकायें हैं। एक राम के अनेक अर्थ हैं। राम ही एक हैं और राम ही अनेक हैं। राम एक और अनेक होते हुये इस जगत् में रम रहे हैं और अपने भक्तों की दृष्टि में रमता राम हो रहे हैं।

नाना भाँति राम अवतारा। रामायण शत कोटि अपारा॥

राम क्या अब नहीं हैं? वह अजर अमर अविनाशी हैं। इनके देखने दिखाने की दृष्टि चाहिए—

रमने वाले जग के रमता राम हैं।
राम अद्भुत रूप शोभा धाम हैं॥
राम सन्तों के लिए विश्राम हैं।
दुष्टों को महाकाल आठों जाम हैं॥
राम ही फूलों की क्यारी में खिले।
राम पत्तों पत्तों में रमते मिले॥
राम जड़ हैं राम पौधे राम फल।
राम जल, पावक, गगन और राम थल॥
राम मुझमें रह के करते हैं निवास।
राम घट घट में बसे हैं साँस साँस॥
रम रहे हैं राम सीता को लिए।
राम ही हैं अपने भक्तों के लिए॥
तन को मन को चित को जो देता नहीं।
राम का सुख वह कभी लेता नहीं॥

राम नर हैं राम नारायण बने।
राम ही आप रामायण बने ॥

इस रामायण की सात भूमिकायें राम की प्राप्ति के मार्ग कहलाती है। (१) गुरु मिलें, (२) सत्संग हो, (३) चित्रकूट में मन के चित्रों का विचार हो, (४) एकान्त में बनवास हो, (५) मन बस में आए, (६) लङ्का पर चढ़ कर रज रावण को मार गिराए, फिर (७) शान्ति और निरभ्रान्ति के साथ जैसा चाहे रमता फिरे।

जल में रहकर जल में खिलता है कमल।
वह नहीं जल में नहीं रहता वह थल ॥
हो गया तुम देख लो सूरज मुखी।
देखकर सूरज को होता है सुखी ॥
राम को कहते हैं रघुकुल का तिलक।
राम की सूरज में रहती है झलक ॥
राम का ज्योति में ज्योतिर्ज्ञानि है।
जायगा वह जिसको उनका ध्यान है ॥

मार्ग कई हैं। मीन मार्ग, मकर मार्ग, बिहंग मार्ग, कपि मार्ग, राक्षस मार्ग, सेतु मार्ग।

मीन मार्ग बहुत सूक्ष्म है। मकर मार्ग का प्रबन्ध सुगम नहीं है। बिहंग (पक्षी)। मार्ग में जटायु और सम्पाती के दो दृष्टान्त मिलते हैं। गुरू न मिलने से दोनों को सिद्धि की प्राप्ति नहीं हुई और तत् सवितुर्वरेण्यम् (सूरज) हाथ नहीं आया। कपि मार्ग में केवल हनुमान का एक ही उदाहरण है। दो नहीं हैं। जो मान का पूरा पूरा हनन करले, वह इस मार्ग में चले में। दूसरे का पराक्रम नहीं है।

कंचन तजना सुगम है, सुगम त्रिया का नेह।
मान, बड़ाई, ईर्षा, दुर्लभ तजना येह ॥१॥

सबको तजा तो क्या हुआ, मान तजा नहिं जाय।
मान ने मारे ऋषि मुनि, मान सबन को खाय ॥२॥
मान, अपमान, सम्मान हो, अपना नहिं सन्मान।
ऐसे नर निःमान को, कहते हैं हनुमान ॥३॥
गुरु के सम्मुख आय कर, जो चाहे सन्मान।
तिन को जम न्यौता दिया, हो हमरे महिमान ॥४॥
हनुमान होना कठिन, मान हना नहिं जाय।
बिना मान के हनन के, मार्ग कोई न आय ॥५॥

देख लिया गया सब कठिन मार्ग हैं। सुगमता किसी में नहीं है। यह सोच समझ कर महा प्रभू राम ने सेतु बांधने का प्रबन्ध किया। सेतु के सहारे कीड़े मकोड़े चिउटी चींटे सब समुद्र के पार सहज रीति से जा सकते हैं और भवसागर में डूबने से बच जाते हैं। इस मार्ग का नाम पपीलि मार्ग है। इसे पपीलिका मार्ग भी कहते हैं।

जहां बुद्धि की गम नहीं, जहां न मन ठहराय।
सेत मार्ग से पपीलिका, सुगम सुरत बन जाय ॥१॥
धीरे धीरे हे मना, धीरे सब कुछ होय।
धीरज धरे तो पार हो, नहिं डूबे सब कोय ॥२॥

यह मार्ग क्या है? सूक्ष्मता या सुषुम्ना मार्ग है और यह सेतु मार्ग भी कहलाता है।

इधर सुग्रीव और लक्ष्मण राम की सेना को सँवारते सिंगारते हैं। बन्दर, रीछ और राक्षसों के शब्द से समुद्र का तट गूँज रहा है और यह समुद्र की उठती हुई लहरों की ध्वनि को भी अपने किलकारियों के घनघोर शब्द के भँवर में डुबा रहे हैं। दसों दिशाओं में मंगल ही मंगल हैं। यह जंगल में मंगल नहीं है। समुद्र के तट का मंगल है।

मँगलम् रामाय मूरति, मँगलम् रवि कुल ध्वजम् ।
मँगलम् पुण्डरी काक्षी, मँगला ये स्तनो रमा ।
जहां राम रमते हैं, मंगल वहीं हैं ।
सुख आनन्द का पूरा दंगल वहीं है ॥

किसी को न चिन्ता न दुविधा किसी में ।
किसी को न दुख और न विपता किसी में ॥

और इधर हनूमान, अँगद, नल, नील सेतु बनाने में उद्यत हैं । राम कहते हैं जल्दी करो और जल्दी हो रही है ।

दूसरा समुल्लास

सेतु बन्धु रामेश्वर

पहाड़ के पहाड़ उठे हुए चले आ रहे हैं । बन्दरों का टिड्ढी दल, अनगणित संख्या में बड़े बड़े चट्टान ला रहा है । नल और नील के कारीगर उन्हें गढ़ते हैं और ये दोनों इन्जीनियर इनको समुद्र पर तैरा रहे हैं । उस समय का दृश्य देखने योग्य रहा होगा । समुद्र पर पुल बाँधना महा कठिन काम है । जब से सृष्टि हुई उस समय से लेकर आज तक किसने समुद्र पर पुल बांधा है ! किसी ने भी नहीं ! युग युगान्तर बीत गए । अनेक सभ्यताओं का दौर हुआ । वह आई । अपना चमत्कार दिखा गई । 'चार दिन की चाँदनी, फिर अधेरा पाख' बन गई । ऐसा पुल आज तक राम के अतिरिक्त किसने बांधा, बँधाया ? किसी ने भी नहीं ।

राम का काम राम का है काम ।
राम के काम में है राम का नाम ॥

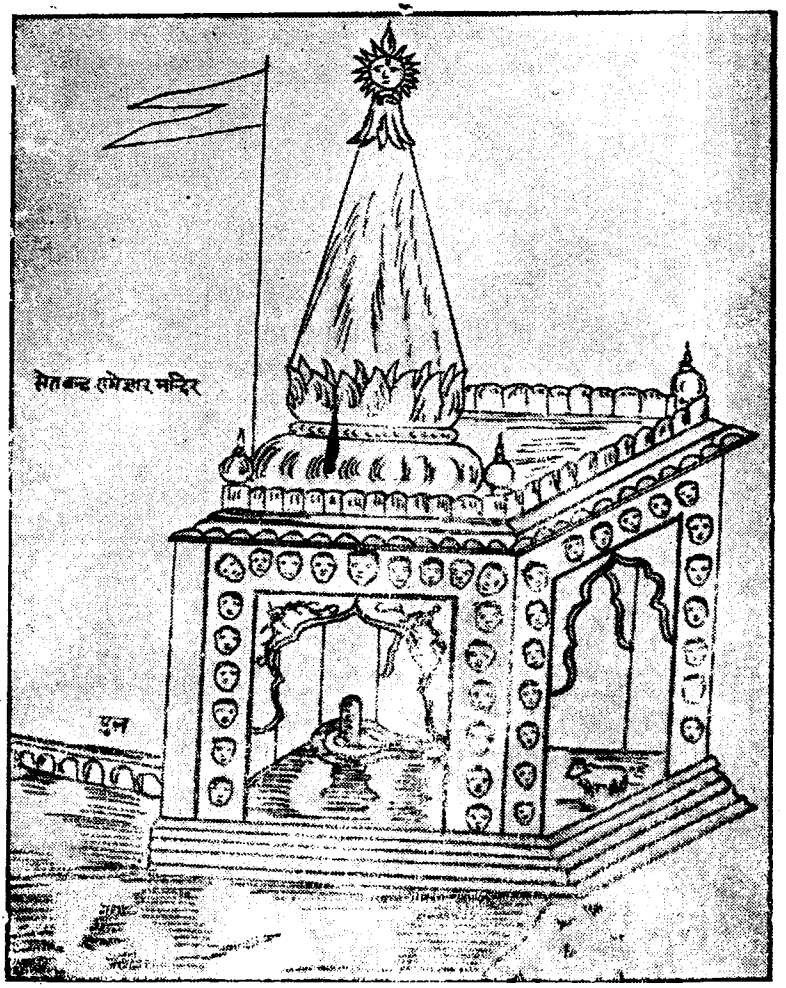
सेतबन्ध रामेश्वर मन्दिर

राम रम रम के काम करते हैं।
रमने का काम राम करते हैं॥
रमता जोगी ही राम को जाने।
राम को जाने जान कर माने॥
राम रमते जो मन में आयेंगे।
घट का वह सेत झट दिखायेंगे॥

पुल बन गया। विचित्र और दृढ़ था। देखने में बहुत सुन्दर था। राम ने देखा प्रसन्न हो गए--"इस पुल के बनाने में देवताओं ने काम किया है। यह लङ्का की चढ़ाई का स्मारक (चिह्न) रहेगा और लोगों को सेत (पिपीलिका) मार्ग की सुगमता की चेतावनी देता रहेगा। लेकिन एक न्यूनता है। मैं यहां एक शिव (कल्याण) का मन्दिर क्यों न बना दूँ। वह स्मरणार्थ रहेगा और सेतु के साथ साथ मार्ग का स्मरण कराता रहेगा।"

हनूमान बोले--"इससे बढ़कर और क्या है?"

राम ने कहा--'फिर इसका भी प्रबन्ध जल्द करो! मैं शिवलिंग (स्मारक चिह्न) स्थापन करके यहां उसकी प्रतिष्ठा करूँ।" पर्वतों के ऋषियों, मुनियों, योगी, तपस्वियों को बुला भेजो। मुख्य मुख्य देवताओं का आवाहन हो। सब आजायें। यज्ञ करें, वेद वाणी का पाठ हो और सबको फल-फूल और कन्दमूल का प्रीति-भोज दिया जाय। सब मिल कर आशीर्वाद दें। मैं लङ्का पर चढ़ाई करने जारहा हूँ। उसमें सिद्धि प्राप्त हो"

बात मुँह से निकली और उसका प्रबन्ध हो गया। सामिग्री पास थी, नल नील काम करने वाले थे।

पल मारने की हुई जो देरी। मन्दिर बना राम गति है तेरी॥
ऊँचे पर्वत के रूप का था। फाटक यक सामने खड़ा था॥

मन्दिर भी बन गया और राम ने एक अर्घ बनवा कर उस में उस लिङ्ग को खड़ा करके, उस जगह बहुत उत्सव मनाया। तपस्वी थे। उनके पास देने को धन कहां होगा! हाँ! सुग्रीव आदि राजाओं या समुद्र के राजा ने इसका प्रबन्ध किया हो तो मैं नहीं जानता। सुख का धन महा धन है। राम ने वहाँ उस सुख के धन की वर्षा की और जितने चराचर जीव थे सब यों ही ऐसे सुखी हो गये जैसे निर्धन धन पाकर सुखी होता है।

जब यह उत्सव समाप्त होने पर आया, राम ने सबके सामने जो वचन कहे थे वह सुनने समझने योग्य हैं। तुम्हारा जी चाहे तुम भी मुझ से सुन कर कण्ठाग्र कर लो। न चाहो तो न करो—

राम बोले—"मित्रो! शिव नाम है कल्याण का। हम सब अपना कल्याण चाहते हैं। जो निज कल्याण का विरोधी है वह मेरा भी विरोधी है। क्योंकि मैं आप कल्याण का रूप हूं और शिवस्वरूप हूँ। जो काम करो कल्याणार्थ करो। कल्याण तुम्हारा आदर्श रहे। कल्याण का आदर्श जब तक दृष्टि के सामने न हो तब तक कोई कर्म नहीं करना चाहिए और उसके करने से लाभ क्या है!

तुमने मैंने और सारे जीव जन्तुओं ने कल्याण ही के निमित्त शरीर धारण कर रक्खा है। यह सेतु क्यों बनाया गया? कल्याण के निमित्त! मैं लङ्का पर चढ़ाई क्यों कर रहा? इसका मूल कारण कल्याण ही की इच्छा है।

इसी कल्याण को शिव कहते हैं और यह विश्वेश्वर है जिसका स्मारक लिङ्ग मैंने काशी से मँगा कर यहाँ स्थापन किया है इसे देखकर सब में शिव की भक्ति आयेगी और सब अपना कल्याण चाहने लगेंगे।

इस कल्याण या शिव के दो अङ्ग होते हैं एक का नाम लिंग और दूसरे का नाम भग लिंग कहते हैं चिह्न को, निशान को, लिंग संस्कृत धातु लगि (चलना) से निकला है। यह धार है चाहे वह पुल्लिंग हो चाहे स्त्रीलिंग। जीवन की धार सब में है। भग शब्द संस्कृत धातु 'भज' (सेवा) से निकला है। जो सेवा करे वह भग है। इनमें से एक धार बनता है और दूसरा उसके रहने का आधार होता है। यह सारा जग लिंग और भग के आकारों का बना हुआ है। लिंग ज्योति है और भग अँधेरा है। ज्योति अँधेरे ही के बीच में रहती है। तुम को नेत्र मिले हैं तो तुम देखो कि तुम में हर एक का शरीर छोटी छोटी कोठरियों से बना हुआ है। चोटी से लेकर एड़ी तक अनगणित कोठरिया हैं। वह नील, पदम और संख की संख्या से भी अधिक हैं और इनमें से हर एक में जीवन धार लिंगाकार होकर आती और बसती हैं और यही प्रबन्ध जीव-जन्तु, वृक्ष आदि सारे देह धारियों में है। इसी दृष्टि से तुम्हारा शरीर भगाकार बना हुआ है और उसमें आत्म शक्ति लिंगाकार होकर बसती है और निवास करती है। इन दोनों की रक्षा कल्याण है।

यों तो सारा शरीर कोठरियों और लिंगों से भरा हुआ है, इनमें बारह मुख्य समझे जाते हैं और योगी उन्हें द्वादश चक्र कहते हैं।

यह सब बारहों चक्र इस शरीर के शुषुम्ना नाड़ी में मेरु-दण्ड हड्डी के सहारे पिरोये हुये हैं। यही चक्र भगाकार हैं और इनमें जो चेतन्य ज्योति धार रूप में आती जाती रहती है

वह लिंगाकार है। चक्र बिन्दी है और लिंग नादी (शब्द करने वाला) है। इस उपेक्षता से शिव या कल्याण के १२ रूप हैं और वह द्वादश जोति लिंग कहलाते हैं। जो लोग इनकी सेवा में रहते हैं वह कल्याण को प्राप्त होते हैं। यह मन्दिर उसी कल्याण रूपी शिव का स्मार्क, स्मर्णार्थ इस जगह स्थापित रहेगा !"

तीसरा समुल्लास

द्वादश चक्र निरूपण

"मित्रो ! शिव में कल्याण है और इस हमारे स्थूल शरीर में शान्ति और निभ्रान्ति का शिव ग्रन्थी ही स्थान है। यह इसकी चोटी है। यह शिव ग्रन्थी क्या है ? इसकी समझ खट चक्र निरूपण से कुछ कुछ आयेगी। इसलिए मैं बहुत संक्षेप के साथ तुमको समझाने का प्रयत्न करता हूँ।

मनुष्यों और दूसरे जीव जन्तुओं के भी तीन शरीर होते हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण।

स्थूल यह देह है जिसे तुम देखते हो और जिसमें दस बहिर्मुखी इन्द्रियाँ हैं—पांच कर्म की और पांच ज्ञान की।

सूक्ष्म शरीर तुम्हारा मन है जिसमें चार—अन्तः करण चित्त, मन बुद्धि और अहंकार अन्तर्मुखी इन्द्रियाँ हैं।

कारण शरीर तुम्हारे दोनों देहों का बीज रूप लय स्थल है और यह दोनों देह समय समय पर उससे उत्पन्न होते और उसी में लय होते हैं।

इस स्थूल देह में खट चक्र हैं। उनके नाम और स्थान यह है:—

चक्रों के नाम	स्थान	तत्व	ग्रन्थी
(१) मूलाधार	गुदा	मिट्टी	ब्रह्मा ग्रन्थी
(२) स्वाधिष्ठानम्	इन्द्री	पानी	
(३) मनीपूरम्	नाभि	आग	विष्णु ग्रन्थी
(४) अनाहत	हृदय	वायु	
(५) बिशुद्धी	कण्ठ	आकाश	शिव ग्रन्थी
(६) आजना	भ्रू मध्य तीसरा तिल	आत्मा	

यह स्थूल देह के खट चक्र हैं। स्थूल देह में इनके स्थान तुम जान गये। इस चित्र में इसका निरूपण देखो:—जैसे पिंड (स्थूल देह) में यह तीन ग्रन्थी हैं वैसे ही सूक्ष्म और कारण देह में भी तीन ही तीन ग्रन्थी हैं। यह नौ हैं। हर ग्रन्थी में दो दो चक्र हैं। षट चक्र स्थूल देह, सूक्ष्म देह और कारण देह में है। इस दृष्टि से वह १८ हो जाते हैं। विचार ग्रन्थियों ही का किया जाता है।

(६) अजाना चक्र ६

(५) विशुद्धी चक्र ५

(४ अनाहृत चक्र ४

(३) मनीपूर चक्र ३

(२) स्वाधिष्ठान चक्र २

(१) मूलाधार चक्र १

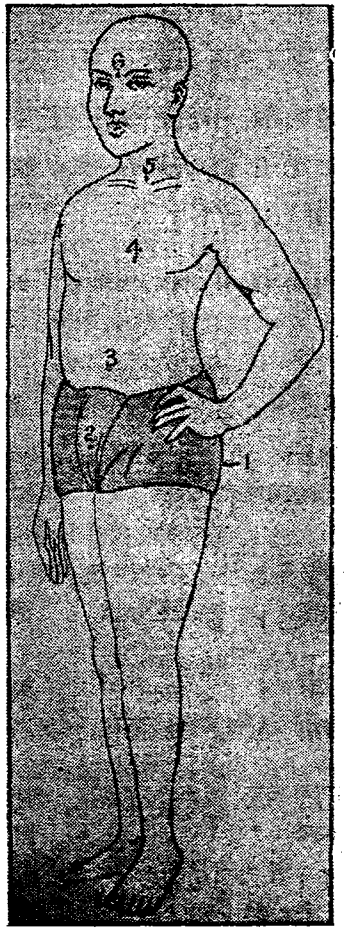

इस स्थूल देह में शिव ग्रन्थी चोटी पर है जो विशुद्धी से चलकर आजना चक्र (भ्रूमध्य) तक है। इसी आजना चक्र से शुषुम्ना नाड़ी की चाल का मस्तिष्क में पता लगता है और

शुषुम्ना मार्ग का रास्ता यहां से निकलता है।

तीन चक्र मस्तिष्क में हैं:— (१) सहस्त्रार (२) त्रिकुटी या त्रिकूट और (३) शून्य यह सूक्ष्म देह में है।

और इसी प्रकार तीन शेष चक्र (१) महा शून्य (२) भँवर गुफा और (३) सत्य लोक मस्तिष्क के मध्य से चलकर खोपड़ी के मध्य भाग में स्थान पाते हैं। यह कारण देह के चक्र हैं।

यह द्वादश चक्रों का विधान है।

राम ने इतना समझा कर अपनी सेना को बताया कि किस अभिप्राय से सेतबन्ध रामेश्वर समुद्र के तट पर शिव स्मर्णार्थ स्थापना की गई है।

यह योग का विषय था। किसी की समझ में आया किसी की समझ में न आया। लेकिन प्रसन्न और सुखी सब हुए और उत्सव के पश्चात् जो अतिथि जन यज्ञ में आये हुए थे, राम को नमस्कार करके अपने अपने निवास स्थान को चले गये।

चौथा समुल्लास

सेतुबंध के पार-लंका में प्रवेश

मंदिर के समस्त उत्सव के पश्चात् राम की सेना पुल पर आई। "रामचन्द्र की जै २ की ध्वनि पुल, समुद्र और आकाश मंडल में गूंज उठी। पुल लम्बा चौड़ा, लम्बा तो कम से कम २६ या २७ या अधिक मीलों का रहा होगा। चौड़ा इतना था कि एक दर्जन मनुष्य सुगमता से साथ साथ चल सकते थे। राम की सेना चतुरंग नहीं थी। सब की सब पैदल थी। घोड़े हाथी ऊंट कहाँ इकट्ठा किये जा सकते थे। यह बन्दर अपने डील डौल की दृष्टि से पुल पर चलते समय सिंह और हाथी प्रतीत

होते थे। आगे रीछ, बीच में बन्दर और इनके पीछे राक्षस थे। राम लक्ष्मण सवारी पर थे। और सवारी भी कैसी विचित्र! किसी ने कभी देखा न सुना। वह हनूमान का कंधा था। एक तरफ, राम बैठे थे। दूसरी तरफ लक्ष्मण। दोनों के हाथों में धनुष बाण थे। और यह सब के बीचों बीच में थे।

समुद्र के जीवों ने इन के देखने के लिये पानी के अन्दर से अपना सिर ऊंचा किया। इन में से किसी किसी का डील डौल इतना लम्बा चौड़ा था कि वह पानी पर तैरते हुए लम्बे चौड़े जहाज प्रतीत होते थे। इन सब ने राम और राम की सेना को देखा और राम और राम की सेना ने उनको देखा दोनों आश्चर्य निमग्न हो गये। अब तक ऐसा परस्पर दृश्य आंखों के सामने न आया होगा। राम की अपार दृष्टि इन पर पड़ी! उस का क्या परिणाम हुआ होगा। उसे केवल साधू और भक्त जन समझ सकते हैं। यह ऐसी बात है जो सर्व साधारण की समझ से बाहर है।

दृष्टि में सृष्टी है सृष्टी दृष्टि का परमान है।
साथ में दृष्टि के मन है मन में राग अनुमान है॥
दृष्टि की बिजली चमक उठती है दृष्टि में जो आ।
फिर यह बिजली अनुभव और सतज्ञान गम की खान है॥
राम के दर्शन में है गुन लाभदायक गुन है यह।
गुन सगुन निर्गुन का यह दर्शन महा स्थान है॥
चित की वृति पाके दर्शन कुछ की कुछ बन जाती है।
और इसी वृति के द्वारा प्राणी का कल्याण है॥
जब पड़ी आदित्य की दृष्टि किसी परवत पर आ।
नीलम और पुखराज हीरों की तब खान है॥

हंसते, खेलते, उछलते कूदते हुये सेना चली। पुल के नीचे समुद्र अपनी लहरों की आंखों को उठा उठा कर राम के रूप

का दर्शन करता था। पुल इतना ऊँचा था कि लहरें सेना को भगा नहीं सकती थी। उन्हें राम का चरणोदक इस समय प्राप्त नहीं हुआ। वह तरसती ही रह गई। हां! वह नीचे नीचे लहराता रहा और पुल के ऊपर राम की सैना दूसरा समुद्र बन कर लहराती हुई जा रही थी। नीचे समुद्र ऊपर समुद्र! नीचे निर्गुण ऊपर सगुण! इस दृश्य ने विचित्र रूप से निर्गुण और सगुण का चित्र खींच कर दिखा दिया।

है सगुण में गुण तो निर्गुण बन रहा है निर्गुणी।
ध्यान करते हैं सगुण का सब ऋषी ध्यानी मुनी॥
क्या है निर्गुण में धरा, गुण की सगुण में खान है।
है सगुण में भक्ती सेवा, ज्ञान और अनुमान है॥
ज्ञान निर्गुण में कहां, मन बाणी गा सकते नहीं।
बात क्या करते हो उसकी, सम्भवत यह है कहीं!
ब्रह्म की किसको समझ है, सोचो अपने मनमें तुम।
राम की भक्ती करो, मन बुद्धि चित और तनमें तुम॥
पहले संगत गुरू की हो, पीछे सत का ज्ञान हो।
ज्ञान और भक्ति मिले, तब जीव का कल्याण हो॥

बीच में ठहरने का कहीं ठिकाना नहीं था। नल नील ने ऐसा सम्बन्ध नहीं किया था। वह चले और सुग्रीव ने उन्हें ललकारा।

हां शूरवीरो! पग को बढ़ाये चले चलो।
झिझको न ठिठको पग को बढ़ाये चले चलो॥
हैं राम साथ में नहीं! भय है न चिन्ता है।
मन राम के चरणों में लगाये चले चलो॥
जीतोगे अपने शत्रु को संदेह कुछ नहीं।
लंका की ओर दृष्टि जमाये चले चलो॥
क्या रूप है अनूप, दर्श पाके तर गये।

यह रूह अपने चित में बसाये चले चलो।
थोड़ी ही देर पीछे पहुंच जाओगे अभी।
साहस से काम लेते लिवाते चले चलो॥

बंदरों का स्वभाव चंचल होता है। गरजे, तड़पे, उछले, कूदे और पुल पर से दोनों तरफ समुद्र की लहरों का तमाशा देखते हुए चल निकले। घंटों ही में पुल के पार पहुँच गये। लंका की भूमि में प्रवेश किया।

जामवन्त और अंगद सुभीते की जगह खोजने लगे। एक रमणीक हरा भरा मैदान देखा। पृथ्वी चौरस थी। पास ही नदी बह रही थी। लंबे चौड़े और ऊँचे घने वृक्ष भी बहुतायत से थे। राम और लक्ष्मण के लिये दो सुथरे झोंपड़े बनाये। बन्दरों ने वृक्षों की डालियों का बसेरा स्वीकार किया। रीछ खोखलों में ठहरे और राक्षसों ने घास फूस की कुटिया बनाली। सब उसी जगह ठहरे।

राम ने आज्ञा दी—"अभय होकर बन के फल खाओ।"

यह बन में घुसे। राक्षसों का देश! उन्हीं का सब जगह चौकी पहरा! बन्दर पिल पड़े। जो मिला उसकी दुर्गति की। नोंचा खसोटा, मारा पीटा। जो उनके पास मिला, लूटा छीना। इनमें भगदड़ पड़ गई। सब सुन चुके थे कि एक बन्दर ने लंका को जलाकर मिट्टी में मिला दिया। पहिले ही से डरे सहमे थे। और जब इनकी भीड़ देखी, फिर सामना कौन करता! अपनी जान बचा बचा कर भाग निकले और वह स्थान राक्षसों से खाली होगया।

खाया, पीया। थके मांदे थे, जगह जगह आग जलाई। चौकी पहिरे का काम संतरियों को सौंप कर सो रहे। थोड़े से बन्दर आदि उस टीले पर राम लक्ष्मण के साथ ठहरे, जहाँ इनका झोंपड़ा था।

पाँचवाँ समुल्लास

गपशप

कुटी के बाहर घास फूंस बिछाकर राम लेट गये और हनूमान पांव दबाने लगे। शरद ऋतु का चन्द्रमा खिला हुआ था। दृष्टि आकाश पर थी।

राम ने पूछा—"यह जो चाँद के बीच में सांवला रंग दिखाई दे रहा है क्या है?"

अंगद ने कहा—"यह पहाड़ों की झाँई और परछाँई है। चन्द्रलोक में भी बस्ती है।"

सुग्रीव—"नहीं-नहीं यह आपकी सांवली मूर्ति का प्रतिबिम्ब है।"

लक्ष्मण—"आप अपने साँवले रंग से इस में व्यापक हो रहे हैं।"

हनुमान—"यह चाँद आपका भक्त है। आपके ध्यान में रहता है। यह सांवली मूर्ति के ध्यान का प्रभाव है जो दिखाई दे रहा है।"

राम मुस्कराये। जैसा जिसका विचार, उसका वैसा व्यौहार भक्तों को अपने भगवंत के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। वह सब में अपने इष्ट को व्यापक समझते हैं। यह क्यों नहीं कहते कि चाँद सीता के रूप को देखकर लज्जित हो रहा है। यह काले धब्बे हैं जो लज्जा के प्रभाव से इस में दिखाई दे रहे हैं।"

यह सब चुप रह गये।

राम ने कहा-"वह देखो, सामने एक ऊँचा टीला है, जो जगमगा रहा है और वहां से बादल की गर्ज की सी ध्वनि

सुनाई दे रही है और इसके मध्य में कोई बड़ी सी वस्तु चमक रही है। साथ ही एक बड़ा प्रकाशवान पदार्थ जगमगा रहा है जिसकी उपमा नहीं दी जा सकती।" और तो किसी ने उत्तर नहीं दिया। विभीषण बोले-"यह ऊँचा जिसे आप देख रहे हैं त्रिकूट पर्वत है और जिस जगह जगमग-जगमग प्रकाश हो रहा है उस पहाड़ की चोटी है। इस पहाड़ पर रावण ने बारह दरी बनवा रक्खी है जिसमें बारह दर हैं। वे सबके सब चारों ओर से खुले हैं। वह बहुत लम्बी चौड़ी है और राक्षसों की बहुत बड़ी संख्या उसमें बैठ सकती है। कभी कभी वहाँ दरबार भी लगा करता है। पूरब के दर से लगा हुआ सिंहासन बिछा है। और इस सिंहासन पर हीरों से जड़ा हुआ छत्र खड़ा है। जो वस्तु बहुत चमक दमक दिखा रही है वह रावण का मणि जटित मुकुट है। इसमें बहुमूल्य चमकदार रत्न लगे हैं। और जो छोटे आकार की ज्योति रह-रह कर दमकती है वह मंदोदरी रानी का जुगनू (गहना) है। इस समय रावण सभा में बैठा हुआ नाच रंग देख रहा है। गाना बजाना हो रहा है। बादलों के गर्जने की ध्वनि 'ओ३म्-ओ३म्' करते हुये जो आप सुन रहे हैं वह पखावज के थाप की गूंज है।"

राम यह सुनकर मुस्कराये। धनुष से बाण को जोड़ा और उसे छोड़ दिया। बाण रावण के मकुट पर लगा। मुकटटुकड़े-टुकड़े होकर सिंहासन के पीछे गिरा। जो जगमाहट दृष्टि में आ रही थी वह देखते देखते गुप्त हो गई और बाण लौट कर फिर राम के तर्कश में आ समाया। यहाँ बन्दर राक्षस और रीछ देखकर चकित होगये और वहां रावण की सभा में अशान्ति फैल गई।

रावण ने उसी समय सुना था कि लंका में राम ने प्रवेश किया। इसे सोच हुआ। मन बहलाने के निमित्त नाच रंग

कर रहा था। सनसनाते भिन भिनाते हुये राम बाण को सब ने रावण के मुकट पर लगने, मुकट के तोड़ने और उसके गिराने को देखा। वह अपने तेज में चमक रहा था। और उसे टूटते हुये भी सबने देखा लेकिन यह किसी को भी न सूझी कि उसे पकड़ लें। राक्षस कहने लगे-"यह बड़ा असुगुन हुआ। अभी राम आये और अभी रावण का मुकुट अकस्मात् टूट फूट कर नीचे गिर पड़ा। यह बाण किसका था ? किसने चलाया ? यह अवश्य काल का बाण था।"

वहां नाना प्रकार की गप शप होने लगी।

यहां भी राम की सेना ने विचित्र बाणविद्या का चमत्कार देख कर आश्चर्य माना। अंगद अभी लड़का था। इससे न रहा गया। पूछा-"प्रभो! यह कैसा बाण है ?"

राम ने कहा-"इसे मन बाण कहते हैं। बाण विद्या नाना प्रकार की है। परशुराम, विश्वामित्र और अगस्त आदि ऋषी इसमें महा प्रवीण समझे जाते हैं। मन सर, चित-सर, ब्रह्मसर, वरुण सर, शक्ति सर, इन्द्र सर इत्यादि कई प्रकार के बाण चलते हैं। जो इनकी विधि को जानता है वही चला सकता है।"

अंगद ने कहा— 'इसकी विशेषता क्या है ?"

राम बोले—"इसमें दुधारे का बल होता है। यह दो विधि होता है। संकल्प विकल्प दोनों इसमें रहते हैं। आकर्षण शक्ति मानसिक बल लिये हुये बढ़ी रहती है। लड़के चर्खी का खेल खेलते हैं। वह ऊपर भी जाती है नीचे भी आती है। यह बात उस लड़के की रुचि पर है। उसी नियम के अनुकूल यह मन-सर चलता है। और अपना काम करके लौट आता है। यह सब बाणों में छोटा बाण कहलाता है। ब्रह्मसर आदि इससे अधिक तेजोमय और बलवान होते हैं।"

फिर किसी ने बात चीत नहीं की। राम ने आप ही अपने

श्री मुख से इसको समझाया। 'सिद्धि, शक्ति, निधि, क्रिय व रिता सब की सब मानसिक बल के आधीन है। यह सब सब मन के खेल हैं। पहिले मन की विधिपूर्वक रोक थाम क नी चाहिये। जिससे एकाग्रता का बल आ जाय। इस बल प्राप्त करने में साधन और अभ्यास करना पड़ता है। ज्यों-ज यह अधिक बढ़ती जाती है। त्यों-त्यों इसकी वृतियों में आ र्षण शक्ति अधिक से अधिक होती जाती है और यह जो च कर सकती है और कर लेती है।"

अंगद—"क्या एक मनुष्य इस शक्ती से बहुतों पर वि पा सकता है?"

राम—"इस प्रश्न का उत्तर मैं क्या दूं! बड़ी विजय लिये बड़ा बल और मनुष्य जाति के एकाग्र वृति बल की आ श्यकता है। एक चने से भाड़ नहीं फट सकता। भाड़ का घ मुख तक चनों से भरा हुआ हो और उसे आग दी जाय चनों की एक साथ भड़कने और फूटने से भाड़ का एकब फटना सम्भव हो सकता है।"

अंगद—"आप एक हैं आप में बड़ा बल है।"

राम—"मैं अकेला नहीं हूँ। सारा विश्व मेरे साथ है। उ पृथ्वी के प्राणी मात्र की चित्तवृति एकाग्र होकर एकत्रित हु और हाहाकार मचाती हुई विष्णु शक्ति को ऊंचे चढ़ कर लिया, तो उस की आकर्षण शक्ति के बल से विष्णु शक्ति उतार हुआ और वही अवतार कहलाया है। इसमें विश्व मनोवृति के आकर्षण शक्ति का बल होता है।"

यों गपशप करते हुए राम को नींद आगई। सब सोने च गयें। हनूमान और लक्ष्मण पहरा देने लगे।

छटवाँ समुल्लास

रावण और मन्दोदरी

राम बाण का कौतुक देखकर रावण के मन में संकल्प विकल्प की घुड़दौड़ होने लगी। वह महल में आया। मंदोदरी पाँव पर पड़ी। 'नाथ! राम के साथ बैर न कीजिये। शत्रुता बराबर वालों के साथ की जाती है। इनकी शरण में जाइये। जिससे मेरा सुहाग अचल बना रहे।"

रावण—"राम में इतनी शक्ति कहां है जो मेरा सामना कर सकें!"

मंदोदरी—"वह तो आगये। तुम्हारे सिर पर आकर पहुँचा गये। समुद्र पर पुल बांधकर आये। धूमधाम करते हुए आये। तुम में सामर्थ्य होती तो क्या तुम समुद्र पर पुल न बाँध लेते!"

रावण—"समुद्र को मैंने लङ्का की खाई बना रक्खा है। नहीं तो मेरे लिये ऐसा पुल बाँध लेना क्या कठिन काम था!"

मन्दोदरी—"यह खाई काम नहीं आई। इससे रोक थाम नहीं हो सकी। बंदर और रीछ दनदनाते हुये लङ्का में पहुंच गये।"

रावण—"इनकी मृत्यु यहां ले आई। पुल इसका कारण बना। राक्षस उन्हें पकड़ पकड़ कर खा जायेंगे।"

मन्दोदरी—"समुद्र तटवासी राक्षसों में भगदर पड़ रही है। वह अपने घर छोड़ छोड़ कर लंका में आ रहे हैं। खाने वाले होते तो बंदरों पर मुँह मारते। यहां तो उल्टी बात हो रही है। बन्दर उन्हें नोंच खसोट कर मार रहे हैं। राक्षस माँस भक्षक हैं। बन्दर ऐसे नहीं हैं। कहीं वह ऐसे होते तो

धर धर कर चबा जाते। तुम बहकी बहकी बातें न करो। मेरा कहना मान जाओ। राम मनुष्य नहीं हैं। वह ब्रह्म के अवतार हैं। उनके शत्रु की रक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश तक नहीं कर सकते।"

रावण हँसा—"भोली भाली स्त्री! ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तो सारे अनुचर मेरे कारागार में हैं। वह क्या मेरी रक्षा करेंगे। समझ बूझ कर मुँह खोल! यों ही न बोल!"

मन्दोदरी—"मुझ पर दया कीजिये। मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ। सब कुछ कर लिया। संसार की लीला देख ली। सीता जी राम को दे दीजिये। प्रभू के चरणों की शरण में चले जाइये। वह दयालु कृपालु हैं। तुम्हारा अपराध क्षमा कर देंगे। मेघनाद सपूत है। इन्द्रजीत तेजवान, बलवान और बुद्धिवान है। राज-काज उसे सौंप दीजिये। वह राजा हो जाय। आपका चौथा पन आ गया। वन परस्ती का भेष धारण कीजिये और मुझे भी अपने साथ लेकर वन को चलिए। वह शास्त्रों की मर्यादा है।"

यह कहकर मन्दोदरी रो पड़ी और रावण के पांव पर गिरी। "यह मेरी विनती स्वीकार कीजिए।"

रावण ने मन्दोदरी को उठाकर अंग लगाया। "तू डरी क्यों है? सारी आयु मेरे साथ रही। क्या मेरे बल, पराक्रम और प्रताप से परिचित नहीं है! देख! कौन ऐसा बली है जो मेरा लोहा नहीं मानता। संसार की सारी शक्तियां एक एक करके मेरे आधीन हो रही हैं। जिसने सिर उठाया, मैंने उसे वहीं कुचल दिया। देव, दनुज, किन्नर, नाग और गंधर्व कौन हैं जो मेरे वशीभूत नहीं हैं! लङ्का सभ्य देश है। सारे जगत में उसकी साख है। अयोध्या इसके सामने क्या है! और फिर अयोध्या के दुबले पतले दो लड़के! यह क्या मेरा सामना कर सकते हैं।"

मन्दोदरी बोली—"राम को तुम राम समझो। नर न समझो। वह व्यापक महान शक्ति है जो सारे जगत में मन्डलाकार हो रही है। उसका 'सिर' दिव्यलोक में, 'पाँव' पाताल में और 'धड़ अन्तरिक्ष में है। वन और वनस्पति 'रोंगटे', पहाड़ 'हड्डियां' और 'नसनाड़ी' नदियां हैं। सूरज और चांद दोनों उनकी आँखें हैं और देवी देवता उनकी शक्तियां हैं। तुमने मनुष्य का आकार देखकर उन्हें नर समझ लिया। ऐसा न होना चाहिए। यह अवतार हैं। ब्रह्म की सामान्य शक्ति जब विशेष रूप धारण कर लेती है, उसमें विशेषता आ जाती है। देखने में छोटा हुआ तो क्या! वह सामान्यता से बदल कर विशेष बन गया है और आग की चिनगारी के समान सारे जगत को जला सकता है।"

रावण हँसा—"यह तो मेरे ही गुणों को गारही है। मेरा प्रताप अखिल ब्रह्माण्ड में छाया हुआ है और ऐ सुन्दरी! आग की चिनगारी जब सारे ब्रह्माण्ड को जला देगी तो यह ब्रह्म कहाँ और किसमें रहेगा!"

मन्दोदरी—"सृष्टि, स्थिति और लय ब्रह्म के आधार पर हैं। ब्रह्म निराधार है। त्रिगुणात्मक खेल अनादि अनन्त प्रवाह रूप से ब्रह्म में होता ही रहता है। वेद इस ब्रह्म के साँस हैं। उनके अन्तरगत कारण सूक्ष्म और स्थूल जगत बनता बिगड़ता रहता है। यह 'राम' उसी का निज सरूप और सत और सत्ता हैं।"

हुए मण्डलाकार मण्डल बने वह।
बने मङ्गलाकार मङ्गल हुए वह॥
उन्हीं में हैं ब्रह्मा उन्हीं में महेषा।
उन्हीं में है विष्णू उन्हीं में है शेषा॥

जो संसार में निद्धियां सिद्धियाँ हैं।
वह सब राम के रूप की शक्तियां हैं॥
न धोके में आओ न भरमो न भूलो।
अविद्या के झोले में आकर न भूलो॥
नहीं नर हैं नर का धरा रूप अद्भुत।
जगत के बने राम जी भूप अद्भुत॥
खुली दृष्टि से इनका दर्शन करो तुम।
तन मन और धन को अर्पण करो तुम॥
उन्हीं की ही सेवा उन्हीं की हो भक्ती।
उन्हीं के सहारे हैं सब योग युक्ती॥

रावण—'राम यहां होते तो तेरी स्तुति सुन कर हँस पड़ते। तू नर को 'नारायण' बना रही है। यह महिमा तुझ में है। तू तो राम से कहीं बढ़ चढ़ कर है।"

मन्दोदरी समझ गई। रावण ने सीता को क्या हरा, उसकी बुद्धि हरी गई। मृत्यु की कोई औषधि नहीं है। जब अन्तकाल हो जाता है रोगी और वैद्य दोनों की मति मारी जाती है। उपयोगी औषधि की तरफ ध्यान तक नहीं जाता। वह सोच समझ कर चुप हो रही है।

अभी धार कितनी ही बरसे गगन से।
नहीं बेंत में फल फूल बीज उगते॥
किया नीम को युक्ती से किसने मीठी।
रहेगी सदा नीम कडुवी की कड़वी॥
जो अज्ञान के दल दलों में फँसे हैं।
न निकलेंगे वह पाँव सिर से धँसे हैं॥
गुरू शिव हों विष्णु हों ब्रह्मा ब्रहस्पति।
न अज्ञानी की उनसे बदलेंगी मति गति॥

रात भर वह समझाती रही, लेकिन रावण कब उसकी सुनने लगा था।

सातवां समुल्लास

अङ्गद-दूत

प्रातःकाल राम जागे। नित्य नियम करके बंदरादि की सभा बैठी।

राम ने पूछा—"तुम लोग लंका में आगए। अब यह बताओ कि क्या करना चाहिए?"

जामवन्त सब में बुद्ढा और समझदार था। उत्तर दिया—"काम युक्ति और मर्यादा के साथ हो। अच्छा मन्त्र जो मैं दे सकता हूं वह यह है कि अंगद को रावण के पास दूत बनाकर भेजा जाय। वह उसे जाकर समझायें बुझायें। सीता को लौटा दे तो लड़ने झगड़ने का नाम न लिया जाय। लेकिन मैं जानता हूँ कि वह ऐसा न करेगा। पहले इसका उत्तर आ जाय तब लंका पर चढ़ाई की जाय।"

जामवन्त की बातें जँची तुली हुई थीं। सब मान गये।

राम ने अँगद से कहा—"तुम क्रोध के रूप हो। पहिले अपना रूप मुझ से समझ लो। फिर दूत बन कर रावण की सभा में जाओ। प्रकृति में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पांचों चंचल मन के स्वभाव कहलाते हैं। यह जीवन की शोभा और महिमा हैं। समता के साथ हो तो बहुत सुन्दर लगते हैं। जब इनमें असमता आ जाती है तो कुरूप हो जाते हैं। इसी कुरूपता का निषेध किया गया है। नहीं तो वह जब तक तराजू के पल्लों के समान बराबर रहते हैं वह विधि कर्म

कहलाते हैं। असमता निषिद्ध है। समता विधि है।

काम कहते हैं वीर्य, वीरता और सुन्दरता को। यह वृद्धि और उन्नति का कारण है। समता के साथ मनुष्य की सब प्रकार की वृद्धि इसी के सहारे होती है। असमता आई और यह हानिकारक हुआ।

क्रोध कहते हैं डाट डपट को। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने स्वभाव, गुण और कार्य की सँभाल कर सके। दूसरे का प्रभाव उस पर न पड़े। इसमें भी समता रहे। असमता न होने पावे। क्रोध मनुष्य में अवश्य हो, नहीं तो दूसरे उसे कुचल डालेंगे और वह निर्बल होता जायगा। क्रोध का मन्तव्य मारधाड़, हिंसा और हानि नहीं है। जो ऐसा करता है वह क्रोधी नहीं है, क्रोध का विरोधी है। साँप अपनी फुसकार को न छोड़े, हां किसी को काटे नहीं। फुसकराते रहने से दूसरी शक्तियाँ उसको पराजय न कर सकेंगी और जिस पुरुष में क्रोध की अधिकता असमता के साथ है वही क्रोध उसे मार डालता है। उसके शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। लोहू, माँस, हड्डी, चरबी सब जलने लगते हैं। वह चिड़चिड़ा और निर्बल होजाता है और जिसमें समता है वह बलवान, स्वरक्षक, धीर वीर गम्भीर बना रहता है।

लोभ न हो तो संग्रह कौन करे। व्यय करने में बल नहीं है। बल संग्रह करने में है। लोभ अवश्य हो, नहीं तो उन्नति और वृद्धि कभी न होगी। विद्या, बुद्धि, सभ्यता, धन साधन का लोभ समता के साथ होना जीवन का आवश्यक विषय है।

मोह संग्रह शक्ति का भाव है जिसमें और जिससे प्राणी को ममत्व होता है। यह ममत्व व्यौहारिक यत्न का प्रबन्धक है। ढुलकने वाले ढेले पर घास तक नहीं जमती। मनुष्य मोह

के बस एक स्थानी होता है और अपना व्यौपार बढ़ा लेता है। यह भी समता के साथ हो।

अहंकार में सबकी जड़ है। यह अहं भाव ही संसार है। लोभ, मोह, काम, क्रोध का यही केन्द्र है और इसी में सब पिरोये हुये रहते हैं। यही दृढ़ता है। यही दृढ़ाता रहता है। समता के साथ हो तब तो उन्नति के शिखर पर लेजाता है। असमता आई और यह नाश का कारण बन जाता है।

ऐ बेटे! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की निंदा करने वाला आप अपना शत्रु है। लोग असमझी से कहते हैं, "काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को मार दो, जलादो, दग्ध करदो।" सोचो तो सही! यह न हो तो भक्ति, योग, साधन, ज्ञान, ध्यान किस से और किसके बल से हो! इनके मारने और दग्ध करने का अर्थ यह है कि यह नियम में रहें। इनमें असमता न आने पावे। तब यह दोनों व्यौहार और परमार्थ में उपयोगी और सहायक होते हैं।

तुम मेरे इस उपदेश के मूल आशय को समझ कर लंका जाओ। रावण से मिलो। उसे समझाओ बुझाओ। तुम स्याने हो। वीर और धीर हो। जिससे मेरा काम बने वही तुम्हारा कर्तव्य है।"

अंगद ने सर झुकाया। "मैं क्या और मेरा काम क्या। आप मुझे यश दे रहे हो। आप का काम तो पहले ही से हुआ है।"

दण्ड प्रणाम करके अंगद लंका को चले।

आठवां समुल्लास

अंगद और रावण

बन्दर २ एक ! अन्य देशी को स्वदेशी बहुत परिचय के पश्चात् पहिचानते हैं। अंगद चले। त्रिकूट गिरि पर चढ़े। लंका की गलियों से निकले। जिसने देखा उसने वही समझा कि यह तो वही बन्दर है जो लंका को जला गया था। अंगद हाथी के डील डौल के बंदर थे। झूमते जा रहे थे। जिससे रावण की सभा का पता पूछा, उसने नम्रता के साथ कांपते हुये बता दिया कांपना कपि का स्वभाव है। सुरक्षा में लगा रहना राक्षस का स्वभाव है। यहाँ राक्षस तो कांप उठे, श्रीहत होते गये और उन की रक्षा और स्वरक्षा शक्ति अंगद में आती गई। यह स्मरण रहे कि अंगद बालि के लड़के थे। बालि में नेत्र की आकर्षण शक्ती इतनी बढ़ी हुई थी कि जो सामने आता था, उसका आधा बल इसमें चला आता था। यह ड्योढ़े बल से उसे परास्त कर देता था। यही दशा अंगद की भी थी। जिसने इन्हैं देखा या जिन को इन्होंने देखा उनका आधा बल इनमें आ गया। यह तो बली बन गये और वह निर्बल होगये।

यह रास्ते में चले जा रहे थे। रावण का एक लड़का मिल गया। दोनों युवावस्था में थे। बातचीत में राक्षस को क्रोध आ गया ! मारने के लिये एक लात को ताना। अंगद में क्रोध नहीं था। राम के उपदेश को ग्रहण कर चुके थे। चित में समता थी। उसके बल को हर लिया और उसकी टांग पकड़ कर पृथ्वी पर पटका। वह मर गया। राक्षस डर गये। यहां मुँह यह बात नगर में फैल गई कि जिस बन्दर ने लंका जलाई थी, वह

फिर आगया है। कौन जाने अब के क्या उत्पात मचाये! सब जगह खलबली पड़ गई।

इनको राक्षसों ने रावण की सभा का पता दिया। वह तो उधर चले और इधर बहुत से राक्षसों ने रावण को जाकर सूचित किया कि राम का दूत आ रहा है और वह महा बलवान है।"

रावण हँसा--"बुला लाओ। देखूँ तो सही वह कैसा है!" वह गये। उन्हें साथ लाए। अँगद ने दृष्टि डाली। वह काजल का काला पहाड़ बना हुआ बैठा था। उसकी भुजायें क्या थीं! लम्बे लम्बे वृक्ष के आकार की थीं। सिर उस पर्वत का शिखर था देह के रोंगटे लताओं के सदृश थे। आँख, नाक, कान पहाड़ की कन्दराओं के समान थे।

यह सभा में अभय होकर गए। इन्हें देखते ही सारे सभासद् नमस्कारार्थ उठ कर खड़े हुए। रावण यह नहीं चाहता था कि कोई इनका सम्मान करे। उसे क्रोध आगया। यह सबको नमस्कार करके सभा में बैठ गए।

रावण--"अरे तू कौन है?"

अँगद--'मैं राम का दूत हूँ।"

रावण--"यहाँ क्यों आया?"

अँगद— 'तुम्हारे हित के लिए।"

रावण—"वह क्या?"

अँगद--"तुम उत्तम कुल के हो। पुलिस्त्य ऋषि के नाती हो। लोकपाल और दिगपाल आदि सबको तुमने जीत लिया। संसार में तुम्हारा यश और कीर्त्ति फैल गई। यह तो अच्छा था, लेकिन तुमने यह बुरा किया कि जगत की माता सीता को हर लाये। राजमद बुरा होता है। अहँकार नाश का मूल कारण है। जो होना था वह हो चुका। तुमने महा अनुचित काम

किया। अब मुँह में घास का तिनका दबाकर नारी और परिवार सहित राम के पास चलो। सीता को सबके आगे करो। त्राहिमान त्राहिमान करते हुये उनके पाँव पर गिरो। राम दया और क्षमा की मूर्ति हैं। तुम्हारा अपराध भूल जायेंगे। तुम को अभय कर देंगे। तुम्हारा कल्याण होगा। मेरे आने का कारण यही है।"

रावण--"मुँह को सँभाल कर बात कर। इतना असभ्य क्यों होता है? मेरे तेज और बल को जानता हुआ तू मूढ़ बन रहा है। तेरे बाप का क्या नाम है?"

अँगद--"मेरा नाम अँगद है और मैं बालि का लड़का हूं जिस के साथ तुम्हारी मुठभेड़ हो चुकी है।"

रावण पते की बात सुन कर खिसियाना हो गया। बात को पलट कर कहने लगा "हाँ! हाँ मैंने सुन रक्खा है। बाली एक बन्दर था। तू उसके कुल में कुलघातक पुत्र उत्पन्न हुआ। तू जन्म लेते ही क्यों न मर गया! कुल कलंक! तपस्वियों के साथ मिलकर उनकी बड़ाई कर रहा है। बता, अब बालि कहां हैं? है तो वह कुशल के साथ?"

अँगद को हँसी आ गई—"दस दिन पश्चात तुम स्वयं जा कर बालि से मिलकर कुशल पूछ लेना! बालि आप तुम को बता देंगे कि राम से बैर रखने का क्या फल होता है? राम का भक्त होने से मैं तो कुलघालक बना और राम के विरोधी होकर तुम कुलघालक हुए। राम का दूत और कुल का कलंक! यह बात मैंने तुम्हारे ही मुँह से सुनी है।"

रावण—"तू बड़ा मुँह फट है। मैं तेरी बात सुन सुन कर अपनी सहन शक्ति से काम ले कर चुप हो रहा हूँ। नीति कहती है कि दूत की बातों को सह लेना चाहिए।"

अँगद—"तुम्हारी नीति, धर्म शील स्वभाव सब इसी एक

बात से प्रकट हैं कि दूसरे की स्त्री को चुरा लाए और सहन शीलता का पता इसी से लगता है कि तम्हारी बहिन के नाक कान काट लिए गए और तुमने एक बात तक किसी को नहीं कही और हम भी बड़े भाग्यवान हैं कि तुम जैसे पवित्र हृदय वाले का दर्शन पाया।"

रावण—"तू बहुत बातें बनाता है। क्या नहीं जानता कि सारे देवता मेरे आधीन हैं और इनमें से कोई सर नहीं उठा सकता! और तेरी सेना में वीर पुरुष कहां हैं जो मेरा सामना कर सकते हैं! हां एक बंदर बल बुद्धि वाला है, जिसने लंका जला दी थी। उस अकेले से हो क्या सकता है! और वह कब मुझ से लड़ सकता है! जामवन्त बूढ़ा है। नल नील शिल्प विद्या प्रवीण हैं। मैं नहीं समझता कोई भी बंदर ऐसा होगा जो मेरे साथ लड़ने का साहस करेगा!"

अँगद—"वाह वाह! जिस बंदर की तू इतनी बड़ाई करता है, वह सुग्रीव का सबसे छोटा सेवक है। हमने उसे सीता का समाचार लेने भेजा था। वह बहुत जल्द जल्द चलता है। यह उसमें गुण है। हम में उसे वीर कोई नहीं समझता। तुम उस को वीर कहते हो! वह सुग्रीव की आज्ञा के बिना लंका दहन कर गया। मन में लज्जित है। अब तक उनके सामने नहीं आया। हमारे यहां ऐसों की गिनती वीरों में नहीं है।"

"यह तुम सच कहते हो कि राम की सेना में तुम्हारा सामना करने वाला कोई नहीं है। राम दल वीरों का समुदाय है। वह तुमको समझते क्या हैं! तुम्हारे साथ लड़ने में उनकी वीरता का अपमान होता है। लड़ाई भिड़ाई तो उसी के साथ अच्छी होती है जो बराबर का बलवान हो। सिंह कब गीदड़ से लड़ता है! हाथी ने खरहे का कब सामना किया है! तुम से कोई भी लड़ना न चाहेगा। हां! क्षत्री धर्म कठिन है। इस

दृष्टि से राम सेना तुम्हारे संमुख आ जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।"

रावण—"क्यों न हो! तू सच्चा बन्दर है। अपने स्वामी के हितार्थ बन्दर नाचता, कूदता, साग भरता है। तू भी अपने जातीय स्वभाव को प्रकट कर रहा है। यह बन्दर में बड़ा गुण है कि वह स्वामिभक्त होता है। मैं गुणग्राही हूँ तेरे इस गुण को बहुत पसंद करता हूँ।"

अँगद—"क्या कहना है तुम्हारी गुणग्राहकता का! हनूमान ने मुझ से कहा था कि रावण बड़ा गुणग्राही है। नगर जला। भाई, बेटे मारे गए। बहिन नकटी हो गई। फिर भी उसके सिर में जूँ तक नहीं रेंगी और न उसे क्रोध आया। इसी गुण को सुनकर मुझे तुम्हारे पास आने का साहस हुआ। जो हनूमान ने कहा था वह सब सचमुच मैंने अपनी आंखों से देख लिया। न तुम में लाज है, न रोष है, न मान, अपमान का विचार है। लज्जा होती तो और ही दशा होती।"

रावण—"ऐसी ही बुद्धि थी तब तो तूने अपने बाप को मरवा कर खा डाला।"

अङ्गद—"बाप को खाया सो खाया, उसने तो अपनी करनी का फल पाया। सुरलोक को गया। मुझे संदेह नहीं रहा कि तुम्हारे भी खाने की बारी आरही है। मैं अभी तुम को खागया होता, मगर क्या करूँ! मांसाहारी नहीं हूं और तुम्हारे जैसे अधम पापी के अपवित्र मांस को क्या मुँह लगाऊँ! कुत्ते, गिद्ध और गीदड़ों को तुम्हारा मांस खिलाया जायगा। पहिले तुम यह तो बताओ कि तुम कौन से रावण हो? मैंने कई रावणों का वृतान्त सुन रक्खा है। एक रावण बलि के जीतने को पाताल गया था। लड़कों ने उसे विचित्र जीव समझकर बांध लिया और मारने कूटने लगे। बलि को दया आई छुड़ा

छुड़ा दिया। वह भाग आया। फिर पाताल नहीं गया। दूसरा रावण सहस्राबाहु के साथ लड़ने गया। वहां भी वह रस्सियों से जकड़ा गया। पुलस्त्य ऋषि ने जाकर उसे छुड़ाया। तीसरे रावण को मेरे बाप बालि ने छः महीने तक अपनी बगल में दबा रक्खा था। बताओ तो सही! इनमें से तुम कौन रावण हो ?"

रावण—"तूने अपमान युक्त बचन कहे हैं। मैं वह रावण हूँ जिसके घर का पानी वरुण भरता है। इन्द्र दीपक जलाता है और सेवा में लगा रहता है। दिग्गज और दिगपाल पहिरा देते हैं। जगत के राजे महाराजे मेरा नाम सुनकर काँपते हैं। मैंने कई बार अपने सिर काट काट कर शिव को प्रसन्न किया। कैलाश पर्वत को अपने कन्धे पर रखकर नाचता रहा। मैं जब पग रख कर चलता हूँ, पृथ्वी डगमगाती है और इसकी दशा समुद्र की छोटी डेंगी के समान बन जाती है। मेरे तेज बल को कौन नहीं जानता! तू इस रावण को छोटा और मनुष्य को बड़ा बताता है। जान पड़ता है तू अज्ञानी और बावला है।"

अङ्गद—"अज्ञानी का लक्षण यह है कि वह आत्मा को नहीं जानता। राम जगत के आत्मा हैं। इनके बाण की महिमा अपार है। सहस्र बाहु की सहस्र बाहुओं को इनका एक बाण छेद सकता है। जिस परसुराम ने अनेक बार पृथ्वी के राजाओं का नाश किया और जिसके सामने कोई योधा वीर नहीं आ सकता था, राम ने उनके गर्व को तोड़ दिया। यह राम मनुष्य कैसे हो सकते हैं! गरुड़ पक्षी नहीं है। गङ्गा साधारण जल की नदी नहीं है। कल्पतरु वृक्ष नहीं है। काम की प्रबल धार धनुषबाण नहीं है। यह केवल अलंकृत भाषा है। बैकुंठ कोई लोक या स्थान या दिशा नहीं है। इसी प्रकार राम मनुष्य नहीं है। इसी को देख। उनका एक छोटा बंदर लङ्का में आया और

सारे नगर को जलाकर धूल और राख बना गया। तुम्हारे लड़कों तक को मार गया। उस समय तुम्हारी प्रभुताई कहाँ चली गई थी!

इस अपवाद को छोड़ कर राम को भजो। पृथ्वी, आकाश और अंतरिक्ष की कोई शक्ति राम के द्रोही की रक्षा नहीं कर सकती। तुम मेरे सामने घमंड की बातें कर रहे हो। जब राम के सनसनाते हुये बाण चलेंगे, गेंद के समान राक्षसों के सिर उछलते हुये बन्दरों के पांव में गिरेंगे। चील और गिद्ध आकाश में मंडलाते हुये तुम्हारे हाथ पाँव को पंजों में दबाये हुये उड़ेंगे। गीदड़, भेड़िये लोमड़ी तुम्हारी मुर्दा लाशों को काट काट कर खायेंगे। उस दिन का स्मरण करो। राम से बैर त्यागो। उनकी भक्ति में चित्त लगाओ। इसी में तुम्हारा कल्याण होगा।"

रावण—"तू नर को नारायण मानकर उसकी इतनी प्रशंसा कर रहा है। मुझे नहीं देखता कि मैं क्या हूँ! मेरा भाई कुंभकरण लाखों में एक वीर है। मेघनाद, मेरा बेटा, जगत् में अद्वितीय है। राम ने समुद्र पर पुल बाँधा और तुम जैसे डालियों पर उछलने कूदने वाले पशुओं को अपने जाल में फँसा लिया। इसी को तू बड़ी प्रभुताई मान रहा है। मैंने मनुष्य, देवता और चराचर संसार में एक को भी नहीं छोड़ा, जो मेरे आधीन न हों। सब को मैंने लोहे के चने चबवा दिए। सब मेरा लोहा मान गए।"

बन्दरों को, रीछों को आकर नचाया राम ने।
खेल बाजीगर का क्या अद्भुत दिखाया राम ने॥
नाचते हैं कूदते हैं फांदते हैं हर घड़ी।
मृत्यु इनके शीश पर मण्डलाती है रह कर खड़ी॥

नाच बन्दर का दिखाने तूभी अङ्गद आ गया।
मुट्ठी दो मुट्ठी चने बदले में इसके पा गया॥

"यह मदारी का करतब है। आंखें खोलकर देख। उधर दो दुबले पतले तपस्वी हैं और इधर मेरे साथ लाखों करोड़ों योधा और वीर संग्राम में अपनी वीरता का दृश्य दिखाने को तत्पर हैं। कहां दो और कहाँ लाख और करोड़! यह सुयोग्य होते तो घर से बाहर क्यों निकाले जाते! कोई न कोई दोष होगा तभी तो वन और पर्वतों में मारे मारे फिर रहे हैं। अच्छा हुआ यह लङ्का में आए। मैं भी इन बन्दर रीछ नचाने वालों का कौतुक देखूँगा। इनमें भुज बल होता तो तुझ जैसे दूत को मेरे पास क्यों भेजा होता। वह लड़ाके होते तो बेधड़क लङ्का पर चढ़ाई करते। क्या यह निर्बलता का लक्षण नहीं है! दूत भी मेरी सभा में भेजा तो किसको? बन्दर को। उन्हें बन्दर को भेजते हुए लाज भी नहीं आई।"

अंगद—'संसार में केवल तुम ही एक लज्जावान रह गये हो! बार २ अपने मुँह से अपनी प्रशंसा कर रहे हो। तुम्हारे जैसा निर्लज्ज तो मेरी समझ में कोई पशु पक्षी भी नहीं है। गीदड़ बनकर गये और पराई स्त्री को चुरा लाये। तुम में बल और पराक्रम होता तो राम लक्ष्मण का सामना करते। चोर तो चोर ही होता है। इसमें लाज और वीरता का क्या काम! क्या करूँ राम की आज्ञा नहीं है नहीं तो तुम्हारा सिर तोड़ कर मरोड़ देता। सीता को ले जाता और तुम देखते कि बंदर कैसा नाचता और नचाता है।"

रावण—"बस बस! अब बहुत बातें न बना। मैंने तेरी सुनली। अब बोलेगा तो तलवार के घाट उतार दिया जायगा।"

अंगद—"तुम गीदड़ हो! मुझे गीदड़ भवकी दिखा रहे

हो। मैं ऐसे निकम्मे, कामी, क्रोधी, और निर्लज्ज के भय से नहीं डरता।"

राम ने अंगद को क्रोध की रोक थाम का उपदेश दिया था। रावण ने राम की निंदा की। उसका सहन करना इनके लिये उस समय कठिन हो गया।

दोनों हाथ पृथ्वी पर पटक दिये। भूकम्प आ गया। पृथ्वी डगमगा उठी। राक्षस डरे कि कहीं उन पर छत न गिर पड़े। रावण भी सिंहासन से नीचे आगया। गिरा नहीं, सँभला रहा लेकिन उसका मुकुट गिर पड़ा। अंगद ने उसे उठाया और अपनी सुरत की धार के सहारे राम की कुटी की ओर फेंका। वह चमकता और सनसनाता हुआ आरहा था। बँदर डरे कि कहीं रावण ने उन पर बिजली का बज्र प्रहार तो करना नहीं चाहा। राम ने उन्हें ढाडस देकर समझाया। "यह बज्र नहीं है।" अंगद की भेजी हुई चमकीली वस्तु है! हनूमान लपके उसे हाथ से पकड़ कर राम के चरणों पर डाल दिया। वह रावण का मुकट निकला। सबको संतोष हो गया और वह निडर हो गये।

नवाँ समुल्लास

अंगद का पाँव रोपना

अंगद में क्रोध का वेग नहीं था। वह अपने आपे में थे। रावण को क्रोध आगया। राक्षसों को आज्ञा दी-"! दौड़ो बंदर और रीछों को पकड़ पकड़ कर खा जाओ। तपस्वी बालकों को जीता पकड़ लाओ।" यह उठे और अंगद पर झपटने ही को थे कि अंगद ने रावण से कहा-"त्रिया चोर, कामी, कुमार्गी!

तुझे लज्जा नहीं है ! लज्जा को धोकर पी गया। यह राक्षस क्या राम को पकड़ेंगे ! तू नहीं देखता, मैं अकेला हूँ और तू स्वयं मेरा सामना करने में असमर्थ है और इन कायर निशरों की सहायता चाहता है ! बालि के मारने वाले राम नर हैं ! अरे अंधे तेरे हिये की आंखें फूट गई हैं। तुझमें बल कहां रहा ! तेरे मन के भीतर द्वेष ईर्षा की अग्नि प्रचण्ड है। तेरा लोहू जल रहा है। हड्डी सुलग रही है। चर्बी आहुति बन कर उस आग को भड़का रही है। तुझे सन्निपात चढ़ा हुआ है। तू क्या राम के साथ लड़ सकता है ! जी में आता है कि अभी तेरे सिर की खोपड़ी को टुकड़े टुकड़े करके समुद्र में डूबो दूँ। एक तो राम की आज्ञा नहीं है, दूसरे तू राजा भी है। इसलिये इस समय जीता छोड़ रहा हूँ। राम के बैर का फल तू आगे चल कर देखेगा। मैं तेरी लंका को क्या समझता हूं ! वह तो मेरे हाथ के लिये खड़े हुये गूलर के सदृश है। जब चाहूं उसे मसल कर मिट्टी में मिला दूं। इस लंका में तू वैसा ही बसा हुआ है जैसे गूलर में मच्छर और पिस्सू बसते हैं। बन्दर इस फल को बड़े चाव से खा जाते हैं। उसके जीव जन्तु मुँह के भीतर पिस पिसा कर रह जाते हैं। वह किसी बन्दर का क्या कर सकते हैं।"

रावण हँसा-"तपस्वियों की संगत तुझे क्या मिली ! तूने झूंठ बोलने का अभ्यास कर लिया ! गाल फुलाना और मुंह बनाना बन्दर ही जानते है। यह औरों को नहीं आया। वह युक्ति तो बालि को भी न सूझी होगी।"

अंगद-"तू मुझे झूंठा कहता है ! जो जी में आये कहले। मैं राम का सेवक हूं। उनकी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता। नहीं तो अभी तेरी जिह्वा पकड़ कर बाहर खींच लेता और झूंठा कहने का स्वाद चखाता। अब भी मैं इतना

तो कर सकता हूं कि तेरी सभा में मैं अपना पांव रोपता हूं। तुम में से एक बली निश्चर भी मेरे पांव को उठा दे तो मैं सीता को हार जाऊँगा और राम को लंका से लौटा ले जाऊँगा।" रावण! "और कुछ नहीं हो सकता तो इतना ही कर दिखाओ। तुम बड़े सच्चे वीर हो। सच्चाई दिखाने का अवसर मिल रहा है। देखूं तुममें कहां तक सचाई है और मुझमें कहां तक झुंटाई है।

'यह कह कर अंगद भरी सभा में खड़े हो गये। और राम का बल लेकर पांव को पृथ्वी पर जमाया। उनके शरीर का सारा बल पाँव में उत्तर आया। और अंगद ने अपने सर्वाङ्ग का बल पाँव को दे दिया, जैसे ब्रह्म का सारा बल उसके अवतार में उतर आता है। क्रोध इस प्रकार शरीर के सारे अंगों के बल को एक अँग में भर देता है।

मेघनाद रावण का पुत्र बड़ा योद्धा और सब में शूरवीर था। रावण की आँख देखकर उठा सारा बल लगा दिया। हाथों से अंगद के पाँव उठाने लगा। पांव तो भूमि में जमाकर ऐसा बैठा था कि चिमट गया था। कितना बल लगाया, दांतों तले पसीना आया। पांव हिलता नहींथा! उसके हिलाने से पाँव वैसे हिल न सका जैसे कामी पुरुष के बचन को सुन कर किसी पतिव्रता स्त्री का मन चलायमान नहीं होता।

वह लज्जित हुआ और सिर नीचा करके सभा में बैठ गया। दूसरे वीर उठे। मल्ल युद्ध करने वाले आये। बल लगाया, दाव पेच खेला। उठाना तो एक तरफ रहा, सभा के लिये उसका हिलाना महा कठिन होगया और सभा के सब श्रीहत, तेजहत, और बल हत होकर चुप चाप बैठ गये। फिर किसी को अंगद के पांव उठाने का साहस नहीं हुआ।

अङ्गद ने कहा—"देख लिया मेरे बल को और जिसका

जी चाहे आकर परीक्षा करले।"

इस ललकारने पर फिर कोई राक्षस उनके समीप नहीं आया। रावण खिसियाना होगया—"मैंने कैलाश पर्वत को सहज में अपने सर पर उठा लिया था। इस बन्दर का पाँव पहाड़ तो नहीं है मैं उसे उठाये देता हूँ।"

यह कहकर रावण सिंहासन के नीचे उतरा, अङ्गद के पांव की ओर झुका, पाँव को हाथ लगाने ही को था कि अङ्गद ने ललकारा—"रावण! तू बड़ा नीतिज्ञ कहलाता है। सेवक के पांवों को क्या हाथ लगाता है। तू राजा है। चल राम के चरण कमल में अपने सिर को झुका, उनका पाँव पकड़, मेरे चरण के छूने से तू अपनी भलाई की आशा रखता है! मैं तेरा निस्तार नहीं कर सकता। राम महाप्रभु हैं वह जी चाहें सो कर सकते हैं।

राम के चरणों में गिर, अपराध कर देंगे क्षमा।
राम करुणा सिन्ध हैं, उनमें क्षमा और है दया॥
दीन हितकारी हैं उपकारी हैं, और करुणा अयन।
शान्ति निश्रान्ति सुख, चैन आनन्द के सदन॥
तू विरोधी होके उनका, भ्रष्ट होगा राक्षस।
बैर करके राम से तू, नष्ट होगा राक्षस॥

रावण बुद्धिहीन, बलहीन, तेजहीन और श्रीहीन हो गया। पाँव को हाथ लगाने से रुका। लज्जित होकर, सिर झुकाये हुये सिंहासन पर आ बैठा।

देख रावन! तू महा निर्बुद्धि अज्ञानी बना।
राम को नर जानकर अजान अभिमानी बना॥
घास का तिनका उठाया वज्र सम वह हो गया।
भय जैन्ता को हुआ आपे से अपने खो गया॥
इन्द्र के शिव विष्नु के ब्रह्मा के शरणागत गया।
सबने की इसकी अनादर सब की दृष्टी से गिरा॥

राम की जब ली सरन तब राम ने तारा उसे।
आंख छोड़ी एक उसकी ऐसा निस्तारा उसे॥
चल सरन में राम के श्रीराम करुणा धाम हैं।
राम ही हैं सदगती कल्याण और विश्राम हैं॥

जहां तक सम्भव था मैंने तुझे समझा दिया। काल ने तेरी बुद्धि हरली। तू नहीं जाता न सही, मैं अब जाता हूँ। मेरा काम बस इतना ही था।

यह कहकर अङ्गद उठे। राम के समीप जाकर उनके पांवों पर पड़े।

रावण उस समय घबरा गया। उससे कुछ न हो सका। सीधा वहां से उठकर महल में चला गया और राक्षस अङ्गद के बल और पराक्रम को देखकर सहम गये।

दसवां समुल्लास

मन्दोदरी और रावण

रावण महल में आया। मन्दोदरी ने अङ्गद के आने का समाचार सुन लिया था।

उसने कहा—"अब आपने देख लिया कि राम के साथियों में कितना बल है?"

रावण—"देखा जायगा।"

मन्दोदरी—"क्या आपकी आंखें अब तक नहीं देख सकीं! कितनी बार देखा और अब भी कहते हो देखा जायगा।"

रावण—"तू क्या जानती है, मैंने कितनी बार देखा है!"

मन्दोदरी—"मैं सब कुछ जानती बूझती हूं। कभी मैं अपनी आंख से देखती हूँ और कभी आपकी आंख से। जब राम का

बल एक तिनके में आ जाता है तो बड़े बड़े योधा उसका सामना नहीं कर सकते। कहिये! तो मैं गिना चलूँ कि आपने कितनी बार राम का बल देखा है।"

रावण--"बहुत अच्छा ऐसा ही सही।"

मन्दोदरी--"पहली बार विश्वामित्र के यज्ञ में ताड़का के वध और मारीच के परास्त करने में आपको अपना बल दिखाया। दूसरी बार जब आप सीय स्वयंवर में गए थे और राम ने शिव का धनुष तोड़ा परसुराम को नीचा दिखाया। तब भी आपने उनका बल देखा। तीसरी बार राम ने आपकी बहिन सूर्पणखां की नाक काटी। तब उनका बल आपने देखा। चौथी बार खरदूषण और त्रिसरा के वध में उनकी वीरता देखी। बिराध, कुबन्ध आदि के सम्बन्ध में उनके बल के दृश्य कई बार देखने में आए होंगे, जिनका मैं यहां वर्णन नहीं करती। पाँचवीं बार उनका बल सुनसान बन में सीता के हरलाने में देखा। आप जानते थे कि राम लक्ष्मण का सामना आपसे नहीं हो सकता था। भेष बदल कर गए। उस अबला को धोका दिया। छटवीं बार आपने उनका बल लक्ष्मण की रेखा शक्ति में देखा, जिसे आप लांघ नहीं सकते थे। सातवीं बार जब मारीच राम बाण से मारा गया, आपने उनका बल देख लिया। आठवीं बार बालि बध के समाचार सुनने में उनका बल देखा जिसने छः महीने तक आपको अपने बग़ल में दबा रक्खा था। नवीं बार हनुमान ने आकर आपके अनुचरों का बध किया। अक्षय-कुमार प्यारा बेटा था, उसे मार दिया। दसवीं बार लंका को भस्म कर दिया और आपसे कुछ करते धरते नहीं बना। ग्यारहवीं बार हनूमान ने विभीषण आदि को अपना अनुयाई बना लिया। राम के पास चले गए। आपके बल के एक अङ्ग को अंग भंग कर दिया। राम ने उनका राजतिलक कर दिया। इस युक्ति से

आपका राज उसी दिन छीना गया, जिस दिन विभीषण उनके साथी बने। बन्दरों ने कितने राक्षसों को मारा! आपने क्या कर लिया? बारहवीं बार उन्होंने महासागर पर पुल बाँधा। आपने इस बल को भी देखा। तेरहवीं बार अङ्गद आया। रास्ते में आपके लड़के का बध किया। सभा में आकर आपके मुँह पर कटी जली और अपमान जनक बातें कहीं। आपसे इतना भी तो न होसका कि उसे दुर्वचन कहने से रोक सकते। चौदहवीं बार आपने देखा कि नाच रंग के समय राम का फुदकता हुआ बाण आया और आपके मुकुट को उड़ा ले गया। पन्द्रहवीं बार अंगद ने अपना पाँव पृथ्वी पर रोक कर कहा—'मेरा पांव पृथ्वी से हटा दो तो मैं सीता को हार जाऊँगा और राम को लौटा ले जाऊँगा।' क्या आप में से किसी में शक्ति थी कि उसका पांव टाल सके। मेघनाद तक से कुछ न होसका।" सोलहवीं बार.....मन्दोदरी अभी कुछ और कहने को थी कि रावण ने बीच में इसकी बात काट दी। "तूने मेरे शत्रु के बल की बड़ी प्रशंसा की। वह कंगाल तपस्वी न होता तो मुझे बहुमूल्य रत्न दान में देता। क्या तू मेरा पराक्रम नहीं जानती है कि मैंने क्या क्या किया है!"

मन्दोदरी—"मैं उसे भी जानती हूं। जब तक राम के विरोधी नहीं थे। विश्व की सारी शक्तियों को जीतते और पराजय करते रहते थे। वह आपका बल नहीं था। वह राम का बल था। आपको केवल झूठा और मिथ्या अभिमान हो रहा है। राम ही का बल पाकर आपने सारा काम किया। अब वह बल आपके अज्ञान से धीरे धीरे छीना जा रहा है और आप निर्बल होते जा रहे हैं।"

राम ही का बल है व्यापक सब जगह संसार में।
उसको देखो जगत् के व्यौहार और व्यौपार में॥
राम नारायण हैं, नर के रूप में प्रकट हुए।
वह यहाँ है वह वहां हैं, सृष्टि के विस्तार में॥
सिन्धु के जल में वही, पृथ्वी थल में हैं वही।
राम ही का बल छया है, जीव के उपकार में॥
राम के चरणों में जाओ, राम की भक्ति करो।
योगी युक्ती सिद्धि शक्ती, उनके है सत्कार में॥
आंख को अब ही से खोलो, अरु तजो मद मोह काम।
सदगती लो शान्ति लो राम के आधार में॥

रावण हँसा—"तूने भी विभीषण का मार्ग धारण कर लिया। कहीं हनूमान तुझे भी तो नहीं बहका गये?"

मन्दोदरी-"जो कुछ तुमने किया बुरा किया। अब मेरा अपमान न करो। मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ। हाय पति! तुम्हारी नीति का ज्ञान किधर चला गया! तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। काल ने सुमति छीन ली। समय प्रतिकूल होगया।"

यह कहकर वह रोने लगी। रावण ने उसे सन्तोष जनक बातें तक नही कहीं। पौ फटते ही वह महल से निकल कर राजसभा में चला गया।

ग्यारहवाँ समुल्लास

राम की सभा

अँगद के लौटने पर राम की सभा बैठी। "क्या हुआ? रावण ने क्या कहा? और तुम्हारे जाने का परिणाम क्या हुआ?"

अँगद ने राम के चरण-कमल में शीश झुकाकर कहा---
"प्रभो ! आपकी माया महा प्रबल है। यह रावण तो क्या है, सारे का सारा ब्रह्माण्ड उसकी उँगलियों पर नाच रहा है। नचाने वाले आप और जीव-जन्तु सब नाचने वाले हैं।"

गगन मध्य में हिंडोला गढ़ा है।
कोई क्या कहे वह गढ़ा या खड़ा है॥
न कोमल न मध्यम तीव्र और कड़ा है।
हिंडोले में यह विश्व जुड़ कर जड़ा है॥
जिन्हें देखिये चढ़ के वह झूलते हैं।
कभी सूखे मन के कभी फूलते हैं॥
हिंडोले की जड़ में अड़े जाके ब्रह्मा।
हिंडोले के धड़ में है विष्णु की महिमा॥
हिंडोले की चोटी पे शिव जाके झूमा।
हिंडोले के पत्तों में सब देवी देवा॥
यह सब झूलते झूमते रात दिन हैं।
उसी में यह सब घूमते रात दिन हैं॥
ध्रुव का लड़का आदित्य अटका उसी में।
किसी को मिला पूरा भटका उसी में॥
किसी को धराधर के पटका उसी में।
सभी के है बन्धन का भटका उसी में॥
प्रबल माया ने आके सब को फँसाया।
फँसा जो कोई उसके फन्दे में आया॥
क्रोधी, विकारी, अहंकारी रावण।
नहीं सुनता वह बात होकर अपावन॥
उसे रात दिन है भ्रम के गुनावन।
न मानेगा है व्यर्थ सारा नसावन॥

अहंकार के मद में है चूर निश्चर।
उसे राह पर लाना है दुस्तर ॥
नहीं राम को राम वह मानता है।
उन्हें नर समझता है पहचानता है ॥
जो वह जानता है वही जानता है।
भरी चोटी एड़ी में अज्ञानता है ॥
महामाया लङ्का में मण्डला रही है।
घटा टोप अविद्या यहाँ छा रही है ॥

राम ने अङ्गद की सारी वार्ता सुनी। प्रसन्न होकर उसकी पीठ ठोकी। "तुमने अपना काम किया। बस, इतना ही तुम्हारा कर्तव्य था। समझाना बुझाना हो चुका। अब यह बताओ क्या करना चाहिये ?"

हनूमान बोले -- "लंका पर चढ़ाई हो।"

सुग्रीव ने कहा—"सब से पहिले बन्दर हल्ला करें। राक्षसों की साँस उनकी नाक में आजाये।"

जामवन्त—"रावण नीति विरुद्ध काम कर रहा है। अङ्गद ने उसका जो मुकुट आपके पास फेंका था उसमें चार बहुमूल्य हीरे जड़े हुये हैं। वह साम, दाम, दण्ड, भेद हैं। वह रावण से छिनकर आपके चरणों में आ पड़े। अब उसे चारों नीतियों से निर्बल करके पराजय कीजिए। रावण आपका सामना न कर सकेगा और सामने आता है तो मारा जायगा"

राम ने कहा—"एवमस्तु ! रावण बन्दरों को तुच्छ समझता है। उनसे घृणा करता है। आज बन्दर ही जाकर उसके दांत खट्टे करें। पीछे लक्ष्मण की बारी आयगी और वह नर के रूप में उसके छक्के छुड़ायेंगे।"

खिलाओ उसे बुद्धि के खेल जाकर।
न सहमो न ठिठको मेरे बल को पाकर ॥

करो ऊधम और रूँध दो उसकी नगरी।
मिले धूल मिट्टी में बल बुद्धि सगरी॥
अटा पर चढ़ो, बादलों की घटा बन।
लहू बरसे निश्चर का रिमझिम अपावन॥
इधर सर उधर उनके धड़ नाचते हों।
पशु पक्षी आकर उन्हें चाटते हों॥
उड़ें सर गगन में तुम्हारी हों गेंदें।
गिरें धड़ धड़ाकों से कपि बान बेधें॥
न बचने पाए कोई ऐसे लड़ो तुम।
बनो बिजली लंका में जाकर पड़ो तुम॥
जलाओ जलाकर उसे राख कर दो।
निशाचर की हड्डी को तुम राख करदो॥
न लंका रहे और न लंका के बासी।
रहे तो रहे उसमें छाई उदासी॥

द्वितीय भाग

पहिला समुल्लास

युद्ध आरम्भ

आज्ञा पाने की देर थी। बन्दर और रीछ चढ़ दौड़े।
इधर दौड़े उधर कूदे, इधर फाँदे उधर उछले।
कहीं दाँतें दिखा और कहीं जाकर के वह मचले॥
किसी को काट खाया और किसी की नाक को नोंचा।
किसी के कान कतरे और किसी का पकड़ा जा पहुँचा॥
किसी को पृथ्वी पर हाथ के बल से दिया झटका।

किसी की थाम कर गर्दन मरोड़ी भूमि पर पटका॥
जलाया घर किसी का और किसी की छत को जा ढाया।
मचा उत्पात लंका में, किया जो उनके मन भाया॥
गरजते किलकिलाते धूम रह रह कर मचाते थे।
निराला नाच था बन्दर का निश्चर जो नचाते थे॥
मचा ऊधम हुई चिलपों प्रलय का काल का दिन था।
दुहाई लंकपति की दी सुना और इन्द्रजित धाया॥

हनूमान में क्रोध विशेष था। आव देखा न ताव! लंका में पिल पड़े। अँगद ने सुना कि वह अकेले गए हैं, सहायता के निमित्त वहां जा पहुंचे। दोनों ने मन्दिरों के कलश उखाड़ कर राक्षसों को मारना आरम्भ किया। जो जो उनके मुखिया थे, पकड़ पकड़ कर राम की तरफ फेंका। ये बेबस थे। सन सनाते हुए बाण के समान राम के चरणों में गिरे और राम ने उन्हें अपने धाम को भेज दिया।

जिसने देखा राम को मुक्ती मिली।
जिसने पद परसा उसे मुक्ती मिली॥
राम दाता राम दानी थे बड़े।
योग बल से राम ज्ञानी थे बड़े॥
हाथ से जिसको छुआ वह तर गया।
नीचे भूमि छोड़ कर ऊपर गया॥
देह त्यागी जा बसा सुरधाम में।
सुख मिला आनन्द मिला विश्राम में।
जो मरा वह राम का धामी बना।
कामना तजकर वह सत कामी बना॥

दोनों ने रथ बहली और बाहनों की तोड़ फोड़ की। पहिए उखेड़े। धुरे हाथ में लिए। राक्षस बचाने आए। उन्हीं धुरों से उन पर बेभाव की मार पड़ी। हड्डी पसली टूटी। ऐसे चिलाए

कि प्राण त्याग दिए। दोनों ने मुरदों की लाशों को समुद्र में फेंका। मगरमच्छ, मगर, कछुए भूके थे। उन्हें नौंच नौंच कर खागए।

रावण क्या जानता था कि आज ही नगर में यह उत्पात मचेगा। वह नर, बन्दर और रीछों को क्या समझता था! उसकी दृष्टि में यह निश्चरों का आहार थे। उनका मार लेना कितनी बड़ी बात थी, लेकिन राम की लीला प्रबल है। वह चाहें तो एक तिनके से विश्व का नाश करा सकते हैं। जिसे चाहें बल और सामर्थ दें। जिसे चाहें निर्बल और असमर्थ बनावें। यह जगत उनकी भ्रकुटी के अदल बदल से बनता और बिगड़ता रहता है। यह खेल और लीला मात्र है। जो इसे समझ गया वह निर्द्वन्द हो गया। जिसने नहीं समझा वह माया जाल की उलझन में फँसा रहा।

राम किसी के विरोधी और द्रोही नहीं हैं। जब प्राणी अपने अज्ञान और भ्रम में फँस जाता है उस समय राम की दया उसे छुड़ाने आती है। दुख और सुख जीवों के कर्मों का फल है। जो जैसा करता है वह वैसा फल पाता है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जो जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। यह सृष्टि कर्म का नियम है। यह अनादि काल से प्रवाह रूप में उमड़ता लहराता और मण्डलकार होता रहता है। अन्त में जब और कोई उपाय नहीं रहता तो राम ही सगुन रूप में प्रगट होकर उनका निस्तार करते हैं और खेल-खेल में उनको सुधार देते हैं।

राम की मार में है प्यार का गुन।
राम के युद्ध में है सुधार का गुन॥
मित्र और शत्रु के वह रक्षक हैं।
कभी भक्षक कभी वह तक्षक है॥

आये तारने लंका में निश्चर।
कौन उनसे हुआ कोई बढ़कर॥
मौज है मौज में है मौज का गुन।
मौज में गुण सगुण है और निर्गुण॥

रात्रि आगई। बन्दर दिनचर हैं। रात में काम नहीं करते। रात में केवल निश्चर ही काम करते हैं। लड़ भिड़ और रगड़, झगड़ कर के वह राम के निकट गये। लड़ाई का समाचार पहुँचाया। चरण कमल में शीश झुकाया। खाया पीया और सो रहे।

पहिले दिन की लड़ाई में दिनचरों की कोई हानि नहीं हुई। हां, निश्चरों में बड़ी खलबली पड़ गई। उनके कान खड़े हुए।

दूसरा समुल्लास

रावण की सभा

रावण ने रात्रिकाल में अपने मन्त्रीगणों को बुलाया। 'आज के दिन दिनचरों ने निश्चरों की आधी सेना को मार गिराया। अब केवल आधी रह गई। कहो अब क्या करना चाहिये ?"

माल्यवन्त उसका सबसे बूढ़ा, जानकार, समझ बूझ वाला मंत्री था। उसने कहा "अन्नदाता ! मैं सच्ची न्याय और नीति की बात कहता हूं। मुझे लप्पो शप्पो करना नहीं आता और न मैं हाँ में हां मिलाता हूँ। मेरी समझ में आप सीता को दे दीजिये। राम से क्षमा माँगिये। वह दया सागर हैं। आपको

क्षमा कर देंगे। राम नर नहीं हैं नारायण हैं। सतयुग में हिरणाकुश और हिरण्यकश्यप को मारा। त्रेता में बावन के रूप में बलि को छला। परशराम के रूप में सहस्राबाहु का अन्त किया। इस समय वही नारायण के रूप में प्रगट हुए हैं। उनके साथ बैर भाव रखना उचित नहीं है।"

रावण ने कहा—"तू समझ बूझ कर बात नहीं करता। न पेट में आंत है, न मुँह में दांत! पोपला बन्दर बन गया है और बन्दरों का पक्ष ले रहा है। बुड्ढा है नहीं तो बिना मारे हुए न रहता। जा, और जगह अपना मुँह काला कर। मुझे तेरे मन्त्र की आवश्यकता नहीं है।"

माल्यवन्त डरा कि यह कहीं मार न दे। बूढ़े को जान बहुत प्यारी होती है। वह उठ कर चला गया।

मेघनाद बोला—"कुछ भय नहीं, चिंता नहीं! आज रात्रि का समय है। कल के दिन देखियेगा। मैं क्या करता हूँ। बंदरों ने आज नगर में बहुत उत्पात मचाया। मैं गया और सायंकाल होते ही वह भाग गये। दिनचर रात के समय निशचरों का सामना नहीं करते। किसी प्रकार रात्रि का अन्त हो। प्रातःकाल मैं उनमें से एक एक को अस्त्र शस्त्र के घाट उतार दूँगा।"

रावण को ढाढ़स बंधी। रात सोच विचार में कटी। और सूरज के निकलते ही मेघनाद हथियारों से सजा सजाया संग्राम भूमि में आया।

तीसरा समुल्लास

दूसरे दिन का युद्ध-लक्ष्मण के शक्ति बाण का लगना।

सबेरा हुआ। बन्दरों को कहाँ चैन! उठते ही लंका पर चढ़ दौड़े। पहाड़, टीले, चट्टान जो जिसके हाथ लगा उठा

लाये और लगे नगर के गली कूँचों पर फेंकने। जिस पर चट्टान गिरे पिस कर मर गया, जिस पर टीले गिरे कुचल गया और जहां पहाड़ का प्रहार हुआ वहां की दुर्गति का क्या कहना!

दब कर मरे हजारों सहस्रों कुचल गये।
कितनों के प्राण चोट को सहकर निकल गये॥
गलियां उजड़ गईं व मुहल्ले उजड़ गये।
गाछ और वृक्ष कितने गिरे जड़ से उखड़ गये॥
आपत्ति और विपत का महा सामना हुआ।
रीछ और बन्दरों का कठिन सामना हुआ॥

मेघनाद सचमुच महा योद्धा बलवान था। वह संग्राम भूमि में आकर ललकारने लगा। 'राम लक्ष्मण तपस्वी राजकुमार कहां हैं! अंगद और सुग्रीव किधर गये! नल नील को क्या होगया जो सामने नहीं आते! जामवन्त और हनुमान आज मेरे सम्मुख आयें और मैं उन्हें युद्ध का कौतुक दिखाऊँ।"

ललकारते हुये वह बाण चलाने लगा। बाण बरसने लगे। सावन भाँदों की झड़ी लग गई। बंदर और रीछ बहुतायत से मरे। उनमें भगदड़ पड़ गई। इधर भागे उधर भागे। मेघनाद इनके पीछे पड़े। वह धड़ाधड़ गिरने और मरने लगे। छटी का दूध याद आ गया। लड़ाई भिड़ाई का ध्यान जाता रहा। जान के लाले पड़ गये।

हनूमान ने यह दशा देखी। क्रुद्ध हुए। हाथों से पहाड़ उठाया। मेघनाद आकाश में जाकर अन्तरध्यान होगया। रथ चूर-चूर हो गया और सारथी घोड़ों के समेत दबकर कुचल गये। फिर मेघनाद हनूमान के सामने नहीं आया। वह जानता था कि यह बजरंग बली है और वहां जा पहुंचा जहाँ राम और लक्ष्मण थे वहां पहुंच कर यह अस्त्रों और शस्त्रों की वर्षा करने लगा। राम ने एक बाण मारा और उसने मेघनाद के सारे

बाणों को काट गिराया।

मेघनाद खिसियाना हो गया और फिर उसने मायावी लड़ाई आरम्भ की।

आकाश में अँगारे बरसने लगे! पृथ्वी पर पानी के सोत बन गये। और उनसे पानी की धारें बाढ़ के रूप में वह निकलीं। आया था अकेला और अपने मानसिक बल और शक्ति से अनेक पिशाच(पिश=मांस और आस=खाने वाला) और पिशाचिनियां प्रगट करलीं जो भयानक और घनघोर शब्द करने लगे। मांस के लोथड़े लहू से लथपत हुए हड्डी, चमड़े, बाल मुण्ड के मुण्ड आकाश मंडल से गिरने लगे। मार-मार, धाड़-धाड़ की ध्वनि कानों में आने लगी। फिर आकाश से धूल और मिट्टी रेत के रूप में बरसने लगी। ऐसा अँधेरा छा गया कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। रीछ और बन्दर डरे। वह समझने लगे कि प्रलय आ गई और उससे बचना कठिन है। राम इस निशाचरी माया (मानसिक साइंस) की रचना को देखकर मुसकराते रहे।

जिसकी माया ही प्रेरित विष्णु, शिव और महेश की।
मेघनाद आया उसी से, करने कैसी दिल्लगी।
पानी बरसाया कभी, आंधी विकट आई कभी।
तारे चमके और गगन में, चांदनी छाई कभी॥

बन्दरों और रीछों को भयातुर देख कर राम ने केवल मान बाण मारा। और राक्षसी लीला का कौतुक एक पल में लोप हो गया। मेघनाद को यह तो निश्चय होगया कि राम मानसिक बल बुद्धि में प्रवीण हैं और फिर स्थूल संग्राम के लिये वह उन्हें ललकारने लगा। अंगदादि बानरों ने आज्ञा मांगी और लक्ष्मण अपनी सेना के साथ रणभूमि में आये।

रावण को उसके गुप्त दूतों ने समाचार पहुँचाया कि लक्ष्मण लड़ने के लिये आ रहे हैं। इसने मेघनाद की सहायता

के लिये अनगिनत शूरवीर और योद्धा भेजे।

दो सेना एक दूसरे के सामने आईं। उधर राक्षस थे इधर रीछ और बानर! दो बराबर दल मिले। राक्षसों के हाथों में कटार, बर्छे, बल्लम, बाण, गदा, तलवार, छुरे सब कुछ थे। इन के हथियार केवल दांत और नख थे। उधर रावण का बल था। इधर राम की दया दृष्टि थी। दोनों भिड़ गये। मार धाड़ होने लगी। उधर हथियार बरसते थे इधर से पत्थर और चट्टान फेंके जाते थे। राक्षस जब तक अपने हथियार सँभालते बन्दर उछल-कर उनके सिर पर आ जाते। आंख नाक निकाल लेते और सिर पर घूँसे मार कर उन्हें अचेत कर देते थे। लड़ाई हुई। गगन मण्डल में अँधेरा छा गया। वीर हृदय खोल कर लड़े। किसी को किसी का भय नहीं था। आकाश के देवता कभी दुखी होते थे कभी सुखी और लड़ने वालों की दृष्टि से दूर रह कर यह लीला देख रहे थे। इस लड़ाई के मूल कारण वही थे। चट्टे बट्टे लड़ाते रहना यह देवताओं ही का कर्तव है।

बहुत देर तक लड़ाई रही। लक्ष्मण ने देखा मेघनाद ऊधम ढा रहा है। बाण प्रहार करने लगे। वह घायल हो गया। समझा, 'ऐसा न हो उनके बाणों से मैं काम आ जाऊँ। और कुछ न सूझी, शक्ती बाण चला दिया। वह लक्ष्मण के कलेजे में आकर लगा और वह अचेत होकर पृथ्वी पर पहाड़ के समान गिरे। मेघनाद अब अभय होकर वहाँ पहुँचा जहां वे पड़े हुये थे। चाहा कि उठा कर लंका ले जाये। बहुत बल किया, जोर मारा। वह उसके उठाये न उठ सके।

सन्ध्या का समय आ गया। लड़ाई बन्द करके अपने स्थानों को गये। राम ने बन्दरों से पूछा-"लक्ष्मण कहां हैं?" किसी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। हनूमान दौड़े। उन्हें उठा

लाये। देखा, लक्ष्मण अचेत हैं। गहरी चोट लगी है। दुखी हुए। शरीर पर हाथ फेरा फिर भी उनकी मूर्छा दूर नहीं हुई।

चौथा समुल्लास

हनूमान का संजीवन बूटी लेने जाना और अहिरावण युद्ध

लक्ष्मण अचेत पड़े हैं। इर्द गिर्द बन्दर और रीछ खड़े हैं। राम अनजान बनकर पूछते हैं—"क्या किया जाय कि लक्ष्मण सचेत हो जांय ?"

जामवन्त ने कहा - 'लंका में एक वैद्य रहता है उसका नाम सुखेन है। वह आवे तो औषधि बतावे।"

हनूमान सुनते ही उठे। लंका को गए और सुखेन को उस के घर के सहित उठा लाए।

तुमको सुनकर आश्चर्य होगा कि यह कैसे सम्भव है कि मनुष्य घर समेत उठकर चला आए यह सम्भूत क्रिया है। मन स्वप्नावस्था में नित्य ऐसी क्रिया करता है और आकाश मण्डल के रहने वाले प्रेत भी ऐसी लीला नित्य करते हैं। हां जिसने नहीं देखा उसके लिए असम्भव है।)

सुखेन, ने कहा—"इसकी औषधि संजीवन बूटी है। रात ही रात वह आ गई तो बच जायेंगे नहीं तो शक्तिबाण प्राण घातक हो जायगा।"

राम ने पूछा—"यह कहां मिलेगी ?"

सुखेन ने उत्तर दिया—"इसका जन्मस्थान तो धौलागिरि पर्वत है।" वैद्यों के यहां भी रहती है मगर इस समय मेरे पास नहीं है। इसके पत्ते चमकते रहते हैं।

हनूमान ने सुना। बोले-"तुम यहाँ ही रहो। मैं अभी जाता हूँ उसे खोज लाऊँगा।"

वह उठे। आंधी के समान उड़े। यह जा, वह जा, नौ दो ग्यारह हुए।

रावण को समाचार मिला। उसने अपने सम्बन्धी अहिरावण को बुलाया। "जाओ! हनूमान संजीवनी बूटी लेने जा रहे हैं. उन्हें छलो और धौलागिर की सारी बूटियों को चमकदार बनादो ताकि हनूमान यह औषधि न ला सकें।" अहिरावण जानता था कि "राम ब्रह्म के अवतार हैं।" समझाया, बुझाया राम की भक्ति करने का उपदेश भी सुनाया। रावण ने कहा, "जा अपना काम कर नहीं तो अभी मार कर कचूमर निकाल दूंगा।"

यह डरा। जान तो गया कि मृत्यु निकट आ गई है। सोचा कि राम के दूत के हाथ से मरना अच्छा है और मार्ग में यह साधू का भेष बनाकर एक कुटी में बैठ गया।

हनूमान दिन भर लड़ते भिड़ते रहे। थके मांदे थे, दिन डूबते ही उत्तराखंड को चले। प्यास ने सताया। साधू की कुटी देखी। पानी मांगा। उसने कमण्डल आगे धर दिया। हनूमान ने कहा-'इतने जल से काम न चलेगा।" वह बोला—"ताल भरा है। पानी पीकर यहां बैठो। उपदेश सुनो ताकि तुमको शान्ति मिले।"

यह गये। पानी पीने के निमित्त ताल के भीतर पाँव डाला। एक मगरी बैठी थी। मुँह से पांव पकड़ लिया। हनूमान ने उसकी पीठ पर एक घूंसा तान कर मारा। वह अप्सरा होकर आकाश को उड़ी और चलते चलते इन्हें कह गई-"मैं अप्सरा हूँ। इन्द्र ने मुझे एक तपस्वी के छलने को भेजा। मैं आई। तपस्वी ने श्राप दिया। मैं मगरी बन गई।" वह दयालु था। यह भी

कहा—"राम का दूत इधर से आयेगा। उसके पांव छूने के प्रभाव से तू फिर अप्सरा हो जायगी। मैं तो जाती हूं। यह साधू नहीं है। अहिरावण है। तुम्हारे रास्ते रोकने के उपाय में हैं।"

यह कह कर वह तो उड़गई। यह पानी पीकर अहिरावण के समीप गये। "साधू जी! उपदेश पीछे सुनाइयेगा। गुरू दक्षिणा पहिले ले लीजियें।" यह कह कर एक लात मारी। वह मरते समय अपने रूप में प्रकट होकर राम राम कहते हुए प्राण त्याग कर गया।

पांचवां समुल्लास

भरत की बल परीक्षा

हनूमान फिर आँधी के समान उड़े। धौला गिरि पर पहुँचे। यहां राक्षसों ने बूटियों के पत्तों को चमकदार बना रक्खा था। यह देख कर घबराये। सारे पर्वत को उठा लिया और उड़ते हुये अयोध्या के ऊपर आये। भरत के देखने का ध्यान आया। पहाड़ को सिर पर लिये हुए गरजे, तड़पे और किलकारी मारी भरत की दृष्टि पड़ी। सोचा—"हो न हो यह रात की चर्य्या करने वाला निश्चर है। रावण राम की लड़ाई हो रही है। पहाड़ ले जाकर उन पर गिरायेगा और उनको हानि पहुँचेगी।"

सोचते ही एक सींक का बाण चलाया जो इनके पाँव में लागा। यह गिरे और गिरते समय तीन बार राम राम राम कहा। राम! तुम्हारी सेवा के निमित्त इधर आया। बाण लागा। घायल हुआ।

नहीं सेवा करी नहीं भक्ती बनी,
न इधर का रहा न उधर का रहा।

नहीं योग बना नहीं युक्ती बनी।
न इधर का रहा न उधर का रहा॥

राम राम का शब्द सुनना था कि भरत के औसान उड़ गये। "हाय विधाता! मैंने क्या पाप किया था! मेरे कारण राम बन को सिधारे। मुझ से कुछ न बन सका। आज मैंने राम भक्त को भी मार दिया।" यह कह कर रोते हुये हनुमान के पास पहुंचे। वह जान बूझ कर अचेत हो रहे थे। भरत ने कहा—"तू राम का भक्त है तो मेरी वाणी के प्रताप से उठ बैठ। तूने आज मुझे दारुण दुख दिया।"

यह उठ बैठे। भरत ने पूछा—"तू कौन है?

यह बोले—"राम का सेवक हनुमान हूँ।" लङ्का में लड़ाई ठनी है। राम रावण लड़ रहे हैं। लक्ष्मण को मेघनाद ने शक्ति बाण मारा। वह अचेत पड़े हैं। सुखेन वैद्य ने उनके लिये संजीवन बूटी का सेवन बताया। मैं औषधि को नहीं पहिचानता। इसलिये पहाड़ ले जारहा था। वैद्य पहिचान लेगा। थोड़ी रात्रि रह गई है। मैं प्रातःकाल से पहिले न पहुंचा तो लक्ष्मण का बचना कठिन है। तुमने मुझे मार दिया। अब करूँ तो क्या करूँ।"

भरत ने हनूमान के शरीर पर दया का हाथ फेरा। वह भले चंगे हो गये। एक बाण उठाया और कहा—"इस पर बैठ जा। मैं पल के पल में तुझे अभी लंका पहुँचाये देता हूं।"

हनूमान ने कहा—"बस बस! मैं अब आपकी दया से अच्छा हो गया। जल्द पहुंच जाऊँगा। आप चिन्ता न कीजिए। राम नित प्रति दिन आपका स्मरण करते थे और आपके बल पराक्रम की सराहना करते थे। मेरे मन में दर्शन की अभिलाषा हुई। राम जिसके बल बुद्धि की इतनी प्रशंसा करते हैं उन्हें चलकर देखना भी चाहिये। यह इच्छा मुझे यहाँ लाई। अब मैं अधिक नहीं ठहर सकता।"

यह कह कर हनुमान तो पहाड़ सिर पर उठाये हुये उड़ चले और भरत मन में सोचने लगे ।

राम स्वामी हैं मेरे और राम का मैं दास हूँ ।
राम मेरे मन में हैं मैं मन से उनके पास हूँ ॥
राम तन में राम मन में राम मेरे साँस में ।
राम का सुमरन भजन विश्वास में और आस में ॥
राम मेरे, राम का मैं, राम मुझ में रम गये ।
राम जब मेरे हुये सारे नियम संयम गये ॥
मन बचन और कर्म से सेवक हूँ अपने राम का ।
दास सच्चा बन गया मैं राम शोभा धाम का ॥
ज्ञान मेरा राम है अनुमान मेरा राम है ॥
लोभ मेरा राम है अभिमान मेरा राम है ॥

छटवाँ समुल्लास

राम का विलाप

"आधी रात बीत गई । अभी तक हनुमान नहीं आये । क्या हुआ ? क्या करने लगे ? हनुमान तो देर लगाने वाले थे नहीं, कहीं रास्ते में राक्षस तो नहीं मिले ! उनसे झगड़ा तो नहीं ठन गया !"

राम इस सोच में पड़ गए । लक्ष्मण को उठाकर बार बार छाती से लगाया । प्यारे लक्ष्मण ! उठो ! अपने राम के विलाप को देखो । आज तुम्हारा वह अद्वितीय प्रेम कहाँ चला गया ! मेरे लिए बाप छोड़ा, माँ छोड़ी, घर छोड़ा, बार छोड़ा । क्या आज मेरे लिए अपने प्राण को भी छोड़ोगे !"

सीता गई थी तो गई, मुझे इसकी भी इतनी चिन्ता नहीं है जितनी आज तुम्हारी चिन्ता सता रही है। सब मिल जाते हैं परन्तु तुम्हारे जैसे भाई का मिलना असम्भव और महा कठिन है।

"कौन जानता था कि यों तुम्हारा बिछोह हो जायगा। नहीं तो बाप का बचन भी मैं न मानता।"

"आज मेरे जीवन का आधार मुझ से अलग हुआ जारहा है। मैं बिना पानी की मछली, बे फन का नाग हो रहा हूं। तुम नहीं रहे तो संसार में मेरा जीना किस काम का! प्यारे! उठो तुम्हारा राम बहुत दुखी है।"

"अब क्या मुँह लेकर लँका को जाऊँगा। लोग कहेंगे कि स्त्री के मोह में पड़ कर भाई का गला कटवा दिया।"

"माता सुमित्रा को क्या कहूँगा कि जिसने तुझ को सौंपा था। कौशल्या को क्या उत्तर दूँगा जब वह पूछेगी-"लक्ष्मण क्या हुये?"

"अपयश और अपकीर्ति का सहन मेरे लिये कठिन नहीं है। मैं सब कुछ कर सकता हूँ। तुम्हारे बिना मेरा जीना असम्भव है।"

"प्यारे लक्ष्मण! उठ बैठो राम को ढाढ़स दो।

इस प्रकार विलाप करते हुए राम दहाड़ें मार मार कर रोने लगे। रीछ और बन्दरों ने उनकी दशा देखी। सेना में कुहराम मच गया।

राम में हर्ष और शोक कैसा! यह नर लीला थी, जिसका साँग उन्होंने भरा था।

जब वह बहुत व्याकुल हो रहे थे उसी समय हनुमान पहाड़ उठाये सिर पर वहां आ पहुँचे। राम की जान में जान आ गई। हनुमान को छाती से लगाया। सुखेण वैद्य ने दवा लगाई पिलाई। लक्ष्मण ने आंख खोल दीं। राम ने उन्हें गोदी से

चिपटा लिया। सिर और माथा चूमा। बार बार बलायें लीं।

हनूमान सुखेन वैद्य को उसके घर सहित लंका में पहुंचा आये और राम अपनी सेना के साथ लक्ष्मण जी के उठने पर सुखी हुए।

सातवाँ समुल्लास

रावण और कुम्भकरण

राम तो कुछ करने वाले नहीं हैं वह तो आधार और सहारा मात्र हैं। करने धरने वाले लक्ष्मण ही हैं। इनके शक्ती-बाण लगने के समाचार को पाकर रावण मन में मगन था। लक्ष्मण की मृत्यु से लड़ाई का अन्त हो जायगा। वह जानता बूझता सब था। राम और लक्ष्मण के रूप को समझता था। इसका हट समझ बूझ के साथ था। वह राम के साथ अपनी शत्रुता को अंतिम सीमा पर पहुंचाना चाहता था। शत्रुता भी एक प्रकार की भक्ति होती है। अन्त में सब मिल मिला कर एक हो जाते हैं और शिव और विष्णु के भक्तों में कोई भेद नहीं रहता।

विष्णु सूक्ष्म हैं, शुद्ध, निर्मल, पवित्र, सुन्दर, मनोहर! यह उनके भक्तों का आदर्श है। शिव स्थूल है। तन पर राख भभूति मले हुये शमशान भूमि में निवास! जली हड्डी चमड़े की जगहों में बास! डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, भूत, पिशाच, बेताल का साथ! विष्णु के हथियार शंख, चक्र, गदा, पद्म हैं। शिव के हाथ में त्रिशूल और डमरू है। उनके यहाँ सुन्दरताई है इनके यहां कुरूपता है। यह शिव के भक्तों का आदर्श है जब दोनों की भक्ति चिर सीमा पर पहुंच जाती है, वहाँ शुद्धि अशुद्धि,

सुरूपता और कुरूपता का अभाव हो जाता है। यह परम पद है। यह कैवल्य अवस्था है।

रावण यह जानता था। उसने राम से जान बूझ कर बैर ठान रक्खा था। राम नर हैं तो उनके पराजय कर लेने में यश कीर्ति है। राम नारायण हैं तो उनके हाथ से मारे जाने में सद्गति है। वह इसी भाव को लेकर लड़ रहा था। हम चाहे उसे भला कहें चाहे बुरा कहें। अपना अपना आदर्श और इष्ट प्रथक प्रथक है। लेकिन उसके महान भाव और अभयपन को तो देखो जिसके तोड़ने के लिए ब्रह्माण्ड की महा शक्ती को प्रकट होना पड़ा। यह उसकी बहुत बड़ी महिमा है।

लक्ष्मण के अच्छे होने का समाचार सुनकर रावण मन में दुखी हुआ और सहायता लेने के भाव से कुम्भकरण के यहां गया। यह रात दिन पड़ा सोता रहता था। माँस मदरा अधिकता के साथ मिलती थी। खाता, पीता और पांव पसार कर सो रहता था। यह गहरी बेहोशी की नींद में चूर था। रावण उसके समीप में गया, शरीर को हिला डाला। करवटें दीं। उलट फेर किया। बड़ी कठिनाई से वह जागा। आंख मलते हुए उठा। "क्यों जगाया। आंखें कड़वा रही हैं। उनमें किरकिरापन है!'

रावण बोला—"लंका की दशा बिगड़ गई! कुल राक्षस मारे गए। न जगाता तो क्या करता?"

कुम्भकरण—"क्यों? क्या हो गया!"

रावण—"राम लक्ष्मण अयोध्या के राजकुमार बन में आए। बहन सूर्पणखाँ के कान नाक काटे। मुझे बुरा लगा। खरदूषण और त्रिशरा को भी मार दिया। मैं राम की स्त्री सीता को चुरा लाया। वह रीछ बन्दरों की सेना लेकर लंका में चढ़ आए। समुद्र पर पुल बाँधा। लड़ाई ठानी। राक्षसों को एक एक करके मार दिया। दुर्मित, सुररिपु, मनुष्य अहारी

अति काम, अकम्प आदि सब के सब मारे गये। अब मैं, मेघनाद और तुम तीन बच रहे हैं। मैं महा दुखी हूँ। विभीषण उनसे जाकर मिल गया।"

कुम्भकरण क्रोधातुर हुआ। "तूने बुरा किया। सीता जगदम्बा, जगत माता और भक्त जननी है। राम जगत पिता, जगत पालक और जगत आधार हैं। यह क्या किया? तेरा यह काम अच्छा नहीं हुआ। सीता को दे दे। राम की शरण में जा। इसी में तेरे कुल का उद्धार, सुधार और बचाव है। इसके अतिरिक्त अब और कुछ नहीं हो सकता। राम प्रकट हुए। नर शरीर में उनका दर्शन कर! बैर भाव छोड़ दे। कल्याण इसी में है।

रावण ने देखा कुम्भकरण बिफरा जा रहा है। तीक्ष्ण मदिरा के सैकड़ों मटके और सहस्रों प्रकार के भुने और पके हुए मांस के आहार मँगवा कर सामने रख दिए। तामसी कुम्भकरण को और क्या चाहिए था! खाया, पीया। नशा चढ़ा। झूमा और मतवाला हुआ। "कहां है राम! चल कर मुझे दिखा दे। मैं उनका दर्शन तो कर लूँ! फिर जो होना है वह हो कर रहेगा।"

आठवाँ समुल्लास

तीसरे दिन का संग्राम

हिलता डुलता हुआ काला पहाड़ राम की सेना की तरफ बढ़ा। कोलाहल मच गया। यह कौन आ रहा है? विभीषण ने राम से कहा – 'प्रभू! कुम्भकरण लड़ने आ रहा है।"

राम बोले – "आने दो! तुम पहले उससे जाकर मिलो!

तुम्हारा बड़ा भाई है और देखो वह क्या चाहता है ?"

विभीषण चल खड़े हुए ! काले पहाड़ के पासगये ! "नाथ ! रावण ने मुझे लातों से मारा, अपमान किया और लंका से निकाल दिया। जब किसी का सहारा न रहा, राम की शरण ली। उन्होंने मुझे अपना सेवक और शरणागत बना लिया।"

कुम्भकरण ने कहा—"तूने बहुत अच्छा किया। रावण का तो काल आ गया। वह कुल घातक है। तू निश्चर कुल भूषण है।"

राम की भक्ती हो जिसमें उसका जीवन धन्य है।
अरपे तन, मन, धन उन्हें ऐसा जीवन धन्य है॥
राम जगत आधार हैं सृष्टि के माता और पिता।
वह जहां जाकर रहें वह भूमि और बन धन्य है॥
काल वश निश्चर हुए हैं काल के आधीन सब।
राक्षस कुल में अकेला तू विभीषण धन्य है॥

जा ! मैं भी राम के दर्शन को चला हूँ।

विभीषण राह से हट गया। झूमता हुआ काला पहाड़ बगुले के समान चला। रीछ और बन्दर उसे देखकर घबराए। पत्थर, चट्टान बरसाये। वृक्ष उखेड़ उखेड़ कर मारा। हनुमान, अङ्गद और सुग्रीव ने पहाड़ उठा उठा कर उस पर फेंके। वह जैसे का तैसा रहा। न शरीर में चोट आई न घाव हुआ और उसके हाथ में कोई हथियार भी नहीं था। रीछ और बन्दर साहस करके कुछ उसके समीप आ गये। उसने पकड़ पकड़ कर उन्हें अपने मुँह में डालना शुरू किया। कितने उसके मुँह में जाकर नाक और कान के छिद्रों से निकल पड़े और अपनी जान बचा कर भाग खड़े हुये। सिर क्या था ? बड़े बड़े जीत जागते और चलते फिरते पर्वत का शिखर था। हाथ लम्बे

लम्बे वृक्ष और तन के रोंगटे लताएँ थीं। कान और नाक पहाड़ की कन्दराऐं थीं।

उसे कौन रोक सकता था! किस में ऐसी सामर्थ्य थी! रीछ और बन्दर उसके सामने मच्छर और पिस्सू थे। यह उसे काटने लगे। नोंचने खोंसने लगे! इससे उसका क्या बिगड़ता था! पहाड़ तो पहाड़! पहाड़ों में कितने ही रीछ बन्दर छुपे पड़े रहते हैं। पहाड़ को इनसे क्या हानि पहुँचती है। हां इस के चलने से पृथ्वी कांपने लगी। यह तो काँपने वाले कपि पहिले ही से थे। यह उनका प्राकृतिक और स्वाभाविक गुण था और भी काँप गए। कपकपाती हुई पृथ्वी पर इनका पांव न थमता था न रुकता था, न जमता था। भूकम्प जब आता है सब के पांव डगमगाने लगते हैं। रीछ और बन्दर उठे और गिरे, सँभले और फिर उठे। यह लुढकते हुए गैंद बन गए। ऐसे पहाड़ के साथ लड़े भिड़े कौन! अङ्गद, हनुमान, सुग्रीव, नल, नील सब ने पहाड़ ला लाकर उस पर बरसाए। एक तो यों ही इन सबके हाथ पाँव फूल रहे थे, दूसरे बड़े पत्थर को छोटे पत्थर से क्या चोट लगती है! चट्टान बरसे, सिर से टकरा कर नीचे गिरे। इसके लिए यह फूलों की वर्षा के समान थे।

कितने रीछ बन्दर उसके पांवों से रुँद गए, कितने कुचले, कितने दबे, कितने मरे, उनकी गिनती कौन गिना सकता है!

फिर भी हनुमान, सुग्रीव और अङ्गद ने पहाड़ ला लाकर उसकी राह में डाल दिए कि यह झूमता हुआ मतवाला ठोकर खा गिरा और यह राम लक्ष्मण के समीप न जाने पावे। यह इसी प्रबन्ध में थे कि वह बाढ़ के समान आ पहुँचा। इसके पाँव की ठोकर लगी। हनूमान इधर गिरे। सुग्रीव उधर पड़े। अङ्गद बड़े वीर थे। वह अन्टाडफील हुए। सबको मूर्छा आगई। तन मन की सुध जाती रही। कुशल इतनी हुई कि इसका पाँव इन

पर नहीं पड़ा, नहीं तो यह भी कुचल जाते ।

तमाकार था पर्वताकार निश्चर ।
कोई वीर इसके कहां था बराबर ॥
कोई सामना उसका करता नहीं था ।
भगे ऐसे कोई कहीं था कहीं था ॥
किसी को बगल में लिया दाब उसने ।
किसी को लिया दाँत से चाब उसने ॥
न मारा किसी को न घूँसा चलाया ।
मरा सामने इसके जो आप आया ॥
न घायल हुआ और न मरता था मारे ।
थके रीछ बन्दर निबल बन पुकारे ॥
करो अब दया राम ! सब इससे हैं हारे ।
लड़ें इससे क्या रीछ बन्दर बेचारे ॥

राम ने देखा कि योद्धा कुम्भकरण के हाथ से उनकी सेना व्याकुल हो गई । वह तो लीला कर रहे थे और लीला मात्र में इनको दिखाना चाहते थे कि राम स्वयं अकेले जो चाहें कर सकते हैं। रीछ और बन्दर उन्हें क्या सहायता दे सकते हैं !

(तुम समझोगे, मैं इस लड़ाई के वर्णन करने में झूठ कह रहा हूं। नहीं, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, सच सच कह रहा हूं। मैं तो लिखते समय कुम्भकरण को देख रहा हूं। राक्षसों का बध इस समय भी मेरी आंखों के सामने हो रहा है। तुम केवल उसके रूप को समझ लो और मेरे साथ सहमत हो जाओगे।)

राम ने हँस कर धनुषबाण उठाया। एक सनसनाता हुआ बाण धनुष से निकला। उसका एक हाथ कट कर नीचे गिरा। दूसरा बाण चला। इसके दूसरे हाथ को काट गिराया। दो

पहाड़ गिरे। कितने रीछ और बन्दर इसके नींचे दबकर मरगये।

काले पहाड़ से गेरू की दो नदियाँ बह निकलीं। जो आस पास थे धार की फुहार से तरबतर हो गये। वह रुन्ड मुन्ड पहाड़ आगे की तरफ बढ़ा। काजल में लाल गेरू की लकीरें बड़ी शोभायमान हो रही थीं और इर्द गिर्द के बंदर फूले हुए टेसू के छोटे छोटे गाछ के समान दिखाई देने लगे।

बही रक्त की धार पृथ्वी में पोटी।
इधर से फिरी और उधर जाके लौटी॥
फिसल कर गिरे रीछ बन्दर न सँभले।
कभी डूबे उभरे कभी उठ के मचले॥

यह हथ कटा वीर आगे की तरफ बढ़ा। कौन कह सकता था कि वह किस धुनि में था। इतना तो उसने रावण और विभीषण से निस्सन्देह कहा था कि-"मैं शरीरधारी नारायण का चलकर दर्शन करूंगा।" इसी से तुमको जो कुछ समझना हो समझलो।

वह बढ़ा। इस बढ़ती हुई बाढ़ का रोकने वाला कौन था! राम ने देखा। पहाड़ सन्मुख चला आरहा है। एक बाण और कस कर मारा। इसका सिर उछला और उड़कर वहाँ गिरा जहाँ रावण बैठा हुआ था! और इसका धड़ अड़अड़धम करते हुए पृथ्वी पर आरहा। मरते समय राम की सेना का कुछ भाग उसके नीचे दबकर कुचला और मर गया। और बड़े अचम्भे की यह बात हुई कि जब सिर में बाण लगा, उसके मुँह से चमकती हुई ज्वाला बिजली के आकारमें निकली जिससे थोड़ी देर के लिये चौतरफा जगमगाहट होगई और वह सबके देखते देखते राम के मुँह में समा गई।

रमा राम में राम का अंश था वह।
अंश का अंश और वंश था वह॥

निशाचर की भक्ती-की महिमा थी उसमें।
तमोगुण था और तमकी उपमा थी उसमें॥
मरा मरके और राम का धाम पाया।
मिली शान्ति और विश्राम पाया॥
यही फल है भक्ती का भक्ती से युक्ती।
और इस युक्ती से मिलती है सबको मुक्ती॥

नवां समुल्लास

चौथे दिन की लड़ाई

रात्रि आई दिन का अन्त हुआ। रात्रि और दिनके मिलाप का नाम सन्ध्या है। इसके तीन रूप प्रत्यक्ष हैं— सन्धि, संध्या, संध्या निशि! जब दो अवस्थायें मिल कर एक हो जाती हैं तो उसे सन्ध्या कहते हैं। दो के मिलने का नाम सन्ध्या है और दो में से कोई अंश मिला और कोई नहीं मिला उसे साधक और साधना करने वाले संध्यानिशि कहते हैं। यह बहिर्मुखी संध्याऐं हैं। और यह दो प्रकार की होती हैं—सुरी और आसुरी। इन्हें तुम चाहो तो दिनचरी और निशिचरी भी कह सकते हो। अन्तरीय या अन्तरमुखी सन्ध्या भी दो प्रकार की होती है। जागृत और स्वप्न का मिलाप पहिली, स्वप्न और सुषुप्ति का मिलाप दूसरी।

संध्या आई। दिनचर दल सुखी था। नभ मण्डल के देवता प्रसन्न थे कि बहुत बड़ा निशिचर मारा गया। निशिचर दल महादुखी था। वहां राम और लक्ष्मण सन्ध्या के नित्य कर्म में संलग्न हुए। यहां जब कुम्भकरण का सिर कट कर रावण के सम्मख गिरा, लंका में कुहराम मच गया। रावण की आंख

से आँसू की धार बह निकली। स्त्रियां उसके वीरत्व भाव का स्मरण करते हुए रोने लगीं।

चलते पृथ्वी काँपती, गगन मण्डल थर्राय।
सो योद्धा भू में पड़ा, काल से कहा बसाय॥
कुम्भकरण रण बांकरा, मरा काल के हाथ।
गया अकेले स्वर्ग को, किसी ने दिया न साथ॥
मैं मैं करते मैं गया, तू तू करते तू।
मैं मैं, तू तू जगत है, सोच समझ कुछ तू॥
दो दिन का व्यवहार है, क्षण भंगी संसार।
देख दशा संसार की, समझ समझ पग धार॥
आये हैं सो जाँयेंगे, जांयेंगे विस्वा बीस।
चरण कमल में गुरू के, अब धर अपना शीश॥

मेघनाथ आया। कहने लगा-"रोना पीटना व्यर्थ है। जो होना था हो चुका। संग्राम ठना है। इस कुहराम से लाभ नहीं हानि है। मैं कल चल कर राम लक्ष्मण से कुम्भकरण का बदला लूंगा। वह जाते कहाँ हैं! मुझ से बच कर नहीं जा सकते।"

रात भर नगर में कुहराम मचा था। स्त्रियों का रोना पीटना बन्द नहीं हुआ। लंका को अपनी सभ्यता पर बड़ा घमंड था। समझ बूझ में निशाचर इस भूमि लोक क्या सारे सूर्य मण्डल में बड़े चढ़े थे। लेकिन इस विलाप की रीतिका निरोध न होसका मनुष्य का हृदय स्वभाव से कोमल है। कैसा ही कोई समझे बूझे, जाने, माने, समय पर जब वियोग हो जाता है मन नहीं मानता। आँखों से आंसू निकल ही पड़ते हैं। समझाने बुझाने से दुख की आग और प्रचण्ड हो जाती है। ज्ञानी, अज्ञानी दोनों की दशा एक जैसी है। ज्ञानी हृदय से और हृदय में रोता है। अज्ञानी आँख से और आंख में रोता है। वह समझ बूझ कर

अन्त में चुप हो रहता है। यह रो धो कर फिर संसार के व्यवहार फाँस में फँसकर चुपकी साध लेता है।

प्रातः काल बन्दर और रीछ जागे। फिर लंका पर चढ़ दौड़े। हा हा कार मच गया। मेघनाद की आंख खुल गईं। उठा और अस्त्र शस्त्र से सज कर घर से निकलकर इन्हें ललकारा। "आओ, आज मैं युद्ध का स्वाद चखाऊँगा। तुम भी क्या समझोगे किसी से पाला पड़ा था!"

मेघनाद राक्षसी विद्या, मायावी खेल और साइंस के करतबों में सबसे अधिक प्रवीण समझा जाता था। सारे तत्व आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी इसके अधीन हो रहे थे! इसने शत्रुओं के जीतने को नाना प्रकार की नई नई कलाएँ बना रक्खी थी। जब चाहा भूमण्डल को अँधेरा कर दिया और अँधेरे को उजाला बना दिया। मायावी तेज को देखकर आखें चौंधिया जाती थी। देखने वालों के हाथ पावों की शक्ति चली जाती थी। और यह वज्र प्रहार करके जैसे चाहता था मार गिराता था। इस समय म कोई वीर ऐसा नहीं रह गया था जो इसके साथ संग्राम में आकर सामना करता। रावण का प्रताप इसी के बल, पौरुष विद्या बुद्धि से वृद्धि को प्राप्त हुआ था।

वह आया। आते ही सिंहनाद के समान गरजा। रीछ और बन्दरों के हृदय दहल गये। उनके कलेजे कांप उठे। इनके देखते देखते वह आकाश में चढ़ गया और ऊपर से फरसे, भाले, पखान बाण, कृपाण बरसने लगे। सावन भादों की लगातार झड़ी लग जाने से यह भागते भी तो यह कहां भागते! मार मार, धार धार की धुन चारों तरफ के सुनाई देने लगी। मेघ गरजने का शब्द हुआ, बिजली चमकी। आकाश से लूक टूटे और ऊपर से बज्र प्रहार होने लगा। जाने के और भागने के रास्ते बन्द थे। सब के सब एक स्थान में बँध गये।

इस कौतुक को देखकर रीछ बन्दर अपनी अपनी लड़ाई के करतब भूल गये। यह किस पर पत्थर चलावें। वहां इनके अतिरिक्त कोई भी नहीं था। मेघनाद के शस्त्र प्रहार ने इन सब को निर्बल और पराक्रम हीन बना दिया। और फिर मायावी (सायंटीफिक) नाग फाँस फेंककर एक एक को इसने फांस लिया। अंगद, सुग्रीव, हनूमान फँसे। लक्ष्मण और राम भी उस से न बच सके। साँपों की वर्षा इस अधिकता से हुई कि राम की सेना उनसे बँध गई। सारे शरीर में सांप लिपट गये। वह छूटें भी तो कैसे छूटें! उस विद्या को नहीं जानते थे। यह नहीं कहा जा सकता कि राम में सामर्थ नहीं थी। वह नट क्रिया का खेल कर करा रहे थे। हां! और सब इससे अनभिज्ञ थे।

आप फँसे और सबको फँसाया।
बहु विचित्र है राम की माया॥
खेल खेल है खेल पसारा।
महा खेल माया विस्तारा॥
खेल सङ्ग राजन की रीती।
खेल से दुखी रङ्क विपरीती॥
दुख सुख दोनों खेल समान।
राम का खेल महा बलवान॥
मेघनाद को किया खिलाड़ी।
आय खेल में बने अनाड़ी॥

सब फँसे पड़े हैं। हिल डुल नहीं सकते।

द्वन्द की रचना द्वन्द के साथ है। बन्धन के साथ मुक्ति, वियोग के साथ योग युक्ति, आग के साथ पानी और ताप के साथ शान्ति! और दोनों की दोनों क्षण भङ्गी है और यह माया ही के खेल के अङ्ग हैं।

मेघनाद बलवान ऊपर से पत्थर बरसा रहा है। इसके भी

रोकने का उपाय है। मेघनाद नभ मण्डल में छुपा हुआ साँप बरसा रहा है। वह समझता है कि इस करतब से राम को जीत लेगा! मनुष्य मात्र अपनी ममता बुद्धि से ऐसा ही समझता है। यह नहीं जानता कि यह सब राम की माया का खेल है।

खेल में है खेल जग इस खेल ही का खेल है।
खेल ही में छुट बिछुड़ना खेल ही में मेल है॥
खेल ब्रह्मा खेल विष्णु खेल शिव की मूर्ती।
खेल की त्रिपुटी है सब में खेल ही की पूर्ती॥
खेल को जब खेल समझा फिर वह दुखदाई नहीं।
जब नहीं दुखदाई है तब खेल सुखदाई नहीं॥
खेलते हैं खेल देवी देवता निष्काम हो।
इसलिये वह प्राप्त हैं निज शान्ती विश्राम को॥
नर फँसे ममता में बुद्धि लोभ में अभिमान में।
पाते हैं दुख आपदा वह भ्रम से अज्ञान में॥
मेट दो अज्ञान को तब दुख गया सङ्कट घटे।
फिर न बढ़ती होती है कोई न घटती से घटे॥
खेल खेलो रात दिन हानी है क्या इस खेल से।
लेना देना कुछ नहीं अनमेल से और मेल से॥

सब बँधे फँसे थे। संयोग से एक जाम्वन्त बच रहे थे। मेघनाद गगन मण्डल से नीचे उतरा। जाम्वन्त की दृष्टि पड़ी। ललकारा—"पापी खड़ा रह।" यह बोला—"बूढ़ा समझ कर तुझे छोड़ रक्खा था।" रीछ ने भाला उठा कर इसकी छाती पर अपने पूरे बल से मार दिया। चोट आई। वह पृथ्वी पर गिरा। मूर्छा आ गई। जामवन्त ने उसकी टाँगों को घुमा कर ऐसे जोर से फेंका कि वह अचेत होकर लंका में जाकर गिरा।

देवताओं ने राम की सेना की बे बसी देखी। सेना तो घब-

राई हुई थी ही, वह भी घबरा गये। गरुड़ से कहा—"जाओ राम की सहायता करो। वह संकट में पड़े हैं।" सर्प का शत्रु गरुड़ और सर्प विद्या की बैरिन गरुड़ विद्या! पक्षी राज गरुड़ पङ्ख फैलाये हुए संग्राम भूमि में आ गये। यातो सेना के देह में लिपटे हुए नाग फुसकराते हुए सब को डरा रहे थे, या गरुड़ के आते ही सब की नानी मर गई। फुसकारना भूल गए। सिर झुका दिया और गरुड़ ने एक एक करके सबको निगल लिया और सेना संकट से छूट गई।

ब्रह्मा की सृष्टि महा विचित्र है। विष्णु और शिव के करतब से यह विशेष आश्चर्यजनक है। वह बैठे बैठाए अपनी युक्ति लड़ाते रहते हैं। द्वन्द की लीला इनके यहाँ अधिकतर है। गरुड़ और मोर को देखकर नाग और सांप बेबस बन जाते हैं। भेड़िए को देखकर बन्दरों की घिग्घी बँध जाती है। बान्दर वृक्ष पर बैठे हैं। एक भेड़िया आया। उसके आते ही यह भयभीत होकर नीचे उतर आए। हाथ से आंखों को मीच लिया। भेड़िया एक बन्दर को उठा कर लेगया। तब यह फिर सचेत होकर डाली डाली पर कूदने फांदने लगे। मोर की बोली सुनते ही साँप बेबस हो जाते हैं। फन को पँजे से दबा लिया और पूँछ की तरफ से निगलने लगा। कौन जाने इसके अन्दर क्या गलाने वाली शक्ती है। माँस गल कर मुँह में गया और उस ने हड्डी की ठठरी अपने मुँह से खेंचकर बाहर फेंकी। साँप की ठठरियां ऊसर और जङ्गलों में मोरों के मुँह से निकली हुई होती है। जब नाग फनी गाछ फूलता है और फल लाता है बन्दर उसे देखकर किलकारी मारते हैं। इनके शब्द के सुनते ही नागफनी के फल फूल मरझा कर लटक जाते हैं और जब बन्दर पेट भर कर उन्हें खा कर चले जाते हैं तब यह फिर उठ खड़े होते हैं। ब्रह्मा के

जगत में ऐसी विचित्र विचित्र लीलाऐं सब जगह देखी जाती हैं। शिव और विष्णु के जगत की यह दशा नहीं है। यदि है तो हम उसे बहुत कम जानते हैं।

गरुड़ की सहायता से सेना सर्प फाँस से विमुक्त होगई।

दसवाँ समुल्लास

मेघनाद का यज्ञ विध्वंश और बध

विभीषण राक्षसों की नस नस और नाड़ी नाड़ी को पहिचानते थे। इधर मेघनाद की मूर्छा गई, उधर यह राम के समीप आकर कहने लगे—"मेघनाद को उसके इष्ट देव ने एक वर दिया है कि जब उस पर कोई संकट आये वह एक अमुक प्रकार के यज्ञ का अनुष्ठान करे। उसके सिद्ध हो जाने पर फिर ब्रह्मा विष्णु महेश में से किसी का दाव न चल सकेगा। महाराज! अब वह यज्ञशाला में गया है। यज्ञ सिद्ध करके बलवान बनेगा। फिर किसी का बल उस पर न चलेगा। आप रीछ और बन्दरों को इसी समय भेजिये कि वह उसका यज्ञ विध्वंस कर दें।"

राम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी—"तुम जाओ और सेना को साथ ले जाओ। मेघनाद मानसिक एकाग्रता का अनुष्ठान न करने पावे। अभी वह चंचल वृत्ति का है। ऐसे समय में उसका मार लेना सुगम है। नहीं तो बड़ी कठिनाई होगी।"

लक्ष्मण रीछ बन्दरों को लिये हुये यज्ञशाला में पहुंचे। विभीषण रास्ता दिखाने वाले थे। वहां जाकर देखा कि मेघनाद सिद्ध आसन पर बैठा हुआ यज्ञ कर रहा था रक्त की और आहुति दे दे कर वेदी की अग्नि को प्रचण्ड कर रहा था।

इसमें भैंसों के मांस के लोथड़ों को छोड़ता जाता था। यह क्या साधन था। अब उसे कोई नहीं जानता। बाण विद्या का भी लोप हो गया। इसके भी जानने वाले नहीं रहे। यह कई प्रकार की थी। वर्षा बाण, शक्ति बाण, ब्रह्म बाण, अग्नि बाण वरुण बाण, सर्प बाण, आदि। इन सब का ग्रन्थों में नाम ही नाम रह गया है। इनका सम्बन्ध मानसिक क्रिया से विशेष था।

बन्दरों ने उसे नोंचना खोंसना आरम्भ किया। काटा, मारा, चोट पहुँचाई। वह हिलता नहीं था। आसन आरूढ़ होकर बैठा था और ध्यान में संलग्न था। बन्दर इसकी पीठ पर चढ़े। सिर के बाल पकड़कर उखेड़ने और लात घूंसों से मारने लगे। अन्त में वह चंचल हो ही गया। शान्ति गई। अशान्ति आगई। क्रोधान्ध हो गया। त्रिशूल हाथ में लेकर उठा। बंदर भागे। आगे आगे यह! पीछे पीछे वह! बादल के समान गरजा। मेघ का नाद किया। लक्ष्मण ताक में लगे थे। तीव्र और तीक्ष्ण बाण चला दिया। यह उसी समय अन्तर्ध्यान होगया। कहाँ चला गया! किसी को पता न लगा। फिर आप ही आप प्रगट हो कर शस्त्र प्रहार करने लगा।

कभी था प्रगट कभी छुप गया वह।
कभी गरजा तड़पा कभी चुप हुआ वह॥
गगन से गिरे वज्र और चमकी बिजली।
कभी आगिरी और कभी आके बिचली॥
कभी आग बरसी कभी वर्षा पानी।
लड़ाई थी या मृत्यु की वह निशानी॥
कभी बादलों से घिरा तम का मंडल।
कभी चमका सूरज पड़ी सब में हलचल॥
कभी आंधी आई कभी पानी आया।
कभी धूल उसने गगन से उड़ाया॥

जड़ी बूटी बिष का पड़ा आके चूरन।
मरे रीछ बन्दर विकल होके तन मन ॥
कभी बाढ़ आई बही राम सेना।
कहा लक्ष्मण से कि तू ना कि मैं ना ॥
दुखी हो गये रीछ व्याकुल थे बन्दर।
लगे कहने बलवान योधा है निशिचर ॥
नहीं मरता मारे हुआ क्या अमर यह।
निबल भी नहीं होता क्या है अजर यह ॥
कहा लक्ष्मण ने "न घबराओ भाई।
अभी मारूँगा मृत्यु है इसकी आई ॥
खिलाया बहुत इसको खेला खिलाड़ी।
नहीं बच के जाता है अब यह अनाड़ी ॥"

लक्ष्मण ने तान कर एक बाण मारा। उसकी छाती पर लगा। गहरी चोट आई। पृथ्वी पर गिरा। "राम राम" कह कर प्राण त्याग दिया। सारे बीर भाव को उस समय भुला दिया और सीधा राम धाम को चला गया। अंगद ने इसकी वीरता देखी। कहने लगे "धन्य है! इसकी माता की कोख को! जिसने ऐसा योद्धा वीर उत्पन्न किया!"

न देखा सुना कोई भी वीर ऐसा।
हां तेज वाला महा था यह योद्धा ॥
लड़ा राम से इसके साहस को परखो।
न भय था न चिंता थी चित इसका निरखो ॥
किया काम अपना किया नाम अपना।
दिखाया लिया देख इस जग का सपना ॥
जननी जने तो वीर जन नहीं बांझ रह जाय।
मेघनाद जोधा प्रबल नाम किया जग आय ॥

यह लंका का रत्न था। रावण के राज कोष का यह बहुमूल्य हीरा था। नभ मण्डल के देवता इसकी मृत्यु को देखकर महा सुखी हुए। इसी पराक्रमी ने इन सब को लंका के कारागार में बन्द कर रक्खा था। जिससे इसने कहा—'शान्त हो जा वह शान्त हो गया।" जिसे चाहा अशान्त कर दिया। यह वेदों के मूल तत्व को समझता था और यह वाणी उसके कण्ठ में रहती थी।

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यामाः।
शन्नो इन्द्रः वृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरु क्रमः॥

आकाश से फूल बरसे। देव वाणी की ध्वनि प्रकट हुई। बाजे बजे। नभ मण्डल से पखावज और मृदँग की ध्वनि ओम् ओम् ओंकार के रूप में सुनाई देने लगी।

जै लक्ष्मण जै राम कृपाला।
देव दनुज के तुम प्रतिपाला॥
धन्य विजय यह धन्य पराजय।
जै, जै, जै, जै, जै, जै, जै, जै!

उधर देवता स्तुति सुनाकर देवलोक को धाये। इधर लक्ष्मण मेघनाद को मार कर राम के पास आये। तन बदन पसीना हो रहा था, जैसे कमल की पङ्खड़ियों पर जल की बूँदें शोभा देती हैं या मखमल के बिस्तर में किसी ने चमकादर मोती टाँग दिये हैं।

लक्ष्मण राम के पैरों पर पड़े। महा प्रभू ने इनका माथा और सिर चूमा। कपड़े से पसीना पोंछा और छाती से लगाया।

तोड़ा मान अपमान गढ़, मारा शत्रु बली।
शीश नवाया धनी को, शान्ति सहज मिली॥

ग्यारहवाँ समुल्लास

लङ्का की दशा

रावण ने सुना मेघनाद मारा गया। नभ मण्डल के मेघ के नाद की धुनि चुप हो गई। सिर पीट लिया। मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरा।

मन्दोदरी सिर और छाती कूटने लगी। आज उसका महा सपूत बेटा पृथ्वी की शैया पर सो गया। छाती की ठण्डक जाती रही। कलेजा उछल उछल कर मुँह को आने लगा।

ममता मा की कठिन है समझे क्या जो कूर है।
घाव बेटे को लगे, मां का कलेजा चूर है॥

रोने और आंसुओं से मुँह को धोने लगी। सारे नगर में कुहराम मच गया। मेघनाद लंका की आंख और उसकी आंख की ज्योति था। ज्योति गई अँधेरा छा गया। आशा मिटी। निराशा ने आकर कलेजा दबाया।

दिन प्रतिदिन का दुख! राक्षस कुल का नाश हो गया। बसी हुई लँका उजड़ गई और उसका उजाड़ने वाला कौन था? रावण। रावण ने बसाया था और रावण ही ने उसे उजड़वा दिया। सब उसे बुरा भला कहने लगे।

रावण को चेत आया। सबको समझाने लगा। "यह रोना धोना कैसा! जो जीता है वह एक दिन मरेगा। जो मिला है समय पर बिछुड़ेगा।"

न कोई रहा है न कोई रहेगा।
हर एक अपने दुख सुख सहेगा॥
सदा कौन जग में रहा आके भाई।

यहां मृत्यु ऋषि और मुनी तक की आई ॥
मरा इन्द्रजीत जन्म फल को पाकर ।
वह था वीर योद्धा नहीं था वह कायर ॥
नहीं इससे बचता, कोई जीवधारी ।
प्रकृति का यह है अटल नियम भारी ॥
कुछ चिन्ता नहीं ! मैं कल स्वयं लड़ने जाऊंगा ।

मन्दोदरी पांव पर पड़ी। "मरने वाले मर गये तुम जीते रहो। मेरा सुहाग बना रहे। तुमने अपनी आँखों देख लिया कि राम नर नहीं हैं नारायण हैं। केवल नर लीला कर रहे हैं। सीता को लौटा दो। अटल राज करो। मेघनाद का शक्तीबाण निष्फल गया। उसका यज्ञ सिद्ध नहीं हुआ। शारीरिक और मानसिक बल में से कोई काम नहीं आया। अब भी चेतो। राम की शरण में आजाओ।"

रावण बोला-'अब चेतावनी का समय नहीं रहा।"

नगाड़ा बजा रण को छोड़ूँगा कैसे ।
मुझे भय न चिन्ता रही है किसी से ॥
नहीं मैं हूँ कायर नहीं डरने वाला ।
सुगमता से मैं हूं कहां मरने वाला ॥
नहीं पीठ रण से कभी फेरूँगा मैं ।
चढ़ा रण पै फिर कुछ नहीं देखता मैं ॥
मैं देखुँगा तपसी यह कैसे बली हैं ।
तू जा बैठ ! कायर की रानी नहीं है ॥
मेरी शक्ति क्या तूने जानी नहीं है ।

रावण साधारण निश्चर नहीं था। वेदों का टीकाकार पंडित ! नीति निपुण ! जीवन के कर्तव्य और मंतव्य का जानने वाला ! उसने सेनापति को बुला कर कहा—"सब राक्षस हथि-

यारों से सजे रहें। कल मैं स्वयं तपस्वी राजकुमारों का सामना करूँगा।"

बारहवां समुल्लास

पाँचवे दिन का घमासान युद्ध

सबेरा हुआ। राक्षस दल इकट्ठा किया गया। लड़ाई के बाजे बजने लगे। लंका का झंडा ऊँचा किया गया। अस्त्र और शस्त्र चमकने लगे। रावण की सजी सजाई सैना सन्मुख आनकर खड़ी हो गई। उसने उससे कहा—"यह सिर देने का समय है। जो शीश कटाने का प्रेमी हो, वह तो मेरे साथ चले और जिसे शरीर प्यारा है वह घर में रहे। जो वीर रस का प्याला पीना चाहे और वीर रस का कौतुक दिखाना चाहे तो उसे अच्छा अवसर मिला है। हांथ, पांव, सिर चील कौओं के समान गगन मण्डल में उड़ेंगे। रक्त मांस और हड्डियों की पृथ्वी की धूल के साथ वर्षा होगी। यह समय जीवन में कभी कभी आता है नित नहीं आता है। जो वीर हो मेरे साथ चले। जो कायर हो अपने घर चला जाय।"

नहीं काम कायर का सूरों के रण में।
अकेला भला लगता है सिंह बन में॥
जो रण में डटे घाव पर घाव खाये।
वही साथ में मेरे लड़ने को आये॥
दिखाये न वह पीठ वीरों के आगे।
करे खोलकर छाती वीरों के आगे॥
पड़े पग तो आगे पड़े रन में उसका।
बढ़े पग तो रण की विपति सहके उसका॥

जो तुम सिंह हो साथ में मेरे आओ।
जो गीदड़ बने जाओ घर लौट जाओ॥
नहीं वीर के तन पै है शीश उसका।
पक्का वीर है हो कन्धे शीश उसका॥
सहो मार और धाड़ सन्मुख रहो तुम।
न पीछे फिरो और न बातें कहो तुम॥
लड़ूँगा कटूंगा मरूंगा मैं रण में।
भिड़ूँगा, पड़ूँगा, गिरूँगा मैं रण में॥
लिया बैर और बैर का ऋण भरूँगा।
चला मरने को भार सिर पर धरूँगा॥
किसी का भरोसा न है आस मुझको।
है अपने ही भुज बल का विश्वास मुझको॥
राक्षसों ने उत्तर दिया :—
नहीं रण में हम पीठ दिखाने वाले।
सहेंगे परश, बांण और बरछे, भाले॥
नहीं हम हैं कायर न डर है किसी का।
न भय है न चिन्ता हमें बेबसी का॥
पसीना गिरा भूमि में जब तुम्हारा।
समझलो लहू फिर गिरेगा हमारा॥
न रोके रुकेंगे न मारे फिरेंगे।
सहस्र जान से अब हम लड़ेंगे॥
न जीने की साशा न मरने का भय कुछ।
हमें लालसा युद्ध के करने की है कुछ॥
बली हैं छली, कर से, बल से लड़ेंगे।
कभी बल, कभी अपने छल से लड़ेंगे॥
बने राक्षस अपनी रक्षा करेंगे।
जो सन्मुख हुआ उसकी यक्षा करेंगे॥

रावण बोला–"ऐसा साहस है तो फिर हमारे साथ चलो।"

नगाड़ों पर चोब पड़ी। उनका शब्द आकाश में गूंज उठा और रावण ने सज धज के साथ रण भूमि की तरफ पग बढ़ाया। उसके साथ चतरंगी सेना थी। भाँति भाँति के रथ और बाहन, भांति भांति के घोड़े उनमें जुते हुए!

चलते समय सामने से छींक हुई। सिर पर कौऐ चील मँडलाऐ। पशुओं के मुँह से उनका चारा गिरा। छिपकली तन पर आकर गिरी। नाना प्रकार के असगुन और कुसगुन हुए। रावण इनको देखकर हँसा।

सगुन हो कि असगुन नहीं मैं हूँ डरता।
नहीं काल और मृत्यु को देख फिरता।
लड़ाई करूँगा, भिड़ाई करूँगा।
समर वीरों से हाथा पाई करूँगा॥
कोई हो समर में जो सन्मुख में आया।
दिखादूँगा मैं युद्ध और रण की माया॥

पृथ्वी कांप उठी। धूल मिट्टी उड़कर आकाश में छा गई। राक्षस सिंहों के समान दहाड़ते हुए चले।

आज तप बल यद्ध बज्र का हो रहा है सामना।
पांव आगे को बढ़े उनका कठिन है थामना॥

बन्दरों ने रावण के रण भूमि में आने का समाचार पाया। इनको चैन कहां था! राम की दुहाई देते और राम लक्ष्मण की जय का शब्द करते हुए लहराते हुए समुद्र की सदृश आगे बढ़े। पहाड़, पत्थर, चट्टान उठा उठा कर मारने लगे। यही इनके हथियार थे।

राम आये। वह पैदल थे। रावण अपने रथ पर चढ़ा था। विभीषण को दुख हुआ। प्रेम और भक्ति का समुद्र उनके हृदय में उमड़ने लगा। कह उठे–"नाथ! आप पैदल हैं।

रावण रथ पर सवार है। ऐसे बलवान वीर पर आप कैसे विजय पायेंगे! वह तो सिर से पांव तक लोहे और चमड़े से कसा हुआ है। आप के पाँव में तो जूती तक नहीं हैं।"

राम हँसे—"जै विजय करने का रथ और ही होता है। रावण का रथ लकड़ी और लोहे के पुर्जों का बना हुआ है। मेरे रथ की तरफ तुम्हारी दृष्टि नहीं गई। सुनो! धीरज मेरे रथ का पहिया है। सत्य की ध्वजा उस पर फहरा रही है। बल, विवेक, शम, दम, परोपकार, दया, क्षमा, कृपा समता और साहस के दस घोड़े इसमें जुते हुए हैं। वृति, धृति के चमड़ों के तस्मों से वह बँधा हुआ है। संतोष मेरा कृपाण है। शुद्ध पवित्र, निर्मल और निश्चल मन मेरा धनुष है। यम, नियम के संयम उसके बाण हैं। मेरा कवच अभेद बाद और विप्र (ब्रह्मवेता) गुरु की पूजा है। इससे बढ़कर और कौनसा रथ होगा! जिसके पास ऐसा रथ हो, उसे संसार में कौन पराजय कर सकता है! विजय ऐसे ही रथ से होती है।"

राम के बचन सुनकर विभीषण सुखी होगये और आनन्द में मगन होकर पावों पर गिरे।

युद्ध आरम्भ हुआ। इधर रावण था उधर अङ्गद और हनुमान थे। उधर से हथियारों की वर्षा थी। इधर से पत्थर, चट्टान और पहाड़ उठा उठा कर प्रहार किया जाता था।

क्या आश्चर्य जनक संग्राम था। आकाशी देवता विमानों पर चढ़े हुये युद्ध देखने आये और सचमुच वह देखने ही के योग्य दृश्य था।

इधर रीछ बन्दरों ने पत्थर से मारा।
उधर बाण हथियार का था सहारा॥
इधर नाचते थे कटे सिर किसी के।
बगुले बने उड़ते थे धड़ किसी के॥

किसी को न सुध तन वदन की रही थी।
रुकी युद्ध करतव में वीरों की वृत्ती॥
किसी ने किसी को धराधर के पटका।
किसी ने किसी को दिया कर से झटका॥
मरा कोई और मरते, मारा किसी को।
गिरा कोई और गिरते, मारा किसी को॥

बन्दरों का खेल विचित्र था। पहाड़ के पहाड़ उठा लाए। रथों पर पटक दिया। सब टूट टाट कर लकड़ियों के ढेर बन गए। हथियारों की मार से यह नहीं डरते थे।

उधर कूदे उधर उछले उधर दौड़े इधर आए।
कभी रथ पर चढ़े नोंचा खसोटा मारकर धाये॥
डराया और धमकाया किसी को दांत से काटा।
किया उत्पात बहुतेरा, किया जो जिसके मन भाया॥
जो आये बातों में पत्थर गिरा घायल हुये निश्चर।
किया यों बन्दरों ने तंग उनको रण में रह रह कर॥

निशाचर भी बड़े योद्धा थे। यह युद्ध में प्रवीण थे। बन्दर फिर भी बन्दर ही थे। यह राम का प्रताप था जो इन्हें उनसे लड़वा रहा था। नहीं तो कहाँ वह कहाँ यह! दोनों दलों के लड़ाके मरे। बन्दर कम और निशिचर अधिक। रावण ने यह दशा देखी। रथ से उतर पड़ा। बाण चलाना प्रारम्भ किया। उसके एक एक बाण से कई कई रीछ बन्दर मर मर कर पृथ्वी पर गिरने लगे। यह चिल्लाये, "रावण हमारा काल बन कर आया है।"

लक्ष्मण सामने आये। "रीछ और बन्दरों को क्या मारता है। वीर है तो मेरा सामना कर!"

यह हँसा—"तुम्हीं को तो मैं देर से खोज रहा हूं। आओ! पुत्र के मारने का तुम से बदला लूँ।"

दोनों लड़ने लगे। एक के बाणों को दूसरे के बाण रास्ते ही में काट गिराते थे। किसी का दाव नहीं चलता था। लड़ते लड़ते रावण शिथिल हो गया। उकता कर ब्रह्म सर का प्रहार किया। वह बाण लक्ष्मण की छाती में आकर लगा। यह अचेत होकर पृथ्वी पर गिरे। रावण आकर उठाने लगा। वह चाहता था कि लंका ले जाये। लक्ष्मण का शरीर उससे न उठ सका। हनुमान ने दशा देखी। दौड़ते हुए एक घूँसा तान कर रावण की पीठ पर मारा। वह मूर्छित होगया। फिर संभला। हनुमान के बल की प्रशंसा करने लगा। यह बोले—"मेरे बल को धिक्कार है जो अब तक तू जीता बचा। दूसरा कोई होता तो उसकी हड्डी पसली चूर चूर हो जाती।"

रावण डरा कि कहीं फिर घूंसा न मारे। इन्हें छोड़ कर और तरफ बाण वर्षा करने लगा। हनुमान लक्ष्मण को राम के पास उठा लाये। राम ने दया की दृष्टि की। अपना हाथ उनकी छाती पर रक्खा। वह भले चंगे हो गये और ब्रह्मशर की शक्ति ब्रह्म लोक को चली गई। राम ने एक बाण मारा। रावण तो बच गया। उसका सारथी मर गया। दूसरे को रथ पर बैठा कर वह लंका चला गया।

तेरहवाँ समुल्लास

रावण का यज्ञ विध्वंस

सायंकाल को दोनों दल अपने अपने स्थान को चले गये।

विभीषण ने राम से कहा—"रावण गया है। वह घर में जाकर यज्ञ करेगा और इसके सिद्ध होने से वह अजय हो जायगा। फिर किसी के मारे न मरेगा। रावण में केवल शारी-

रिक बल नहीं है किन्तु मानसिक बल भी अधिक है और जब-जब उसे कठिनाई होती है वह मानसिक साधन से सहायता लेता है। उस समय उसका तेज बहुत बढ़ जाता है और फिर वह किसी को अपने सामने वीर नहीं गिनता। इसी यज्ञ बल के प्रताप से उसने सबको विजय किया है। बन्दर और रीछों को भेजिये। वह उसके यज्ञ को विध्वंस करदें।"

अंगद, हनुमान दिन की लड़ाई से थक गये थे। फिर भी राम की आज्ञा के सुनते ही उन्होंने निडर होकर रावण के महल में जाकर प्रवेश किया। संतरी और पहरेदारों ने रोका। इनको मार गिराया। किवाड़ें तोड़ीं, खिड़कियाँ उखेड़ दीं, खंभे उखेड़ दिये और उस जगह जा पहुंचे जहां वह समाहित चित;होकर बैठ रहा था।

महल में तो इनके आने से हलचल मच ही गई थी। फिर भी सब चुपचाप थे और रावण अपने ध्यान में था। उसे देख कर बन्दरों को क्रोध आगया। अंगद ने उसे कहा-"रण छोड़-कर निर्लज्ज घर में आकर छुपा और अब बगले के समान ध्यान लगा कर बैठा है। उठ! इस पाखंड को छोड़! लेकिन उठे कौन! वह तो चित्त की वृत्तियों के निरोध और एकाग्र करने में लगा था।"

अंगद ने लात मारी। इसने जगह नहीं छोड़ी और बन्दरों ने नोंचा खसोटा। फिर भी रावण ने इनकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उठाने लगे। वह पहाड़ के समान जमकर बैठा हुआ था। किसी के उठाये नहीं उठा।

यह खिसिया गये। अन्त में जब और उपाय कुछ न सूझा तब बन्दर मिल मिला कर स्त्रियों के केश पकड़ कर घसीटने लगे। कुहराम मच गया। रोना पीटना होने लगा। जैसे कोई मनुष्य जीतेजी अपनी नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता

वैसे ही वह अपने घरों की स्त्रियों के अपमान को सहन नहीं कर सकता। रावण उठा! बन्दरों ने उसके यज्ञ को विध्वंस कर दिया। वेदी नष्ट भ्रष्ट करदी। सामिग्री तितर बितर होगई। इनके सन्मुख आया। इनका मन्तव्य तो उसके अनुष्ठान भंग करने का था। उसका नाश कर दिया और वहाँ से चल खड़े हुये। इसने पीछा किया। बन्दर कूदे फांदे और वहां से चल दिये। यह घर को लौटा और अब पूर्णरूप से जीवन से निराश होगया।

चौदहवाँ समुल्लास

छटे दिन का युद्ध

प्रातःकाल फिर रावण अस्त्र शस्त्र से सजकर निकला। फिर असगुन होने लगे और गिद्ध मंडराते हुए वीरों के सिर पर उड़ उड़ कर बैठने लगे। लोगों ने समझाया "युद्ध को रोक दो।" इस ने एक की भी न सुनी और सुनता कैसे! योद्धा वीर था। वीरों में जगत-प्रसिद्ध था।

चला वीर रण को फिर पीछे, हटना नहीं है।
न ऐसा हुआ पहले अब भी नहीं है॥
मरे मारे मरने से है काम उसको।
इसी मरने में जग में है नाम उसको॥

आज्ञा दी "कुछ नहीं, डंके बजाओ।" युद्ध के बाजे बजने लगे। वह अपनी सेना को उसी अगले ठाट बाट से लाया। यह ताड़ बम के समान खड़े हो गये।

आकाश में देवता अपने हृदय मंडलों में प्रार्थना करने लगे —'देव प्रिय! देव प्रतिपालक! देव सहायक प्रभु! आपने

इस दुष्ट को बहुत खिलाया। खेल अपनी सीमा तक पहुंच गया। अब संतोष नहीं रहा। पृथ्वी दुख और क्लेश से बोझल होगई है। इस रावण ने उसे बैर, द्रोह और पाप का मंडला बना दिया ! किसी प्रकार अब जल्द इस अत्याचार का अन्त हो जाय। सहन शक्ति नहीं रही। त्राहिमान ! त्राहिमान !! त्राहिमान !!! सीता जी स्वयं प्रकृति का रूप, आपकी छाया और आपकी माया है। अत्यन्त दुखी हैं। समय आगया है कि उनके दुखों की समाप्ति हो ! दया हो ! दया हो !! दया हो !!!

घट घट के प्रेरक और घट घट के व्यापक राम ने देवताओं की बिनती सुनी, मुसकराये, उठ बैठे, जटा जूट को सँवारा, सिंगारा। कमरक, धनुष, बाण हाथ में लिया और वीर रस के स्वरूप बन गये। कमलाकार आँखों में लाल रक्त के डोरे आ गये। देवताओं ने इस रूप को देखकर उसके प्रतिबिम्ब को अपने अन्तर में रख लिया।

नमो सच्चिदानन्द अद्भुत अनूपम्।
नमो विश्व पालक नमो विश्व रूपम्
नमो दिव्य शक्ति, नमो योग युक्ती।
तुम्हारे ही चरणों में है भक्ति मुक्ती॥

दया कीजिये यह दया का समय है।
बहु बढ़ गया जग में द्रोह का भय है॥

इधर राक्षस भी ठठ कर सन्मुख आ गये। बन्दर और रीछ किलकारते हुए उनका सामना करने के निमित्त प्रस्तुत हो गये। तलवारें चमकीं। बिजली गरजी। हथियारों के कड़की ध्वनि प्रचण्ड हुई। आकाश में धूल उड़ने लगी। बाण चले। वह आकाश मंडल की घटा बन गये। दोनों ओर मार-धाड़ होने लगी। लड़ाके दो लड़ते हैं, हथियार चलाते हैं, घायल हो होकर पृथ्वी पर गिरते हैं। गिर-गिर फिर सँभलते और उठते हैं। जो नहीं

उठते दब कर कुचल जाते हैं। मैदान मुर्दों की लाशों से पटने लगा। लाल लहू की धार देखते देखते पृथ्वी पर पोट गई। और पानी की बाढ़ के समान इधर से उधर बहन और दौड़ने लगी। वीर सर का समुद्र उमड़ने लगा। उधर हाथ, पाव, सिर कट कट कर बाणों का पङ्ख लगाए हुए उड़े। इधर उनके पकड़ने के ध्यान में नाना रूप के चील और गिद्ध उड़ उड़ कर अपने पंजों में दबोचने लगे। पृथ्वी पर निशिचर और बन्दरों की लड़ाई थी। अन्तरिक्ष में पक्षियों की हाथा पाई हो रही थी और ऊँचे स्वर्ग में क्या हो रहा था? आकाशी विमानों पर चढ़े हुए देवता राम, रावण की लड़ाई का दृश्य देख रहे थे। संग्राम क्या था वीरता के नाटक का तमाशा था।

गिरा एक पट तो फिर दूजा आया।
लड़का गिरा उठ पड़ा चोट खाया॥
लड़ाई की थे खेलते वीर होली।
इधर एक टोली उधर एक टोली॥
धनुष को लिया कर में पिचकारी न्यारी।
बहा रक्त का रंग चहूँ ओर भारी॥
धनुष से निकलते थे बाण उनके ऐसे।
चले धार पिचकारी की बहके उससे॥
बदन पर पड़ा रक्त था और लहू था।
वही रंग के रूप का हू बहू था॥
हुई लाल पृथ्वी हुऐ लाल प्रानी।
कुछ ऐसी ही होली थी दो दल ने ठानी॥

लड़ने वाले मतवाले थे। होली में लोग भंग की गोली खाकर उन्मत्त हो जाते हैं। यहां पत्थरों के गोलों की चोट खा खाकर और बाणों की नोंकों से छिद छिद कर पागल हो रहे थे! लड़ाई की होली की धूम थी। होली के दिनों में लोग

अनाप शनाप गाली गलौज बकते हैं। यहाँ योद्धा वीर एक दूसरे को दुर्वचन कह कह कर ललकारते थे।

राम के बाणों की तीक्ष्ण नोंकों की चोट खा खाकर निशाचर वैसे ही धड़ाधड़ भूमि में गिरने लगे, जैसे होली मनाने वाले भंग धतूरा खा खाकर मिट्टी में लोटते रहते हैं।

थोड़ी ही देर में राक्षस सेना मृत्यु की शैय्या में अचेत और निर्जीव होकर सो रही। रावण अकेला रह गया। मन में सोचने लगा, "अब क्या करूँ! स्थूल युद्ध लगभग समाप्त हो गया। अब सूक्ष्म मानसिक माया के युद्ध की बारी आगई। राक्षसी माया (स्वरक्षा की मानसिक साइंस) से काम लेना चाहिए, जिसकी सहायता से एक एक प्राणी में सैकड़ों का बल आजाता है।

पन्द्रहवां समुल्लास

रावण का माया युद्ध (मानसिक साइंस की लड़ाई)

इन्द्र ने अपना रथ भेजा। मातली उसका रथमान होकर आया। राम मुस्कराये। रथ पर चढ़ बैठे। उधर भी रथ था इधर भी रथ था। राम दश रथ वाले के पुत्र थे और रावण में दस रथों के बल का मुख्य भाग था। वह स्थूल थे। यह सूक्ष्म रथ वाला था। इसी से वह दसमुख (दस मुँह वाला) कहलाता था।

स्थूल जब अचेत हो जाता है तब सूक्ष्म जागता है। जागृत के पीछे स्वप्नावस्था आती है। जागृत में स्थूल दस इन्द्रियां बहिर्मुखता से काम करती हैं और स्वप्न में यह मन में लय होकर अन्तर्मुखता से काम लेती हैं। इन दसों इन्द्रियों की

जड़ मन में रहती है और मन ही मुख्य खिलाड़ी बनकर इन्हें नचाता खिलाता रहता है।

सोने की लङ्का कहां है ? वह भू, भुवः स्वः से ऊँचे महर लोक में है। भू, भुवः, स्वः त्रिकुटी हैं। त्रिकुटी त्रिकूट पर्वत पर है। वह महत् तत्व है। चौथा पद यहाँ से आरम्भ होता है और वह मस्तिष्क में सूक्ष्म देह के रूप में है। इसी को मन कहते हैं। इसी महत् तत्व में सत, रज, तम की तीन कोट वाली शक्तियां रहती हैं।

शारीरिक बल काम न आ सका। राम के बाणों ने उसे तोड़ दिया। रावण मानसिक बली भी था और मन की माया का खेल जानता था। रथ पर बैठा हुआ राम के रथ के सामने आकर ललकारा—"तपस्वी ! अब आजा मेरे सामने। तूने जिन्हें मार गिराया है मैं उनके समान नहीं हूं। संसार जानता है कि मैं रावण हूं। सारे देवी देवता (दिव्य शक्तियां) मेरे आधीन हैं। तुझे घमंड होगया है। खरदूषण और विराध को मार दिया। कुम्भकरण और मेघनाद को व्याध (कसाई) बनकर हन दिया। आजा ! अब मुझ से भागकर कहा जाता है। आज ही तो मैं इन सबका तुझसे बदला लूंगा। अब तू मेरे पाले पड़ा है। मैं मारे बिना तुझे न छोड़ूंगा।"

राम हँसे-"क्यों रावण ! क्या वीर और योद्धा भी अपने मुँह अपनी बड़ाई करते हैं। अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना अनुचित समझा जाता है। संसार में नाना प्रकार के वृक्ष होते हैं। कोई ठूंठ ही ठूंठ रहता है। किसी में पत्ते ही पत्ते रहते हैं। कोई पत्ते और फूल देता है और किसी-किसी में पत्ते फूल फल सब ही आते हैं। अच्छा वह है जिस में सब होते हैं जैसे आम। कटहल में फूल नहीं फला आता है। फलने और फूलने वालों की बड़ाई है। अपने मुँह से अपनी

बड़ाई न कर। ज्ञानी इसे बुरा कहते हैं।"

रावण हँसा-"अरे क्यों न हो! तपस्वी बनकर आया है। मुझे ज्ञान शिक्षा देना चाहता है! चल अब मेरा सामना कर।"

यह कह कर रावण ने तीर मारना आरम्भ किया। उसके बाण आकाश मण्डल में काली घटाओं के समान छा गये। सूरज की धूप छिप गई। अन्तरिक्ष मण्डल में अँधेरा छा गया। राम ने एक अग्नि बाण छोड़ा। उसने सबको जला कर भस्म कर दिया। न सौ सुनार की न एक लुहार की!

रावण ने शक्ति बाण मारा। वह उनके अग्नि बाण का सामना न कर सका। जिधर से आया था उधर ही को लौटगया।

फिर चक्रों और त्रिशूलों की वर्षा की। राम के एक ही बाण ने इन सबको आ गिराया।

रावण खिसियाना होगया। सात बाण कस कस कर इनके सार्थी को मारे। वह राम राम करते हुए भूमि में गिर पड़ा। राम ने इस पर दया की दृष्टि डाली। वह उठ बैठा।

रावण बाण विद्या में महा प्रवीण था। उसने अनेक प्रकार के बाण चलाते हुए राम पर सर किये। राम के एक ही बाण ने इनको काट गिराया।

फिर राम ने अपने बाण मारे। इसके रथ के घोड़े और इसका सार्थी मर गया। उसी समय इसने दूसरा रथ मंगाया। राम ठहर गये। रथ आया। यह उस पर चढ़ा और फिर बाण मारने लगा। सब के सब निष्फल हुए।

तब रावण ने दश शूल (दस नोंकों वाला) हथियार मारा जो उसका मूल शस्त्र था। राम के बाण ने उसे भी काट गिराया और साथ ही उसका शिर भी कटा। कहने वाले कहते हैं कि रावण के दस सिर और बीस भुजा थे। रहे होंगे। हमारे अनुमान की पहुँच वहाँ तक नहीं है। यदि दस सिर भी

थे, तो वह एक ही बाण से कटे और कमल के समान आकाश में मँडलाने लगे। सारा शरीर रक्त से लाल हो गया। फिर दूसरा बाण चला। बीस भुजा भी कट कट कर गिरीं। अब वह रुन्ड मुन्ड होगया। धड़ ही धड़ रह गया।

देखने वालों ने देखा। समझा कि रावण मारा गया। यह भूल थी। नए सिर और नई भुजाऐं उसके धड़ में लग गईं। यह काटते थे वह कट कट कर गिर पड़ते थे। वह कटते और गिरते भी देखे गए और पल मारते ही नए नए उनकी जगह आगए। सिर और भुजाऐं आकाश मण्डल में उड़ने और फड़ फड़ाने लगे और नए नए उसी समय लगने लगे।

यह एक बाजीगर का तमाशा था। राम सच्चे बाजीगर थे रावण झूठा बाजीगर था। जैसे राम तो सच्चे हैं और यह संसार झूठा है। झूठ सच के सहारे ही रहता है। बिना सत के असत् रह कहाँ सकता है। सत आधार है और असत उसकी धार है। धार और आधार के समझ लेने से यह जगत् साक्षी रूप भास ने लगता है लेकिन साक्षी तो कोई कोई ज्ञानी ही होगा। सब के सब ज्ञानी नहीं होते।

साक्षी हों आखों वाले देखें इस लीला को तब।
पल के पल में समझें इसको और समझें इसको अब॥
'स' सहित है, 'आक्ष' आँखें, 'ई' है अभिमानी बना।
भ्रम में अज्ञान में अनुमान में रह कर तना॥
जब तना तन बन गया तन में यह मन बस गया।
बस के तब अभिमान इसमें आप रिस कर रिस गया॥
साक्षी होना कठिन है राम की कृपा बिना।
गुरु की जब संगत मिले आजाये तब साक्षीपना॥
साक्षी संसार में रहता है वह लम्पट नहीं।
है सुगम गुरु की दया से घाट यह औघट नहीं॥

रावण ने अनेक बार अपने शिर शिव भगवान् को काट काट कर चढ़ाये थे। वही अर्पण और समर्पण का संस्कार है जो राम के साथ खेल खेलरहा है। तुम इसे नहीं समझते! नहीं समझते न सही! क्या कभी स्वप्न में तमने अपने धड़ को सिर से कटा देखा है? वहां भी यह मन ही का खेल है। साधक की समझ में जल्द आता है। जो साधन सम्पन्न नहीं हैं वह अनुभव सम्पन्न कैसे होंगे!

सच्चे और झूठे बाजीगरों का सामना हुआ। दोनों दाँव-पेच खेलते हैं हारता एक भी नहीं और आंखों वाले रण भूमि में खड़े हुए यह लीला देख रहे हैं।

सोलहवां समुल्लास

रावण का माया युद्ध (लगातार)

सिर और भुजा कटते हैं और जुड़ते हैं। काटने वाला काटता है। जोड़ने वाला नये नए सिर ला लाकर लगा देता है।

यह लाने वाला, लगाने वाला और जोड़ने वाला कौन है? रावण का मन। मन के अतिरिक्त यह और कुछ नहीं है।

सृष्टि में इस मन तत्व की बड़ी महिमा है। इसीके बल से और इसीके सहारे और इसी से आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी उत्पन्न होते हैं। यही ब्रह्माण्ड और पिण्ड की रचना करता है। अनाड़ी समझता है कि आकाश सर्व व्यापक है। इस अज्ञानी को कोई कैसे समझाए। आकाश महाभूतों के मण्डल में व्यापक है। इसी में वायु, तेज, जल और पृथ्वी रहते हैं। यहां तक तो सच है और यह आकाश स्वयं कहां रहता है? यह आकाश मन में बसता है। इसकी उत्पत्ति मन से है।

मन से सब प्रकट हुए अरु जगत् मन की कल्पना।
मन ही में है नभ पना, वायु पना और जल पना॥
मन में अग्नि मन में पृथ्वी बस रही है सर्वदा।
मन ही से आधार सब का यह है मन में सर्वदा॥
मन है पानी मन है वायु और यह मन आग है।
मन में अमृत है बसा मन विषका काला नाग है॥
मन कभी ऊँचे चढ़ा और मन कभी नीचे पड़ा।
मन कभी उभरा कभी मिट्टी में आकर वह गड़ा॥
मन है चंचल मन है निश्चल योगियों से पूछलो।
मन के साधन की भी युक्ति बस उन्हीं से पूछ लो॥
मन है दाता मन है दानी और मन कंजूस है।
मन कभी राजा बना और मन ही मटिया फूस है॥
योग क्या है, मन का करतब ज्ञान मन की जान है।
मन को समझेगा वही मन की जिसे पहिचान है॥
दौड़ो, दौड़ो, दोड़ो, दौड़ो, दौड़कर जब थक गए।
मन जहाँ का था वहाँ अपनी दशा में मन रहे॥
मन की वृत्ती को किया जब योगियों ने रोकथाम।
इसके साधन से मिला तब राम और सीता का धाम॥
मन हुआ चंचल फँसा तब आके माया जाल में।
कैसे छूटे वह है जकड़ा जगत् के जञ्जाल में॥
गुरु की संगत जब मिले तब हाथ में आए यह मन।
गुरु की करुणा और दया ही समझो तुम सच्चा जतन॥
मन्त्र मूलम् वाक्य सतगुरु मूल पूजा गुरु पदम्।
मूल ध्यानम् गुरु मूर्ती मोक्ष पद गुरु केवलम्॥
जो नहीं मन को समझता सहज अज्ञानी है वह।
भ्रम में है वह अविद्या में है अभिमानी है वह॥

यह जगत् क्या है ? मनोराज है, कल्पित है मानसिक है और यह सदा मन के संकल्प विकल्प में रहता है ।

मन ही कारण, सूक्ष्म है और मन महा स्थूल है ।
बीज मन है पात फल और मन ही धड़ और फूल है ॥
मन नहीं समझा तो फिर रावण को क्या जानोगे तुम ।
राम की महिमा को कैसे कह दो पहिचानोगे तुम ॥

संसार तीन गुण वाला त्रिगुणात्मक है । गुणों का नाम सत, रज और तम । गुण किसी विशेषण को नहीं कहते हैं । लोग गुण की उल्था कोष देख करके मन्तव्य का नाश कर देते हैं और बात समझ में नहीं आती है । समझ में आई हुई बात भी दूर भागजाती है । मैं पहिली बार तुम्हें वह रहस्य समझाता हूं जो इनशब्दों में गुप्त है ।

सत नाम है सत्ता का । सत होने को कहते हैं । जिसमें होने का गुण हो वही सत और सत्ता (संस्कृत अस—होना) है और तम इसी सत की छाया है । सत प्रकाश है तो तम छाया मात्र है । कोई प्रकाश बिना छाया के नहीं होता । दोनों साथ साथ रहते हैं और इन दोनों के बीच में एक तीसरी दशा उत्पन्न होती रहती हैं जिसे रज कहते हैं । रज द्वन्द और द्वरूपा है, जिस में सत और तम दोनों का मेल रहता है, उनका रूप पहिले से बताते चले आ रहे हैं । फिर नीचे के चित्र में देख लो:-

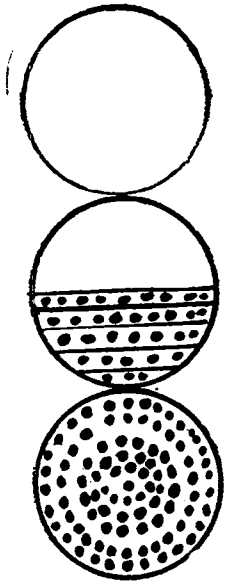

सत् में 'होने' और "है पने" की संभावना रहती है। तम में "छाया पना" होता है, और रज में सत् और तम दोनों प्रतिविम्बाकार होते हैं और इसी निचले भाग में संसार उत्पन्न हो होकर लय होता रहता है। अहंकार, बुद्धि, मन, चित्त इसी में हैं और यह जगत् उन्हीं का खेल है। यह रजोगुण मात्र है। अहंकार की दृढ़ता इसका रूप है।

यहां राम सत हैं और रावण रज है। इन दोनों के मुठ भेड़ का नाम रामायण अर्थात् राम रावण का युद्ध है, जिसके प्रधान कार्य कर्त्ता सब के सेवक रजोगुणी लक्ष्मण हैं। यह साथ न होते तो लड़ाई न होती।

इतना इशारा देकर हम अब आगे रूपक अलङ्कार कथा

प्रसंग में जाते हैं: —

सिर कटता है और जुड़ता है। सिरों के समूह से नभ मण्डल भर गया। रावण क्रोधातुर होगया। देखते देखते वह अन्तर्ध्यान हुआ। दृष्टि से ओझल! वह सब को देखता है उसे कोई नहीं देखता यह भी अहंकारी मानसिक भाव के योग बल की युक्ति थी और उसने बाण बरसाना आरम्भ किया। राम का रथ उसके बाणों से छुप गया। रीछ बन्दर और देवता यह दशा देखकर भयभीत हुये। उन्हें उस समय महा दुख हुआ।

देवताओं की विनती और प्रार्थना सुनकर राम को भी क्रोध आगया। एक मानसिक बाण कस कर मारा। अन्धेरा जाता रहा और रावण के कटे हुए सिर नभ मँडल में मँडलाते और ललकारते हुये दिखाई और सुनाई देने लगे।

कहां वीर अँगद कहां राम लक्ष्माण।
किधर नील नल और किधर हैं विभीषण॥
इधर आयें आकर लड़े आज मुझ से।
मेरा छीन लें, आके सब राज मुझसे॥
लड़ें खोल कर मन, लड़ें मुझसे आकर।
बचेंगे कहां अपने मुँह को छिपाकर॥

राम ललकार के शब्दों को सुन कर मुस्कराते रहे। एक बाण मारा। वह दिखाई दे गया। विभीषण राम के इधर-उधर रक्षा प्रबन्ध में लग रहे थे। रावण ने इनकी तरफ शक्ति बाण फेंका। वह बिजली के समान गरजता तड़पता और चमकता दमकता इन पर लपका। पैंतरा बदल कर यह राम के पीछे जा छपे। शक्ति बाण इनको आकर लगा। थोड़ी देर के लिये मूर्छित होगये। देवता यह दशा देखकर घबरा उठे।

विभीषण हाथ में गदा लेकर रावण पर पिल पड़े। "दुष्ट। अब भी नहीं मानता। शिवजी के बार बार सिर काट काट कर चढ़ाने से तुझे यह शक्ति मिली कि एक कटता है दूसरा जुड़ता है। राम का विरोधी! अब तू काल से नहीं बचेगा।"

दोनों में गदा युद्ध होने लगा। या तो विभीषण रावण के नाम से डरता था या आज रावण से लड़ रहा है! यह राम के बल का सहारा है। रावण और विभीषण! इन दोनों का सामना क्या! हनुमान पहाड़ उठाकर दौड़े। रथ और सारथी दोनों चकना चूर होगये। उसे भी चोट आई। वह नभमंडल की ओर उड़ा। वह आगे और हनुमान पीछे! इनको आते देखकर वह सन्मुख हुआ। इनको पूंछ पकड़ कर घुमाया और पृथ्वी पर पटक दिया। यह फिर सँभल कर उसके सामने आये। काजल के पहाड़ और सुमेरु पर्वत का सामना हुआ।

गदा दोनों के पड़े एक दूसरे पर,
झड़ी बिजली टकरा के पल पल बराबर।
झड़ी बिजली की थी कि वह फुलझड़ी थी।
कड़कती हुई बज्र की वह कड़ी थी॥

हनूमान लड़ते लड़ते घबरा गये। राम को पुकारा:—

दया कीजिये काल का सामना है।
कठिन रोकना और कठिन थामना है॥
नहीं मेरे बल बूते का है यह निशिचर।
यह निशिचर बली और निर्बल हूँ मैं बन्दर॥

राम ने एक बाण मारा। वह मूर्छित होकर गिरा। हनुमान उसके हाथसे बचे। वह फिर सँभला। थोड़ी देर के लिये अंतर्ध्यान हो गया। सबने समझा वह भाग गया। रावण और युद्ध भूमि से भागे! यह असम्भव था। उसने प्रकट होकर पाखंड की नई रचना की। समरस्थल में एक के बदले अनगिनत रावण

हो गये। जितने बन्दर उतने रावण! जितने रीछ उतने रावण! रावण आगे! रावण पीछे! रावण दांये! रावण बायें! ऊपर नीचे सारा मैदान रावण से भर गया। 'एकोऽहं बहु स्यामी' (मैं एक से अनेक हो जाऊँ) इसने इस बेद मंत्र का सहारा लिया। रावण साधन संयुक्त तो था, अनुभव संयुक्त नहीं था। यह उसमें कसर रहगई थी। नहीं तो राम और रावण दोनों अभेद होगये होते। वह इसी त्रुटि को पूरी करने में लगा हुआ था। राम उसे खेल खिला रहे थे और वह खेल खेल रहा था।

एक रावण ने संसार में हा हा कार मचा दिया था। अब यह करोड़ों रावण क्या जानें क्या क्या उत्पात न करें! सब के सब डर गये। रीछ बंदर डरे। देवी देवता डरे। शंकर जी युद्ध देखने आ गये थे। वह खड़े हुए हंस रहे थे। रीछ और बन्दर भागें भी तो कहां भागें! उनको भागने का रास्ता कहां था!

आगे रावण था दायें रावण।
पीछे रावण था बायें था रावण॥
नीचे रावण तो रावण था ऊपर।
कंधों पर और उनके था सर पर॥
दृष्टि ठहरी तो देखा रावण को।
आंखें फिरीं तो निरखा रावण को॥

मरता क्या न करता! उसे उलट पुलट कर मारने लगे। वह तो सब के सब मन के चित्र थे। एक रावण अपनी चित शक्ति और बुद्धि वृत्ति से अनेक रावण बन गया था। स्वप्न में तुम किसी को मारते हो। वह नहीं मरता। घूंसा तानते हो वह नहीं डरता। जागृत को स्वप्न और स्वप्न को जागृत बना लेना और जागृत में स्वप्न की मानसिक मूर्तियां बनाकर दिखा देना किसी किसी सिद्ध योगी का करतब है। एक छाया पुरुष

को जीवित कर लेना कठिन काम है और यहाँ तो लाखों करोड़ों छाया के रावण या मायावी रावण बन गये थे। यह मारने-मारते थक गये।

मरे वह नहीं मारने से किसी के।
डरे सहमे रावण के सब देखने से॥
जमा और जम कर वह ठहरा वहां पर।
न भागा न झिझका न ठिठका वहां पर॥

राम ने बन्दरों की बेचैनी देखी। हँसते हुए आकाश मंडल में अपनी मानसिक शक्ति के बाणों की धार बहा दी और सब के सब रावण यों लोप हो गये जैसे सूरज की किरणों के निकलने से बादल की काली काली घटायें देखते देखते छिन्न भिन्न हो जाती हैं।

तुम पूछोगे क्या यह सम्भव है? हम कहते हैं कि मानसिक संभावना के जगत में हर प्रकार की मानसिक रचना की संभावना है और समय आ रहा है जब मनुष्य ऐसा कर दिखायेगा।

अब एक ही रावण रह गया जैसे प्रलय की अवस्था में एक ब्रह्म ही ब्रह्म रह जाता है। "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ती।" और वह भी गुप्त रहता है। देवता प्रसन्न हुए। उनका भय जाता रहा।

लेकिन रावण गया कहाँ था! वह जहां का तहां ही था केवल इनकी दृष्टि में अदृष्ट हो गया था।

हुआ गुप्त दृष्टी में इनकी न आया।
प्रगट हो गया अपनी छवि को दिखाया॥
कभी जागते हैं कभी सोते हैं सब।
कभी हँसते हैं और कभी रोते हैं सब॥

मिला मिट्टी में नाज फिर उग पड़ा वह।
उसे तुमने खाया गड़ा और सड़ा वह॥
न आना न जाना यह है मन की रचना।
कठिन है महा मन के कौतुक से बचना॥

फिर रावण संग्राम भूमि में आकर धर धमका। देवता अभी तक वहां खड़े हुए थे। इसने इनको देख कर कहा—'यह मेरे बँधुए अभी तक यहां ही है! यह समझते हैं मैं एक से अनेक हो गया। यहां न कोई एक है न अनेक है। जो है वह है।''

यह कह कर वह आकाश मंडल की तरफ उड़ा। देवताओं में भगदड़ पड़ गई। डरना तो इनका स्वभाव है। देवता भागे। यह संग्राम के लिये आया। बाण चलाने लगा। राम ने भी अपने बाणों से इसके सिर और भुजाओं का काटना आरंभ किया। वही अगली सी घटनायें होने लगी।

राम की सहायता का बल पाकर अंगद, हनूमान, सुग्रीव आदि का मन बढ़ गया था। लगे उसे पकड़ पकड़ कर पृथ्वी पर पटकने! उसे क्या हानि पहूंची? कुछ भी नहीं। सिर कटते थे। नये नये आकर जुड़ जाते थे। हाथ कटते थे नये लग जाते थे। राम ने बाण बरसाये। बन्दरों और रीछों ने नोंचा खोंसा। पर्वत सिर पर गिराये। वह जैसे का तैसा था। फिर उसने भी धनुष बाण हाथ में लिये। बस कस सबको मारने लगा। अंगद, हनूमान, सुग्रीव, नल, नील आदि सब के सब मूर्छित हो हो कर गिरे। जामवन्त ने यह दशा देखी। क्रुद्ध हुए, झपटे, उसे पांव पकड़ कर उठा लिया और घुमाकर जो फेंका तो लंका में जाकर गिरा।

इधर इनकी मूरछा चली गई। शाम का बेला आ गया

था। सूरज डूब चुका था। छटे दिन की लड़ाई समाप्त हुई और राम की सेना अपने स्थान को लौटी।

सत्तरहवाँ समुल्लास

सीता का विलाप

इधर लड़ाई ठनी है। उधर सीता अकेली अशोक बन में बैठी हुई राम के मिलाप के दिन गिन रही है।

सूरज डूबने के समय त्रिजटा उसके पास आई। नमस्कार करके बैठ गई और युद्ध के समाचार सुनाने लगी।

वह बोली:—"राम के बाणों से, कुम्भकरण, मेघनाद और सारे निश्चर मर मिटे। राक्षस कुल का नाश हो गया। रावण ही रावण रह गया। वह रावण के बाण और रीछ बन्दरों के पत्थरों की चोट से नहीं मरता। कभी एक से अनेक हो जाता है, कभी एक का एक रह जाता है और सिर, भुजायें कटती हैं और नये नये अकार लग जाती हैं। मारते मारते सब थक गये वह जैसे का तैसा है। मरता नहीं जैसे अमर होकर आया है।

सीता रो पड़ी! "यह उसका दोष नहीं है मेरे काल का दोष है। इसी काल ने मेरी बुद्धि भ्रष्ट की। मैंने राम को मायावी हिरन मारने को भेजा। इसी काल ने मुझे भरमा दिया। मैंने लक्ष्मण का कहना नहीं माना। उनसे दुर्वचन कह दिये। उसी काल ने मुझे यहाँ लाकर कारागार में डाल दिया और राम के वियोग का दुख दे रहा है। न वह मरता है न मैं मरती हूँ। धिक्कार है मेरे इस जीने पर!"

त्रिजटा—"ऐसा न कहो! जब राम ने इतना कर लिया है तो वह रावण को भी मार गिरायेंगे। अभी उसे खिला रहे

हैं और देखते हैं कि वह कितने पानी में है ।"

सीता—"यह सब सही ! मैं तो मर रही हूँ । रावण मरता क्यों नहीं ! और राक्षसों के समान उसे भी अब तक मर जाना चाहिए ।"

त्रिजटा—"मैं इसका कारण जानती हूँ ।"

सीता—"वह क्या है मुझे भी बता दे ।"

त्रिजटा—"कारण यह है कि तुम जगत जननी और जगत जीवन हो ! रावण ने अपने ध्यान योग के बल से अपने हृदय कमल में तुम्हारे रूप की एक प्रतिमा बना रक्खी है । तुमको अपने मन में बसा रक्खा है । राम उसके हृदय को तुम्हारे प्रेमके कारण बाण नहीं मारते और वह तुम्हारा ध्यान नहीं छोड़ता । मरे तो कैसे मरे । मर्म स्थान में बाण नहीं लगते । सिर और भुजा काटे जारहे हैं । जब उसे थोड़ी देर के लिये तुम्हारे रूप की विस्मृति हो जायगी और हृदय में राम बाण लगेगा, उसी समय उसकी मृत्यु आ जायगी ।

सीता हँसकर बहुत प्रसन्न हो गई । "राम को मेरा स्मरण इतना है । क्या मैं इतना समर्थ नहीं रखती कि अपनी मानसिक आकर्षण शक्ति से रावण की मानसिक और हार्दिक प्रतिमा को खींच लूँ । वह मुझे भूल जाय और राम उसे मार गिरा दें । कल लड़ाई के समय मैं इसी का साधन करूँगी ।"

सीता के मन में इस विचार के आते ही उसका बांया अँग फड़कने लगा और वह समझ गई कि अब रावण के मरने समय आगया ।

त्रिजटा सीता को बोध देकर अपने घर चली गई और वह अकेली रह गई ।

अठारहवाँ समुल्लास

सातवें दिन का युद्ध

जामवन्त के पटकने में इतना बल लगा था कि आधी रात तक रावण मूर्छित रहा। जब मूर्छा गई, उसने अपने आपको छपरखट में पड़ा पाया। निशाचरों पर क्रुद्ध हुआ? "क्यों मुझे रण भूमि से उठा लाये? चलो! अभी चल कर राम से लड़ूँगा। रात का समय निशिचर (रात की चर्या करने वालों) के लिये परम उपयोगी है।" मन्त्रियों ने समझाया-"यह समय अच्छा नहीं है। तुम सुस्ता लो। नींद लेने से नया बल आयगा।"

वह लेट रहा। प्रातः काल जाग आगई। उठा और अस्त्र शस्त्र बदल कर फिर रण भूमि में जाने लगा। फिर कुसगुन हुए लेकिन वह अभय था। उसे मरने का किंचित मात्र डर नहीं था।

विपत आपति मेरे वीरो जो आये उसको आने दो।
लंका को ही जान अपनी उसे इस तन से जाने दो॥
नहीं रण से फिरूँगा, पीठ दिखलाते लज्जा है।
डराये लाख कोई इस घड़ी उसको डराने दो॥
मरूँगा, मरूँगा, मरने की चिन्ता अब नहीं मुझको।
न मानूँगा किसी की बात तुम उनको मनाने दो॥
मेरा है नाम रावण वीर रस की प्रतिमा हूं मैं।
यह अवसर हाथ आया है वीर रस को कुछ चखाने दो॥
कोई हो काल बन कर चाहे मेरे सामने आये।
उसे लड़ने के कौतुक को दिखाने दो दिखाने दो॥

योद्धा वीर रण-भूमि में आया। राम की सेना ने सुना। यह तो इसके भूके थे। उठे। पत्थर चट्टान और पहाड़ों की वर्षा

होने लगी। पृथ्वी इनसे पट गई। बचे खुचे राक्षस कुचल गये। रावण पत्थरों की मार से बचता रहा और उसके बाणों के प्रहार से रीछ और बन्दर घायल हो होकर मारने लगे। इनकी लाशों के एक जगह इकट्ठा होने से मुर्दों का टीला बन गया।

मारने वाले मार मिटे मरते गये खिपते हुये।
बोझ से बाणों के वह घायल हुये दबते गये॥

रावण ने सोचा—"यह लड़ाई ठीक नहीं है।" और वह कुछ देर के लिये अन्तध्यान हो गया।"

रण-भूमि में उसी घड़ी विचित्र मानसिक रचना हो गई। सिंह, चीते, भेड़िये, चरख और कई प्रकार के भयानक जीव-जन्तु सामने आगये और बन्दरों को पटक पटक कर मारने लगे और उनका गला दबा दबा कर लहू चूसने लगे। "मारो कितने पत्थर मारते हो। राम बन्दर और रीछों की सेना लेकर आये। रावण अनेक जीव-जन्तुओं को अपने मानसिक बल से उत्पन्न करके उनका सामना कर सकता है।" फाड़खाने वाले पशु दहाड़ने और चिंघाड़ने लगे। झपटे और कितने बन्दरों को झपट कर कुचल कुचल कर उन्हें खाने और चीथने लगे। इनका सामना रीछ और बन्दर क्या कर सकते थे!

पृथ्वी इनके लहू से लाल होगई। रक्त की बाढ़ रण-भूमि में पोटने और इन्हें अपनी बारी पर डुबाने लगी। यह लड़ाई थी कि प्रलय का सामना था! कोई क्या कह सकता था! कितने बैताल और पिशाच, डाकिनी, शाकिनी रुधिर पीने की इच्छा में त्रिशूल कृपाण और खड़ग हाथों में लिए हुये इन पर झपटने लगे। इस भयानक दृश्य और अद्भुत युद्ध का सामना न करते हुये राम की सेना मूर्छित होगई। लक्ष्मण इतने बली थे वह भी रण भूमि में गिर कर अचेत हो गये। यही दशा अङ्गद, सुग्रीव की भी हुई।

राम लँगूरों से घिरे हुए रावण की युद्ध लीला को देख रहे थे। यह जानते थे कि राक्षसी माया बहुत प्रबल है। यह मन माया का मानसिक युद्ध है। खिलाने का मन्तव्य यह था। धनुषबाण उठाया, लगे बाणों की वर्षा करने! उनका ध्यान केवल रावण की तरफ था। इसके सिर और हाथ कट कट कर नए नए लग जाते थे।

विभीषण पास आए। "प्रभो! इसके हृदय कमल के अनाहत चक्र में अमृत है और इसके नाभि कुण्ड के कमल में भी उसी अमृत की अधिकता है। बाण इन मर्म स्थानों में लगे तो यह मरेगा। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।"

राम मुस्कराए—"पहिले इस अधिकता के साथ शपाशप बाण मारे कि रावण संभल न सका। इसका चित्त इष्ट केन्द्र को छोड़ बैठा। राम ने उसे विस्मृत पाकर एक अग्नि बाण उसके हृदय को मारा जिसने अनाहत चक्र को बेधता हुआ नाभि चक्र के अमृत कुण्ड को सुखा दिया और दूसरे बाणों ने उसके सिर और भुजाओं को काट कर गिरा दिया। वह अचेत होकर पृथ्वी पर तो गिरा लेकिन राम को लड़ाई के लिए ललकारता ही रहा। बन्दर और रीछ उसकी लाश पर चढ़ बैठे। जब तड़पता हुआ तन ठंडा होने लगा उसका तेज मुँह से निकला और राम के मुँह में समा गया।

उसके मरते ही नभ मंडल में देवता स्तुति गाने और फूल बरसाने लगे।

जै परम दीन दयाल राम कृपाल सुख सागर महा।
जै प्रणत पाल, अमोघ बल, जै अतुल बल, जैजै सदा॥

उन्नीसवाँ समुल्लास

सियापा और राज तिलक

मन्दोदरी रावण का सिर और हाथ देखते ही व्याकुल हो गई। वह जानती थी कि इस युद्ध का क्या परिणाम होगा! राम विमुख का अंत ऐसा ही होता है जैसा रावण का हुआ। वह बहुत समझदार स्त्री थी। रावण अपने विजय विषय के नशा में रात दिन चूर रहता था। घर पर नहीं रहता था। मन्दोदरी चाहती थी कि वह कभी कभी इसके साथ भी रहे। वह इसकी नहीं सुनता था। मन्दोदरी ने पूछा तुम क्यों इतना दूर दूर रहते हो? रावण ने उत्तर दिया—"लड़ना भिड़ना, विजय पराजय करते रहना मेरी प्रकृति है। मैं बैठे ठाले नहीं रह सकता। मुझ में रजोगुण शक्ति प्रधान है।"

मन्दोदरी ने कहा—"तब मुझसे लड़ा करो। देखूं, तुम मुझे जीत सकते हो या मैं तुम्हें हरा देती हूँ।"

वह बोला—"बहुत अच्छा!"

मन्दोदरी ने चतुरंग का खेल बनाया जिसमें चार प्रकार की सेना रहती है। हाथी, घोड़े ऊँट और प्यादे! और राजा दीवान अलग अलग हैं। इसी चतुरंग खेल का पारसी नाम शतरंज है और यह मन्दोदरी के मस्तिष्क से निकला हुआ है। दोनों खेलते थे। कभी इसकी हार होती थी कभी मन्दोदरी की। कभी वह जीतता था कभी यह और उनका एक खेल (बाजी) महीनों तक चलता था। दोनों दाव पेच और समझ बूझ में बराबर थे। रावण उसके इस खेल से बहुत प्रसन्न रहता था और वह उसे इस प्रकार अपने माया जाल में फँसा रखती थी जैसे रामायण का युद्ध राम रावण की लड़ाई और रामायण की कथा का छंद प्रबन्ध अद्वितीय है। जब से यह सृष्टि हुई उस

समय से लेकर अब तक किसी चित्रकार लेखक ने ऐसी ग्रन्थ रचना नहीं की। वैसे ही मन्दोदरी का चतुरंग खेल भी अब तक अद्वितीय है। ऐसे खेल की रचना आज तक किसी से नहीं हुई। दोनों का जोड़ा बराबर का था।

पति के सिर और भुजाओं को कटा हुआ देखकर इसे जो दुख हुआ उसका वर्णन किसकी लेखनी या वाणी से हो सकता है!

दुख हुआ और दुख था यह अध्यात्मिक और मानसिक।
था यह आधिदैविक तो आधिभौतिक भी था अज्ञानतक॥
तीन तापों से दुखी होकर गई संग्राम में।
लाश को देखा पती के रो पड़ी कुहराम में॥
हाय रावण! क्या हुआ तुझको पड़ा मिट्टी में है।
तू तो जोधा वीर था, अब काल की भट्टी में है॥
सबको जीता जप किया लेकिन न जीता आपको।
राम से होकर विमुख तूने बढ़ाया पाप को॥
राजसी वृत्ति तेरी, रावण! कहां अब सो गई।
मैं कहा करती थी प्यारे! तेरी बुद्धि खो गई॥
मेरे कहने को न माना, राम को नर जानकर।
तू न आया रास्ते में ज्ञान कर पहिचान कर॥
दे दे सीता को कहा, मैंने न मानी मेरी बात।
काल के पंजे में फंस कर खेलता था दाव घात॥
मर गई संतान तेरी, मर गई और कट गई।
आज लंका उनके मुर्दा लाशों से है पट गई॥
राम से लड़कर मरा और जीते जी मारा मुझे।
मैं अधोगति में पड़ी हूं देखले प्यारे मुझे॥
क्या हुई चतुरंग सेना? है कहाँ अब धन तेरा।
धन को क्या रोऊं! बतादे है कहां तन मन तेरा॥

मिट्टी का पुतला बना था मिट्टी में आकर मिला।
हाय रावण! क्या किया और तुझको यह क्या होगया॥

मन्दोदरी का विलाप सुन कर रीछ और बन्दरों के कलेजे छलने लगे। राम नर नहीं थे नारायण थे। नर लीला कर रहे थे। इनका हृदय भी फटने लगा। विभीषण को बुलाकर कहा– "रावण की लाश जल्द उठाकर ले जाओ। शास्त्रों की विधि से उसका क्रिया कर्म कराओ यह संसार काल की लीला है। जीना मरना प्राकृतिक है। इसे कौन रोक सकता है। सृष्टि स्थिति और प्रलय के प्रवाह का प्रबन्ध ऐसाही चलता रहता है।"

और साथ ही हनुमान, सुग्रीव और अंगदादि को आज्ञा दी—"लक्ष्मण के साथ जाओ। वह विभीषण का राज्यतिलक करेंगे। मैं चौदह वर्ष तक नगर में न जाऊँगा। पिता की आज्ञा ऐसी ही है। प्रकृति पुरुष के लिये है। राज खाली नहीं रह सकता।"

विभीषण और रीछ बन्दरों ने मिल मिलाकर सब काम राम की आज्ञानुसार कर दिया। विभीषण लंका का राजा हुआ और मन्दोदरी* उसकी रानी हो गई। लंका में कोई

---

*नोट—पंच कन्याओं में कुन्ती, द्रोपदी, मंदोदरी, तारा और अहिल्या की गिनती है। सीता का नाम तो लोग यों ही पंच कन्याओं में अपनी भूल से मिलाते हैं। वह स्त्री जाति का निर्दोष आदर्श है पंच कन्याओं के विषय में यह श्लोक है।

अहिल्या द्रोपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचकन्या पठे नीतिम्, महा पातक नाशनम्

तारा दो हैं। एक सुग्रीव की स्त्री दूसरी बृहस्पति की! कौन जाने इन दोनों में से कौन तारा पंच कन्याओं में है।

महाभारत में स्त्री जाति का प्रशंसनीय भूषण गान्धारी है।

राजा हो, रानी मन्दोदरी ही रहेगी! किष्किन्धा के सिंहासन पर कोई बैठे उसकी अर्द्धांगिनी तारा ही बनेगी यह कहावत हम हिन्दुओं में सहस्रों वर्षों से चली आती है मन्दोदरी और तारा पंच कन्याओं में से हैं। इनको कोई बुरा नहीं कहता। यह पवित्र स्त्रियां समझी जाती हैं।

विभीषण ने लंका के राज अधिकारियों को वस्त्राभूषण दिये और रीछ बंदर तिलक का उत्सव मनाकर विभीषण के साथ राम के पास आये और नमस्कार किया।

यह संसार है। संसार प्रवाह, धार, लहर और बाढ़ के कहते हैं। यहाँ क्षण क्षण परिवर्तन होता रहता है। जो आज है कल न रहेगा। जो कल है परसों न रहेगा। यहां किसी बात का ठिकाना नहीं है।

कोई हँस रहा है कोई रो रहा है।
कोई अपने आपे को भी खो रहा है॥

किसी का सयापा मचा देखते हो।
कहीं ब्याह उत्सव रचा देखते हो॥
किसी का कोई साथ देता नहीं है।
कोई संग कुछ अपने लेता नहीं है॥
कहां आज लंका कहां आज रावण।
रावण मरा उस जगह राजा विभीषण॥

रामायण में स्त्री जाति का अलौकिक प्रतिष्ठित आदर्श सीता है। आज तो मैं तुम्हें सुमेरु पर्वत के शिखर पर बैठा कर राम और सीता के गुणानुवाद का गीत गद्य और पद्य के रूप में सुना रहा हूं। अवसर पाने पर महाभारत का रहस्य भी सुनाऊंगा।

सवा लाख पोते थे एक लाख बेटे।
सभी काल की आके शैया में लेटे।
न लंका है वह अरु न रावण है राजा।
हुये काल माया के यह सब ही खाजा॥
किसे चाहते हो किसे मांगते हो।
रहा कौन भागो जो तुम भागते हो॥
गुरू को भजो उसके चरणों में गिरकर।
नहीं कोई दौलत है इसके बराबर॥

बीसवां समुल्लास

संक्षेप रहस्य दर्शन

रावण मरा, कुम्भकरण मरा। विभीषण को राजतिलक ला।

कौन मरा? कौन जिया? कौन क्या हुआ? यह सब राम लीला थी। सीता का बन्धन कटा। वह कब बन्धन में । यह सब रहस्य है।

रावण नाम है रज का। जिसके अहंकार, काम, क्रोध, भ, मोह पांच विकार हैं। लोहा लोहे से कटता है, विष का ाव विष के सेवन करने से जाता है। आग का जला हुआ ग की सेक से शान्ति पाता है। औषधि संशोधन मात्र लिये होती है।

कुम्भकरण नाम है तम का। जो अंधकार, तमाकार और ाकार है।

विभीषण नाम है सत का जो सत्ता मात्र है।

इनके नामों पर विचार करो। नाम ही विचार के ताले कुंजी है। फिर इनके रूप को देखो।

नाम और रूप ही को जगत कहते हैं।

नाम विचार है और रूप साक्षात्कार है। रूप देखा जाता है। यह देखने की वस्तु है। स्थूल है। नाम स्मृति और विवेक का उत्तेजक है जो सूक्ष्म है।

बिना नाम के रूप नहीं और बिना रूप के नाम नहीं। दोनों साथ साथ चलते हैं। दौनों ही से काम निकलता है।

नाम के सुनने से सबको रूप का आता है ध्यान।
रूप को देखा तो पाया सत्य का ठौर और ठिकान॥
नाम में और रूप में अनुमान है और ज्ञान है।
ज्ञान और अनुमान ही से सद्गति निर्वाण है॥
सुन लिया और सुनके देखा, चितको तब निश्चय हुआ।
बिन सुने देखे किसी का कब कभी संशय गया॥
नाम पाया तूने गुरू से नाम से अब देख रूप।
तब समझ में आयेगा कुछ रूप नाम का भेद अनूप
जब नहीं देखा सुना फिर मानता है किसको तू।
जब नहीं देखा सुना फिर जानता है किसको तू॥
देखने ही की है भक्ती देखना है मूल सार।
नाम के सुनने से केवल जागता है सत विचार॥
पोथियों को पढ़ के भूला तत्व को पाता नहीं।
ऐसा प्राणी भ्रम से सत पंथ में आता नहीं॥
क्या सगुण है क्या अगुण है गुणमें गुण को जानले।
भक्ति होती है सगुण की मेरी सुन कर मानले॥
जो नहीं समझा सगुण को शब्द का झगड़ा मचा।
फँस रहा वाणी के बन में बानी का रगड़ा मचा॥
किसने भक्ती की अगुण की कैसी वह भक्ती हुई।
देखने सुनने से आई, गुण की तब शक्ती मिली॥

क्या अगुणका नामहै जब गुण नहीं फिर नाम क्या।
जब सगुण समझा नहीं, फिर पायेगा सतनाम क्या॥
युक्ति पर देता है युक्ती, युक्ती का परमाण है।
अपना कुछ अनुभव नहीं अपना न उसको ज्ञान है॥
तत् पद और त्वम् पद में गुण है तत्व कहते हैं इसे।
तत्वको ले अब समझ फिर न कुछ संशय रहे॥
तत्व में तत् त्वम् है, तत्वम् गुणहै गुण को अब समझ।
मुँह से क्या निर्गुणहै कहता गुण सगुणको अब समझ॥
रगड़े झगड़े में पड़ा बातों में अटका भूल कर।
पढ़ के पोथी होगया अभिमानी मन में फूल कर॥
है वही अभिमान जड़ अज्ञान की और भ्रम की।
दूर जब अभिमान हो फिर सूझेगी कुछ मरम की॥
खोल कर कहता हूं बातें सुन हो जब अधिकार कुछ।
बातों के पकवान क्या खाता है गहले सार कुछ॥

न राम को जाना, न लक्ष्मण को पहिचाना। न भरत को माना, न शत्रुहन के अर्थ को छाना और चला रामायण पढ़ने को!

यों ही न रावण की समझ आई, न कुम्भकरण के सार की गम पाई। विभीषण क्या है उसे भी नहीं जाना।

रामायण चित्र दिखाती है और चित्रकूट को दिखाती हुई वह त्रिकूट में लाती है, जिस पर लंका बसी हुई थी या बसी हुई है। इस चित्रशाला को देखकर विचार करता तो कुछ तो समझ में आता। दोनों दीन से गये पांड़े हलुआ मिला न मांड़े। वर्तमान लंका में त्रिकूट पहाड़ है या नहीं हम नहीं जानते। लंका जाते जाते रह गये नहीं जा सके। लेकिन रामायण में त्रिकूट (तीन चोटियों वाला) पर्वत है। योग की परिभाषा में

इसका नाम त्रिकुटी भी है। सत, रज, तम तीनों गुणों की यह कुटी कहलाती है। रामायण ने अलंकार रूपक में सत को विभीषण, तम को कुम्भकरण और रज को रावण ठहराया।

सत तो सत ही है, जो है, रहे और कल्प तक जिसका अभाव न हो वह सत है और इसी सत की छाया तम है जो सत के सहारे रहती है और इस सत से जो धार क्षण क्षण बहती और निकलती रहती है उसका नाम रज है।

सत (संस्कृत-सत) होना।

तम (संस्कृत-तम) झकोले खाना, झकझोला जाना।

रज (संस्कृत-रंज) रंग देते रहना।

सत है, तम है और रज है। सत ऊपर है, तम नीचे है और रज बीच में है।

सिर है पेट है और हृदय है। सिर से धार हृदय से होती हुई निकलती पेट में जातीहै। उसे हिलाती डुलाती और झकोले देती रहती है। तुम डमरू हो। तुम्हारा शरीर शिव (काला) का डमरू है जिसे वह बजाते रहते हैं। एक सिरा सिर है दूसरा पेट है और गर्दन से लेकर हृदय तक वह स्थल है जहां और जिसे हाथ से पकड़ा जाता है।

धार आती है धार जाती है।
धार बहती हुई समाती है॥
सांस को देखो आई और गई।
आके और जाके वह कहीं ठहरी॥
जागे तब सांस देह में आई।
सोऐ स्वप्न में वह जा लौटी॥
ठहरी जहां जाके वह सुषुप्ती है।
दो प्रगट तीसरी यह गुप्ती है॥

जागना, सोना, नींद में जाना।
तीन गुण हैं यह इनको पहिचाना॥
जागे जब ब्रह्म पुत्र कहलाये।
सोये तब दिव्य अवस्था में आये॥

नींद में लय हुये तो भूत हैं हम।
शिव के अवधूत गुप्त दूत हैं हम॥

बिभीषण (संस्कृति "वि-" पहिले, "भी-" डरना, भय खाना) सीधा साधा राम का भक्त जो सत स्वरूप है।

रावण (संस्कृत "रो" चिलाना, रोना, शोर मचाना) उत्पाती और दुखदाई यह रज स्वरूप है।

कुंभकरण, (संस्कृति "कुंभ" घड़ा, "करण" कान) बड़ा कान वाला, बड़ा सुनने वाला, प्रभाव का लेने वाला, मूढ़-आलसी यह तम स्वरूप है।

इन तीन गुणों और उनके इन लंकाबी और मायाबी स्वरूपों पर विचार करो। तुम सहज में समझ जाओगे कि रामायण के चतुर चितेरे चित्रकार बाल्मीकि ने कैसे बिचित्र चित्र-खींच खींच कर तुमको दिखाये हैं। इस एलबम के चित्र कोश को विचार की दृष्टि से देखो और उस पर मनन करो।

मेघनाद (बादलों का घनघोर शब्द करने बाला) रजोगुणी रावण के सब से सुयोग्य पुत्र को रजोगुणी लक्ष्मण ने मारा जिनकी रजोगुणी माता सुमित्रा थी।

हनुमान (अहँकार) सुग्रीव (काम) अंगद (क्रोध) नल(लोभ) नील (मोह) ने अहंकारी, कामी, क्रोधी, लोभी, मोही राक्षसों को मारा जो महा रजोगुणी थे। रजोगुणी पुरुष, निज स्वार्थी, अपनी ही रक्षा करने वाला, राक्षस कहलाता है।

अपनी ही रक्षा में रहे वह राक्षस हुआ।

अपना ही अर्थ साधे वही स्वारथी बना ॥
है कामी क्रोधी लोभी अहंकारी राक्षस ।
इसमें नहीं विचार है क्या कीर्ति क्या यश ॥
लोभी हैं काम लोभ के करता है हर घड़ी ।
इसकी प्रकृति अपनी ही रक्षा की है बड़ी ॥
निश्चर है चरता और विचरता है रात को ।
भूल और भरम में डालता है पाँच सात को ॥
धोके की टट्टी को बनाता है वह अपनी आड़ ।
इस बल से करता रहता है रातों को मारधार ॥

जामवन्त (जामुन के समान काला) तमोगुणी रीछ है । इसने उन रजोगुणी राक्षसों को मारा जिनमें तमोगुणी अंश की अधिकता थी ।

राम सत हैं । आधार मात्र हैं । तम कुम्भकरण और रज रावण इनकी सेना से मरे और इन्होंने सत्याकार बिभीषण को अभय करके लंका का राज दिया । जैसे परशुराम ने क्षेत्र (शरीर) के सब विकारी अङ्ग वाले क्षत्रियों को अनेक वार नाश करके ब्राह्मणों को उनका राज दिया, जिन्हें राज का अधिकार नहीं था । वह रजोगुणी और राक्षसी वृति वाले नहीं थे । वह केवल ब्रह्म सत्ता के अधिकारी थे । इसलिये राजकाज को नहीं संभाल सके । उस समय इसी लीलाकी आवश्यकता थी ।

राम का ब्रह्म अवतार महा विचित्र और सोचने के योग्य है । मन के तीनों गुण (अङ्ग) सत, रज, तम को साध कर एकाग्र किया । सत् विभीषण, रज चंचल बन्दर, तम रीछ की त्रिगुणात्मक सेना इकट्ठी करके लंका को विजय किया । कौन मरा और कौन जिया इस पर विचार करना तुम्हारा काम है । जो मरे राम में समाये क्योंकि उन्हीं के अंश थे । जो जिये उनके साथ रहे ।

यह लीला थी और खेल लीला थी सारी।
अनुपम, अनोखी, निराली, नियारी॥
पढ़ो पढ़ने वालो सुनो सुनने वालो।
विचारो, गुनो, सोचो कुछ गुनने वालो॥
यह है सार का सार मैंने बताया।
चरित राम का तुम को अद्भुत सुनाया॥
यह है तत्त्व, तत् राम और त्व है ध्यानी।
यही लक्ष और वाच की है निशानी॥
है "तत् त्व" में सब तत्व हो तत्व वेत्ता।
न पड़ भ्रम में काल धोखा है देता॥

तृतीय भाग

पहिला समुल्लास

सीता मिलाप

राम ने हनुमान को बुलाया। वह आए। आज्ञा मिली कि अशोक वाटिका में जाओ। सीता को रावण के मरने और लंका के पराजय होने का समाचार पहुंचाओ। वह तड़पती और विलपती होगी।

यह गए। सीता से मिले। दण्ड प्रणाम किया। सीता ने उन्हें पहिचान लिया। 'कहो, राम लक्ष्मण और सेना की कुशल सुनाओ।" यह बोले-"रावण मरा। राक्षस कुल का नाश हो गया। विभीषण को कृपालु राम ने लंका का राज दिया। दोनों भाई कुशल हैं और आप की कुशल चाहते हैं।"

सीता—"कुशल तो राम के चरण-कमल में रहती है। मैं

उनके चरणों से दूर पड़ी हूं। इसी एक बात से मेरी दशा को समझलो! अब ऐसा यत्न करो कि उनका जल्द दर्शन मिले।'

जो अब के साईं मिलें सब दुख आँखों रोय।
चरणों ऊपर शीश धर कहूँ जो कहना होय॥
तड़पत विलपत रात दिन, जैसे बिन जल मीन।
राम के चरणों से छुटी, सीता हो गई दीन॥
दरस परस सत्कार कर, अँखियों मध्य बसाय।
राम चरण रत हो रहूं, इच्छा यही रहाय॥
आंखों अन्तर आव तू, आंख झपि तोहि लूँ।
ना मैं देखूँ और को, ना तो हि देखन दूँ॥
आँखों की कर कोठरी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डालकर, राम को लूँ मैं झिकाय॥
बिरह आग तन में तपे, अङ्ग सकल अकुलाय।
राम मिलै ना मैं सुखी, हाड़ माँस सुलगाय॥
बिरह जलन्ती की दशा, जाय कहो हनुमान।
सीता के प्रभु राम हैं, राम जान और प्रान॥

सीता स्त्री थी। महा कोमल हृदय वाली! आँखों से आंसू बह निकले।

हनूमान ने ढाढ़स दिया। "धीरज धरो। मैं जाता हूं। राम की आज्ञा लेकर तुमको यहां से आज ही ले जाऊँगा।"

हनूमान ने छलांग मारी। कूदते फाँदते पूंछ उठाये राम के पास पहुँचे। "भगवन! सीता तपस्विनी के रूप में अशोक की छाया में बैठी हुई आपके चरण-कमल के दर्शनों के लिये तड़प रहीं है।"

राम—'फिर जाओ। सीता को आदर सत्कार के साथ ले आओ। युवराज अंगद और विभीषण को भी अपने साथ ले जाओ।"

यह सबके सब उसी समय गये। विभीषण ने दासियों को समझाया। "सीता जगत माता है। इन्हें निहलाओ धुलाओ। सन्तुष्ट करो। वह आप महल में गये। बहुमूल्य भूषण वस्त्र लाये। सीता को संवारा सिंगारा। सोने की पालकी मंगाई। सीता प्रसन्न होकर बैठी। विभीषण, हनूमान, अँगद अर्दली में साथ साथ चले। राम के समीप पहुँचे। रीछ और बन्दर उन्हें देखना चाहते थे। राम ने कहा—"सीता को पालकी से बाहर करो। बन्दरों से क्या पर्दा है। यह सब मेरे और सीता के पुत्र हैं।" वह बाहर आई। सबने हाथ बाँध कर दूर से उन्हें प्रणाम किया।

राम ने सीता से कहा—"सुन्दरी! तू समझती होगी राम स्त्री आसक्त हैं। यह झूठ है। तू अशोक बाटिका में रह कर आई है। मैं उदासीन वृत्ति का मनुष्य हूँ। मेरे और सबके सामने अग्नि में प्रवेश कर।"

दासियों को सुनकर दुख हुआ। वह रात दिन उसकी सेवा सत्कार में रहती थीं और सीता के गुण कर्म और शील स्वभाव को जान गई थीं। रो पड़ीं। सीता को भी क्लेश हुआ। लक्ष्मण से बोलीं—"भाई! तुम यश के पात्र हो। लकड़ियां लाओ, चिता बनाओ और उसे आग देदो।"

लक्ष्मण राम के सच्चे सेवक थे। मुँह, कान, आंख बन्द रखते थे। इनका खुलना राम की आज्ञा के आधीन था।

सेवक सांचा राम का, सेवा में परवीन।
सेवा की आधीनता, बिन सेवा चितदीन॥
आंख कान मुँह मूँद कर, सेवा करे जो कोइ।
सहजे भवसागर तरे, भक्ति बीज मन बोइ॥

राम ने इशारा किया। लक्ष्मण ने चिता संवार कर आग दे दी। लकड़ियां जलने लगीं। ज्वाला फूटी और सहस्रों जिह्वा

से वह सीता को अपनी गोद में आने के लिये निमंत्रित करने लगीं। सीताने झुककर राम को नमस्कार किया और फिर हाथ जोड़कर आग में कूद पड़ी। कूदते समय सबको सुनाकर कहा—"मैं मन, बचन कर्म से राम की दासी थी। मन बचन कर्म से राम की दासी हूँ और मन, बचन, कर्म से राम की दासी रहूँगी। अग्ने! तू पुरोहित और पर हितकारी है, साक्षी दे कि मैंने झूठी बात नहीं कही है और अग्नि माता ने सहस्रों भुजाओं को फैलाकर सीता को अपनी गोद में ले लिया और वह जलती हुई आग उसके लिये शीतल जल की झील बन गई, अग्नि के अँगारे कमल के फूलों के आकार में खिल गये। पहिले चाहे सीता लंका की अशोक बाटिका में न रही हो, आग उसके लिये अब सच्ची अशोक बाटिका बन गई और सहस्रों मुख से उसके गुणानुवाद का गीत गाने लगी।

धन्य सीता, धन्य तू है धन्य है महिमा तेरी।
कौन नारी जग में है जिससे मैं दूँ उपमा तेरी॥
सत है तू सतमत है तू, सत चित है सत्यानन्द है।
नारी भूषण, नारी सच्ची, सच्ची आनन्द कंद है॥
दक्ष के घर जाके उसके यज्ञ में कूदी उमा।
जल गई, जल बल गई क्यों तू लगी जलने रमा॥
तू पतित पावनि है तेरा सब नाम ले तर जायगे।
नाम तेरा लेके भक्ती भाव का फल पाँयगे॥
तू सती से बढ़के है सच है तू सच्ची सती।
सतमती. सतदायनी है आप तू है सदगती॥
तू नहीं जल सकती आकर इस दहकती आग में।
शोभा भागी तू सुहागी, शोभा तेरी मांग में॥
तेरे चरणों से लगी और आग तक यह तर गई।
तू कमलनी शोभा धामी आग के ऊपर हुई॥

आग की वायु की जल की, पृथ्वी की माता है तू।
तुझसे सब प्रकट हुए, आनन्द की दाता है तू॥

आग जल रही है, अङ्गारे भड़क रहें हैं, चिनगारियां चटक रही हैं, रीछ और बन्दर उनकी गर्मी से दूर दूर फिरते घूमते हैं। लक्ष्मण की आँख तो बन्द हैं। वह केवल राम रूप के दर्शन के समय खुलती हैं और सब लोग राम के सहित इस अलौकिक दृश्य को देख रहे हैं। एक दो तीन घन्टे बीत गये। सीता अभय अशोक और अनिराश हो कर आग की गोद में शान्ति के साथ बैठी हुई है और राम के मुख को देख रही है। न वह आज्ञा देते हैं और न सीता बाहर आती है,

परीक्षा हो चुकी। यह भी एक दृश्य था। जाने से पहिले सीता आग में प्रवेश कर गई थी। रावण केवल उसकी छाया को हर लेगया था। रावण मर गया और मारा गया। अब उसके घर में इस छाया के रहने की आवश्यकता नहीं रही। आग में छुपी हुई सच्ची सीता आग से निकल पड़ी और राम की आज्ञा की भृकुटी देखकर वह उनके बायें अङ्ग में आकर विराजमान होगई। देवता विमान पर चढ़ चढ़ कर पुरुष प्रकृति के इस जोड़े पर फूल बरसाते हुए आए।

तुम कहोगे ऐसा नहीं हो सकता। आग बिना जलाये हुए नहीं रह सकती। मैं कहता हूं ऐसा संभव है। तुमने अभी तक न राम को जाना न सीता को पहिचाना। अपनी समझ के अनुसार तुम सच कह रहे हो। मैं तुम्हें झुठलाना नहीं चाहता लेकिन अपनी समझ के अनुसार मैं भी झूठा नहीं हूं।

न तेज आग में है जो जलाए सीता को।
न वायु में है बल जो सुखाए सीता को॥

कहां है पानी वह गहरा डुबाए सीता को।
न पृथ्वी है जो मिट्टी में मिलाए सीता को॥
सती है सीता यह सीता है राम की शक्ती।
बनी है सीता उसी में है जगत की सृष्टी॥

दूसरा समुल्लास

देवताओं का राम के पास बधाई देने आना

लोग कहते हैं मनुष्य स्वार्थी है। मनुष्यों से अधिक स्वार्थी देवता दिखाई देते हैं और उन सब में सबसे महा स्वार्थी इन्द्र है। जब देखो इसे अपने इन्द्रासन के छिन जाने का भय लगा रहता है। जहां कोई जप तप करने लगा इन्द्र इसके छलने के लिये अपसराओं को भेजता है कि वह उसके काम में विघ्न डालें और वह बल पदवी वाला न बनने पावे। इसी ने राम के राजतिलक के समय सरस्वती को प्रेरणा की। वह निर्दोषी मन्थरा के सिर पर चढ़ बैठी और उसी का आसरा लेकर इसने कैकयी की बुद्धि भ्रष्ट कराई, जिसका परिणाम राम का वनवास हुआ।

इन्द्र रावण से डरता था कि जब तक उसने राम के हाथों मेघनाद और कुम्भकरण के युद्ध को नहीं देख लिया था तब तक अपना रथ भी उनके पास नहीं भेजा था।

इन्द्र रावण के मरने पर बड़ा सुखी हुआ और सब देवताओं से पहिले उनके पास आया और उनकी स्तुति की। अपना भाव प्रकट किया और धन्यवाद दिया। उसकी स्तुति उसके स्वार्थीपने का प्रमाण है।

जैराम रूप अनूप अद्भुत, राम अगम अनाम तुम ।
जैराम सुन्दर कामवत, जै राम शोभाधाम तुम ॥
महिमा तुम्हारी कौन गावे, किसमें वाणी बुद्धि है ।
पतित पावन तुम हो तुम में, बल है सिद्धी शक्ति है ॥
सुर सहायक देव नायक, सच्चे हितकारी हो तुम ।
जै तुम्हारी हो कि सबके, पूरे उपकारी हो तुम ॥

इन्द्र के पीछे और देवताओं ने भी आ आकर उनके चरण कमल की बन्दना की:—

राम तुम हो सर्व व्यापक, सर्व रक्षक सर्वदा ।
तुम दया सागर हो दीनों, पर तुम्हारी है दया ॥
मारकर रावण को हम सबको, अभय तुमने किया ।
तम से रक्षा है हमारी, रक्षा करते हो सदा ॥
जै तुम्हारी हो, तुम्हारी जै रहे संसार में ।
आपकी दृष्टी रहे सुर, देव के उपकार में ॥

इनके पीछे राम के बाप दशरथ स्वर्ग लोक से आये । अब दशरथ दशरथ नहीं रहे थे और न वह दशरथ थे । स्थूल से सूक्ष्म हो गये थे और उनका शरीर दिव्य शक्तियों से भरपूर हो गया था । मुक्ति अभी तक नहीं मिली थी क्योंकि राम के दर्शन की प्रबल इच्छा थी । राम लक्ष्माण सीता इनके चरणों में गिरे और इन्होंने आशीर्वाद दिया— 'ऐ राम ! तुम सगुण ब्रह्म हो । मेरे घर में आकर जन्म लिया और मुझे तार दिया । सुपुत्र केवल तुमको कहा जा सकता है । पुत वह नर्क है जिसमें सन्तान हीन प्राणी ढकेले जाते हैं । जो इन्हें तारे और नर्क में पड़ने से बचावे वह पुत्र (पुत-तर-पुत से तारने वाला) है । मैं तुम्हारी नर लीला को समझ सकता हूँ ! तुम्हारी जै हो !"

राम ने कहा—"जो कुछ हुआ आपके पुण्य प्रताप ही से

हुआ है। दसमुख के मरने में देवताओं की भलाई थी और यह आप ही के आशीर्वाद से हुआ।"

दशरथ को राम के दर्शन से ज्ञान हो गया। बोले—"जब तक यह दशमुख, दसशीश और दसग्रीव रावण नहीं मरता तब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार से मुक्ति नहीं मिलती। मैं मुक्ति का अभिलाषी नहीं हूं तुम्हारे सगुण रूप ही का उपासक बना रहूं।"

राम मुस्करा कर चरणों में गिरे और दशरथ आशीर्वाद देकर राम धाम को चले गये।

फिर राम ने इन्द्र से कहा—"रीछ और बन्दरों ने मेरी सहायता की है और मेरी सेवा में अपने प्राण त्यागे हैं। तुम अमृत की वर्षा करो। यह फिर जी उठें।" इन्द्र अपनी सनसनाती हुई बिजली की शक्ति का प्रेरक हुआ। मरे हुए रीछ बंदरों में नई जान आ गई। अमृत तो दोनों दलों पर बरसा लेकिन राक्षस नहीं जिये। बन्दर और रीछों ही के मुर्दा तनों में जान आई।

राक्षस का अर्थ अब तुम जान गये हो। जो केवल अपनी रक्षा के लिए जिये वह राक्षस और जो निशि (रात) में चर (चर्य्या) करे वह निश्चर है। राम ने इन्हें मारा। इनका प्रभाव छिन गया। इन में राम का प्रभाव भर गया। मरते समय वीर भाव नहीं रहता। राम ने इनको अपना धाम दिया और यह मुक्त हो गये।

बन्दर और रीछ का अर्थ अब तुम जान गये हो। बताना आवश्यक नहीं रहा। यह दिव्य शक्तियों वाले देवता थे। देवता न मुक्त होते हैं और न मुक्ति का प्रश्न आता है। बन्धन और मुक्ति का भाव केवल मनुष्य जाति में है। जो बन्धन न चाहे

उसी के लिए मुक्ति है और जो बन्धन का भाव ही नहीं रखता उसके लिए मुक्ति नहीं।

यह सब हो चुका। सबके अन्त में शिव भगवान पधारे, नमस्कार और प्रणाम किया। राम से कहने लगे—'यह इच्छा हो कि अयोध्या में जब आपका तिलक उत्सव हो, मैं वहां आऊँ।' राम मुस्कराये और उनकी मुस्कराहट में शिवजी के प्रश्न का उत्तर था।

राम और शिव का रहस्य भी अब तुमसे छिपा हुआ नहीं है। राम और शिव साथ साथ रहते हैं। दीपक के नीचे ही अँधेरा रहता है। दीपक अँधेरे का प्रकाशक और अँधेरा दीपक के प्रकाश का सहायक है। कहने को यह अलग हैं। वास्तव में अलग भी हैं और मिले जुले भी रहतेहैं। राम के प्रकाश का आधार यह शिव ही हैं। सेतबन्ध रामेश्वर के मन्दिर के प्रसंग में लिंग और अर्घ की कुछ व्याख्या करदी गई, शेष गुरु की कृपा से मिलेगा।

शिव द्रोही मम दास कहावै। सो नर सपने मोहि न भावै॥

राम ने रामेश्वर लिंग (स्मार्क) की स्थापना के समय यह वाणी कहीं थी।

तीसरा समुल्लास

लंका से कूंच

शिवजी के अन्तर्ध्यान होते ही विभीषण रामके पास आये। प्रार्थना की—"भगवन्! आपने मच्छर को हाथी बना दिया। आपकी अपार दया धन्य है! अब यह विनती है कि लंका को सुशोभित कीजिये और मुझे कुछ सेवा का अवसर प्रदान कीजिये!"

राम—"यह सब सच है। मेरा लंका जाना असम्भव है। अब मुझे अयोध्या को लौट जाना चाहिये। चौदह बरस में दो तीन दिन शेष रह गये हैं। समय पर न पहुँचूंगा तो भरत को जीता जागता न पाऊँगा! अब वह प्रबन्ध होना चाहिए कि मैं वहाँ चला जाऊँ। यहां रहना अच्छा नहीं है।"

विभीषण—"फिर इतनी मेरी भी प्रार्थना स्वीकार की जाये कि आपकी सेना की ही मैं कुछ सेवा कर सकूं। रहा अयोध्या जाने का विचार! मैं कल आपको वहां पहुंचा सकता हूँ।"

राम—"भाई! तुम्हारा कोष मेरा कोष है। मैं अपने में और तुम में कोई भेद नहीं समझता। तुम रीछ और बन्दरों का जिस प्रकार चाहो सत्कार करो। मैं रोकता नहीं। हां, अब यहां से जल्द कूच होना चाहिए।"

राम की सेना लंका में गई। विभीषण ने उनको खिला पिला कर सन्तुष्ट किया और सारे रीछ और बन्दरों को छै छै भूषण वस्त्र सहित भेंट किये। यह लाल पीले बनकर प्रसन्नता पूर्वक सेना स्थल में आये। राम को नमस्कार किया। राम इन्हें देखकर मुस्कराये। विभीषण ने रावण का सजा सजाया पुष्पक (फूल के समान हल्का) विमान मँगाया। वह चील के सदृश्य मंडलाता हुआ आया और जो सामिग्री रास्ते के लिये आवश्यक थी उसमें भरली।

राम ने सारे रीछ और बन्दरों को सामने बुलाकर कहा—"तुम सब के सब मुझे लक्ष्मण के समान प्यारे हो। तुमने इस धर्म युद्ध में मेरी सहायता की। तुम न होते तो लंका का जीतना मेरे लिये कठिन काम होता। तुम्हीं ने अपनी जानें दीं। शत्रुओं को मार गिराया। मैं तुम्हारा उपकार मानता हूं। अब मेरी यह इच्छा है तुम अपने बाल बच्चों में जाकर रहो। घर

छोड़े हुये बहुत दिन होगए। वह दुखी होंगे। उन्हें जाकर सुखी करो! यह ध्यान रक्खो कि मैं मन से तुम्हारे साथ हूँ। तुमको और तुम्हारे उपकारों को नहीं भूल सकता।

यह कड़ा पत्थर उठाया छाती पर मेरे लिए।
तुम मेरे साथी बने और जान पर खेला किए॥
तन दिया मन दिया और शीश तक अर्पा मुझे।
जाओ अब घर पर रहो, जगशत्रु से होकर अभय॥
मैं तुम्हारे साथ हूं और तुम भी मेरे साथ हो।
चाहे जैसी हो अवस्था शांती से तुम रहो॥

बन्दर और रीछों ने सिर झुकाकर उत्तर दिया:---

राम सोभाधाम तुम हो, तुम में युक्ती सदगती।
है तुम्हारे ही चरण में, सच्ची आनन्द शान्ती॥
मण्डलाकारम् अखण्डम्, केवलम् सत्यम् सदा।
व्याप्तम् चरअचर मध्यम व्यापकम् नित्यम् सदा॥
तुम यहां हो तुम वहाँ हो, गुप्त और प्रगट हो तुम।
घट में हो तलपट में हो, ओघट में हो जगघट हो तुम॥
तुम हो निर्गुण ब्रह्म, धारा रूप जग उद्धार को।
तारने आए सगुण के, भाव में संसार को॥
जैसी हमको आज्ञा हो हमको वह स्वीकार है।
तुम हमारे हम तुम्हारे, तुम ही से उपकार है॥
चाहे दक्षिण में बसें, चाहे उत्तर में बसें।
तुम हमारे साथ निशदिन, कैसे जग के दुख सहैं॥
सच्चिदानन्दम्, अनूपम्, अद्भुतम् मुनिनायकम्।
अद्वीतीयम्, एकम्, एकम्, जीवजन्तु सहायकम्॥
भक्ति दीजै पावनी, चरणों में अपने लीजिये।
दास जब अपना बनाया, अपनाही अब कीजिये॥

राम ने कहा - "एवमस्तु! ऐसा ही होगा।"

हनुमान बोले —"मैं चरण-कमल को छोड़ कर अब आप से अलग नहीं रह सकता।"

राम ने कहा—"तो चलो। लंका देखी। अब चल कर अयोध्या को भी देखो।"

विभीषण, अङ्गद, सुग्रीव और जाववन्त मन में दुखी हुये। राम ने इनको ढाढ़स दी। यह बोले—"आपके राजतिलक के उत्सव देखने की प्रबल इच्छा है।"

राम ने कहा—'तुम्हारी इच्छा अधूरी कैसे रह सकती है। मैं इच्छा रहित हूँ। जब तुमने मेरी इच्छा पूरी की तो तुम्हारी इच्छा भी पूरी होगी।"

पूरे से पूरा मिला, सब विधि पूरा होय।
पूरण काम हो सर्वदा, नहीं अधूरा कोय॥
बन्धे से बन्धा बंधा, सब विधि रहा बँधाय।
सेवा कर निरबन्ध की, पल में दे वह छुड़ाय॥

चढ़ बैठो विमान पर! दुखी न हो। मैं तो सदा तुम में बसता हूँ। तुम इस रूप की और लीला देखना चाहते हो। अच्छा यह भी सही!

ढूंढ़ते हो किसमें मुझको मैं तुम्हारे पास हूँ।
मैं न जलका थलका बासी मैं तुम्हारी साँस हूँ॥
राम तन में है तुम्हारे राम है मन में बसे।
राम हूं मुझ में रमो मैं ही धरन आकाश हूँ॥
भक्ति श्रद्धा भाव से जो ध्यान करते हैं मेरा।
यह समझलें मैं ही उनका प्रेम और विश्वास हूं॥
रम रहा हूँ राम रमता बन के रमता राम हूँ।
मैं ही सुख हूँ शान्ती मैं शान्त हूँ सुख राश हूँ॥
सर्व सर्वाधार सर्वा व्यापकम्, नित्यम् सदा।
मैं सुमेरु की शिखा मैं मान सर कैलाश हूं॥

यह कह कर राम पुष्पक विमान पर बैठे। उनके बायें अंग सीता बिराजमान हुई। शरद ऋतु के दिन थे। फिर भी धूप में बहुत गर्मी थी। मन्द मन्द, सुगन्ध, निर्मल और शीतल वायु बह रही थी। लक्ष्मण पंखा हाथ में लिये हुए इस मनोहर जोड़े के पीछे बैठे। हनुमान ने नीचे पावों के पास अपना आसन जमाया। सुग्रीव, अंगद, जामवन्त और विभीषण दायें बायें शोभायमान हुये।

सार्थी ने कल दबाया। वह क्या था कोई क्या कह सकता है! वह समय और था। उस समय की अवस्थायें और थीं। माया (साइंस) की दशा और थी। वह विद्यायें अब नहीं रहीं। काल ने उन्हें भुलवा दिया। वह लोप हो गईं। हां! इतना तो पता चलता है कि वह भारी भरकम नहीं था और न उसमें कल के पुर्जों की अधिकता थी। फूल के समान हल्का था और यही कारण है कि वह पुष्पक कहलाता है।

पुष्पक इन्हें ले उड़ा। वह धर छोड़ कर अधर में आये। पृथ्वी नीचे थी यह ऊपर थे। लङ्का कपोत के रूप में दिखाई दी और यह सनसनाता और फरफराता ऊपर ऊपर आकाश मार्ग से उड़ता हुआ चला।

चौथा समुल्लास

राम का सीता को अनेक स्थान दिखाते चलना

चला! चला!! चला!!! उड़ा! उड़ा!! उड़ा!!! पुष्पक राम और राम के साथियों सहित उसी प्रकार मंडलाया जैसे गिद्ध और चील आहार से पेट भर कर आकाश में मँडलाते हैं। सीता ने ऊपर से नीचे दृष्टि की। झांई छुटी। सिरमें चक्कर

आने लगा। राम ने समझाया नीचे दृष्टि न जाये। दायें बायें दूर से देखो और जब सीता ने ऐसा किया वह शान्त हो गई।

राम ने उँगली का इशारा किया। "वह देखो, त्रिकूट पर्वत के त्राकार शिखरों की चोटी पर लंका बसी हुई है।"

सीता ने देखा। वह नगर सूरज की धूप में चम चम कर रहा है। आंख उसकी जगमगाहट के तेज को नहीं सहन कर सकती। चका चौंधी आती है।

सीता—"लंका का नाम न लो। मुझे इस नाम से घृणा आती है। मेरा काल यहाँ ले आया था। मैंने क्या क्या संताप सहे हैं, मेराजी ही जानता है।"

राम—"यह स्थल रण भूमि है जहां बन्दर और राक्षस खड़े थे।"

सीता—"तुम्हारे साथ कई नील सेना थी। इस छोटी सी जगह में वह कैसे समाई होगी! राम हंसे।

पिन्ड में ब्रह्मान्ड है ब्रह्मान्ड में रहता है पिन्ड।
जीव जन्तु अनेक उनका भार सहता है पिन्ड॥

पिन्ड में लाखों करोड़ों नील जीव हैं सब बसे।
जैसे गूलर में हैं मच्छर और पिस्सू सब धँसे॥

पिन्ड में भुवनान्तर लोकान्तर हैं सब मरे।
पिन्ड की सम्भावना का कोई क्या वर्णन करे॥

सीता—"सच है।"

राम—"यह वह जगह है जहां लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा था। वह मर कर जिये और इसी जगह में मेघनाद को लक्ष्मण ने मार गिराया।"

सीता—"लक्ष्मण ऐसे भयानक शत्रु के हाथ से बच गये। मैंने उन्हें जीता जागता देखा। यह मेरा सौभाग्य है।"

राम—"मैंने कुम्भकरण और रावण को इस स्थान में मारा था।"

सीता–"रावण का नाम न लो। उस पापी नाम का सुनते ही मेरा कलेजा काँप उठता है।"

पुष्पक उड़ता हुआ समुद्र के मध्य में आया। एक लकीर पानी में दिखाई दी।

राम–"यह सेतु है जो रीछ और बन्दरों ने बनाया था।"

सीता—"यह बड़ा कठिन और विचित्र काम था।"

राम—'यह शिव का मन्दिर है जो मैंने स्मार्त्तार्थ यहाँ स्थापना किया था। यह यहाँ जुग जुगान्तर खड़ा हुआ रावण के युद्ध का स्मरण कराता रहेगा।"

सीता ने हाथ जोड़कर मंदिर को प्रणाम किया।

पुष्पक उड़ रहा है। जहां जहाँ राम कुटी बना बना कर ठहरे थे सब सीता को दिखाते गए। फिर विमान दण्डक बन में आया। राम उतर पड़े। अगस्त आदि ऋषियों से मिले। सबको दण्ड प्रणाम करके प्रसन्न किया। रास्ते में कहीं ठहरना नहीं था। ऋषि मुनियों से आज्ञा लेकर फिर विमान पर चढ़े। चित्रकूट पर्वत पर आए। अत्रेय अनुसुइया और कई ऋषियों से समागम करते सीधे प्रयागराज के निकट उड़कर आए। सीता ने पृथ्वी पर काली सी लकीर देखी। पूछा—"यह क्या है? राम ने उत्तर दिया—"यह जमुना नदी है। सीता ने हाथ जोड़ा। इसी से मिली हुई पूरब की तरफ गङ्गा बह रही थी। जहां इन दोनों का संगम है, राम ने उसे सीता को दिखाया। सीता ने गङ्गा को दूर और ऊपर से प्रणाम किया। प्रयागराज तीर्थ को देखा, जिसके सेवन करने से महा पातक नाश होते हैं। प्रणाम किया। त्रिबैनी का ऊपर ही ऊपर से

दर्शन किया। वहाँ से अँगुली का इशारा करके अवधपुरी के राज की सीमा दिखाई। सब ने नमस्कार किया। जन्म भूमि जननी के समान होती है। दृष्टि के पड़ते ही उनका मन उछल पड़ा। उमंग और प्रेम से भर गया।"

उदय सौभाग का तारा हो जब पाए तू अवध।
है धन्य प्राणी रहे और बसे जो आए अवध॥
अवध में रह के करे काम वह अवध का सदा।
कभी न भूल के भी ध्यान से भुलाये अवध॥
अवध है स्वर्ग अवध राम धाम सुर पुर है।
अवध को जिसने तजा करता है वह हाय अवध॥
अवध में आके अवध का हुआ न जो साथी।
है रोना जनम का उसको उसे रुलाऐ अवध॥
अवध अवध है अवध से न रूठे नर नारी।
जो इसकी महिमा को माने उसे मनाये अवध॥

तीनों ने गंगा में स्नान किया। घाट वाले गंगा पुत्र ब्राह्मणों को दान दिया। राक्षस और बन्दर भी न्हाये। जब सब जल पान कर चुके, राम ने हनुमान से कहा—"चौदह बरस के अवधि में एक दिन शेष रहा है। थोड़ी देर के लिए आज मैं यहां ठहरता हूं। तुम ब्राह्मण के रूप में भरत के पास जाओ। मेरे कल आने का समाचार पहुंचाओ। कल मैं प्रयाग से कूच करके अयोध्या को चलूँगा।"

हनुमान तो उधर गये यह इधर भरद्वाज मुनि के आश्रम में आये। दंडवत प्रणाम किया। ऋषि ने छाती से लगाया। कुशल पूछी 'आसन दिया' फूल, फल, पत्र जल भेंट किया।

फिर विमान पर बैठे। गंगा के तट पर आये। निशाद ने समाचार पाया। सिर के बल दौड़ा हुआ आया। नाव और डोंगी का प्रबन्ध कर लाया था। उसकी अब आवश्यकता नहीं रही थी। राम ने उसे दूर से देखा। विमान को नीचे लाने की आज्ञा दी। उतर पड़े। निशाद दौड़ा हुआ आकर चरणों से लिपट गया। राम ने उसे उठाकर छाती से लगाया। लक्ष्मण भी उस से मिले! सीता को उसने दूर से नमस्कार किया। राम ने कुशल पूछी। निशाद ने उत्तर दिया:—

कुशल चरण कमल में है यह चरण कुशल का धाम है।
है चरण में सुख शान्ति इस चरण में विश्राम है॥
है कुशल राम का नाम राम के नाम में है कुशल सदा।
हैं राम कुशल पुरभूप भजूँ मैं उनको सर्वदा॥
दरश कुशल के रूप का जब राम! मुझ को मिल गये।
सब कुशल मंगल है मुझे सुख पाके दुख संकट मिटे॥
मैं कुशल, सब है कुशल, इत है कुशल उत को कुशल है।
कौशलांग राम नमामिते! कौशलांग राम नमामिते।

राम इस अपढ़, गँवार और सीधे साधे मनुष्य की स्तुति वाणी सुन कर गद गद होगये। यह स्वाद उन्हें ऋषी मुनी और देवताओं की स्तुति में भी नहीं आया था क्यों कि यह रामका भक्त था और इसकी बातें भक्ति के मीठे रसमें पगी थीं।

॥ महा रामायण का सिद्धि खण्ड समाप्त ॥